श्रीहरिनारायण सिंह, बी० ए०

श्रीहरिनारायण सिंह, बी० ए०

साहित्य-वाचस्पति, कवि-सम्राट्

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

की सम्मति

श्रीमान् बाबू हरिनारायणसिंह बी० ए० की 'सुधांशु' नामक पुस्तक मैंने देखी। पुस्तक सहृदयता से लिखी गई है, और उसमें अपने मानसिक भावों का प्रदर्शन सफलता से किया गया हैं। हिन्दुओं की सामाजिक अवस्था आजकल दयनीय है, वह अनेक अनर्गल रूढ़ियों से जकड़ी हुई है। किन्तु इस दोष को आँख खोलकर देखनेवाले कितने हैं? बाबू साहब उन लोगों में हैं, जो इस दशा को देखकर मर्माहत होते हैं, और यह चाहते हैं, कि हिन्दुओं की आँखें खुलें, वे अपनी दुरवस्था को समझकर सभलें, और उस पथ को ग्रहण करें। जिससे सुदिन सामने आवे। और फिर उन्नत अवस्था को वे प्राप्त होवें। उनके विचार से हिन्दुओं के लिये जो श्रेय है, अपनी पुस्तक में उन्होंने उसका निरूपण बड़ी उत्तमता से किया है। और इस बात का उद्योग किया है, कि उनके कान खड़े हों, और उनकी चिरकालिक निद्रा का भँग हो। ग्रन्थ की गद्य-पद्यमयी भाषा ओजस्विनी है। उसमें जागृत करने की पर्याप्त सामग्री है। ऐसा सुन्दर ग्रन्थ लिखने के लिये बाबूसाहब धन्यवादार्ह हैं। आशा है हिन्दी संसार में इस ग्रन्थ का आदर होगा।

हिन्दू यूनीवर्सिटी,
बनारस
७-१-१९४०

हरिऔध

लेखक का परिचय

शाहपुर पट्टी आज शाहाबाद ज़िले का एक आदर्श ग्राम है। वहाँ कई प्राइमरी पाठशालाएँ, एक कन्या-पाठशाला और एक अत्यन्त सुव्यवस्थित अस्पताल है। एक इंगलिश मिडिल तो यहाँ था ही, इधर गत वर्ष से वहाँ हाई स्कूल की भी नींव पड़ गई है। कृषि क्रमशः उन्नति करती जा रही है। गाँव का प्रबन्ध यूनियन बोर्ड के द्वारा होता है, जिसके मातहत आसपास के और भी कई छोटे-छोटे गाँव हैं। गाँव का सबसे अच्छा कुआँ हरिजनों का है। यह सब किसकी देन है?

श्री हरिनारायण सिंह जी के जीवन का एकमात्र लक्ष्य शिक्षा प्रचार, कृषि-उन्नति और ग्राम-सुधार रहा है और है। आज सारा शाहाबाद जिला आपके शिक्षा प्रचार एवं ग्रामोद्योग के प्रयत्नों के लिग कृतज्ञ है।

आपका जन्म इसी ग्राम में सन् १८७५ ई० में एक कायस्थ-कुल में हुआ था। दुर्भाग्य था कि बारह वर्ष की ही छोटी अवस्था में आपके माता-पिता आपको इस संसार में एकाकी छोड़कर चल बसे। आपके पिता एक अच्छे किसान थे। उनकी मृत्यु से आपके

बचपन के सब खेल-तमाशे बात की बात में छूः मन्तर हो गए। एक बड़ी गृहस्थी चलाने का भार बरबस आपके सिर पर आ पड़ा; परन्तु विद्या-प्राप्ति की लालसा ने आपको अपना घर छुड़ाया। पिता के सामने अपने घर पर ही फ़ारसी में कुछ तालीम हासिल की थी। स्कूली शिक्षा पाने के कारण आपको दूसरे ही वर्ष से आरा में जाकर रहना पड़ा। उस समय गाँव में कोई स्कूल न था। अब से लेकर बी. ए. पास करने तक आपको बराबर बाहर ही रहना पड़ा। छुट्टियों में घर आते और गृहस्थी की देख-रेख स्वयं करते। कृषि से आपको बराबर प्रेम बना रहा।

कुछ काल तक आपने डुमराँव राज में सर्किल आफ़िसरी और असिस्टेंट मैनेजरी की। वहाँ आप अपनी योग्यता और ईमानदारी के कारण रियासत की हथेली के फूल और प्रजा के गले के हार बने रहे। आज भी उन इलाक़ों की जनता आपको देवता की तरह पूजती है। आपका चरित्र रियासत में काम करनेवाले किसी भी अधिकारी के लिए आदर्श है। आप अधिक दिनों तक नहीं कर सके। देश-सेवा की अटूट लगन ने आपको आख़िर बाहर खींच ही लिया। अब आप घर पर ही रहने लगे और ग्राम-सुधार का काम विशेष रूप से आरम्भ किया। आप सन् १६०६ ई० से लेकर सन् १६३६ ई० तक शाहाबाद ज़िला बोर्ड तथा लोकल बोर्ड के सदस्य रहे। सन् १६३३ ई० सन् १६३६ तक आप ज़िला बोर्ड के वायस-चेयरमैन भी रहे। ज़िला-बोर्ड के शिक्षा-समिति के आप सन् १६१३ से १६३१ तक

सदस्य और १६२४ से १६३६ तक सभापति थे। आपके कार्य-काल से शिक्षा एवं चिकित्सा-विभाग की अधिक उन्नति और व्यवसायिक शिक्षा का यथेष्ट प्रचार हुआ। आशा की जाती है कि आपके प्रयत्नों का सुन्दर प्रभाव उक्त-विभागों पर चिर-काल तक बना रहेगा।

हिन्दी-साहित्य से आपको अत्यन्त प्रेम है। आप आरा-नागरी-प्रचारिणी सभा के आजीवन सदस्य हैं। उक्त संस्था ने कवि-सम्राट् पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" को जो अभिनन्दन ग्रंथ प्रदान किया था वह अधिकांश आपही के प्रयत्नों का फल था। आपने "काशी-पत्रिका" से लेकर आज तक जितने भी दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं वार्षिक हिन्दी पत्रिकाएँ हिन्दुस्तान या फिजी आदि अन्य देशों से निकली हैं, सबका संग्रह प्रस्तुत किया है। आपका यह 'रत्न' हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास प्रस्तुत करने में अत्यन्त उपयोगी एवं बहुमूल्य सिद्ध हो सकता है।

आप स्कूल के लड़कों के खेलने योग्य एकांकी नाटक प्रायः लिखा करते हैं। शिक्षात्मक नाटक ही लिखना आपका आदर्श है, जिससे खेलने और देखनेवाले अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। आपके नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पुरुषों के नाटक में न तो स्त्रियों का पार्ट है और न स्त्रियों के नाटक में पुरुषों का।

मित्रों के अनुरोध से दो वर्ष हुए आपने लगभग ५० नाटक

लड़कों के खेलने योग्य और १० नाटक लड़कियों के खेलने योग्य एकांकी के रूप में लिखे। उनमें से पाँच नाटक पहले भाग में प्रकाशित किए जा रहे हैं। आशा है कि परिमार्जित रुचि के लोग इसे प्रसन्नतापूर्वक अपनाकर अपनी गुण ग्राहकता का परिचय देंगे।

७०, विक्टोरिया पार्क,
बनारस। } मोहन प्यारे

सूची

—**—

'शुद्धि-पत्र'

पृष्ठ—पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१—१३	"—"	"!"
१—१५	कां	कों
२—१६	'जगह के'	जगह के कूएँ का जल खराब होता है। इसलिए चाहिए कि अपने रहने की जगह के—।
११—६	भो	भी
१५—७	किफ़ायत	किफ़ायत से
१५—६	का कर	कर
१७—६	?	।
१७—१३	की	को
१६—१३	सम्मिलित	सम्मिलित है
१६—१६	धार	सुधार
२४—८	फला	फैला
२४—१२	व्यवहारात्मक	परीक्षात्मक
२४—१३	form	farm
२४—२१	कराना होगा	करानी होगी
२६—१६	स्वागत	स्वगत
२७—१	सतक	सतर्क

पृष्ठ—पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७—अंतिम	] बैठे हैं	बैठे हैं]
२६—१६	पानी खींचने की कल	नलवाला कूआँ
३१—४	फ़ाल्स	फ़ास
३४—११	फ़सलों	फ़ैसलों
७०—११	फर्म	धर्म
७५—१०,१८	प्र०, प्रजा	पु०
८०—६	आदमी	आदमी का
१०१—८	विख्यात	विभ्रान्त
१०२—२०	जिकके	जिसके
११४—११	फ़क्त	फ़ख़
११५—४	श्रियन्ति	श्रयन्ति
११७—१०	लड़के	लड़के ने
११७—२०	कार	का
११६—१	लेना...है	लेलें
१२५—६	मशरफ़	मसरफ़

ग्राम-सुधार

[स्थान—सुधारक प्रसाद की कुटिया। गाँव के बहुत से आदमी बैठे हैं]

सुधारक प्रसाद—महतो ! आज तुम दिन भर न दीख पड़े।

सुगन महतो—क्या करें भैया, आज न मालूम किसका मुँह देखकर उठे थे कि सबेरे सबेरे घुरहु साहब से काम पड़ गया। पहले से कुछ खबर न थी, हमारे ही दरवाजे पर आ धमके। क्या कहें, हम तो बड़े फेर में पड़ गए।

सु० प्र०—भाई ! यह घुरहु साहब कौन हैं। और किस फेर में पड़ गए?

सु० म०—यह सरकारी अफसर और एक हाकिम ही है। जहाँ जहाँ घूर-गन्दगी देखते हैं—हटवाते फिरते हैं। हमारे मकान के सामने भी बहुत सा घूर पड़ा था—महल्ले भर के लोग भी यहीं फेंकते थे और हम भी छोड़ देते थे कि असाढ़ में खाद के काम आयेगा। कुछ फायदा ही होगा—पर आज लेने के देने पड़ गए। बहुत बिगड़े और तुरन्त साफ करने का हुक्म दिया—नहीं तो फौजदारी चलावेंगे। क्या करें, एक घंटे

की मुहलत ले, कुदाल से सबको बराबर फैलाकर ऊपर से कुछ साफ मिट्टी और पुआल आदि से उसको ढँक दिया। फिर दो रुपया नजराना दिया तब कहीं जान छूटी—खाना खातिरदारी अलग।

बूधन महतो—बड़ा जुल्म करता है भाई, हमारे कूएँ पर भी पहुँचा और न मालूम उसमें क्या डाला कि कूएँ का कुल पानी लाल हो गया। भला इस अन्धेर का कुछ ठिकाना है। दिन भर महल्ले भर के आदमी पानी के बिना तड़फड़ा कर रह गए और किस मुसीबत से कहाँ कहाँ से पानी भर कर काम चलाया। फिर यह भी उन्होंने कहा कि कूएँ पर मुँह न धोओ—थूको मत—स्नान न करो—कूएँ के पास गोबर न रखो, बैल न बाँधो, इत्यादि। भला कुआँ है किसलिए? जमीन हमारी—कुआँ हमारा, तुम कौन होते हो हुक्म चलानेवाले? पर, यह पूछे कौन? बरियारा ठहरा, हर बात में फौजदारी की ही धमकी देता है—क्या करते, पुलिस का सिपाही भी साथ था।

सु० म०—उलटे कहते थे कि तुम लोगों के फायदे के लिए यह सब किया जाता है।

बू० म०—खाक किया जाता है—सुनो भैया, यह सब हम गरीबों के सताने और रुपया कमाने का ढोंग है। और पुलिस वगैरह सब मिले रहते हैं—हिस्सा लेते हैं—सब एक ही हैं। थाने ही पर तो ठहरते हैं।

सु० प्र०—अफ़सोस है, तुम लोग इतने गँवार हो कि अपनी भलाई-बुराई को भी नहीं समझते। इसी से तो मैं तुम लोगों से पढ़ने को कहता हूँ। अपनी भलाई की बात को बुरी समझते और अपनी बुरी आदत छोड़ने के बदले उसको बनाए रखने के लिए ज़लील होते और रिश्वत भी देते हो!

सु० म०—सो कैसे?

सु० प्र०—यह तो जानते हो कि हवा और पानी मनुष्य-जीवन के लिए कितनी आवश्यक वस्तु है। इन्हीं के अच्छे और बुरे होने से मनुष्य का स्वास्थ्य बनता और बिगड़ता है। हवा-पानी बदलने के लिए ही लोग बड़ी बड़ी दूर चले जाते हैं। हवा और पानी संसर्ग से ही तो अच्छे या बुरे होते हैं—

ग्रह, भेषज, जल, पवन, पट, पाय कुजोग, सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग॥

साफ़-सुथरी जगह से आई हुई हवा अच्छी और गन्दी जगह से आई हुई हवा ख़राब होती है। साफ़ जगह के कूएँ का जल अच्छा और ख़राब जगह के आसपास चारों तरफ़ साफ़ सुथरा रखे, जिससे साँस लेने के लिए स्वच्छ वायु मिला करे और जहाँ आसपास की ज़मीन गन्दी रहती है, वहाँ रोग के कीटाणु हवा के साथ फेफड़े आदि में प्रवेश करते रहते हैं और धीरे धीरे स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है, जिसको तुम मालूम नहीं करते। तुम्हें तो उस रोज़ मालूम होता है जब खाट पर गिर

जाते हो। इसी तरह कूएँ के आसपास साफ़ रखने से अच्छा जल मिलता है और गन्दगी रहने से उसका कुछ अंश उड़ उड़ कर कूएँ में चला जाता है। फिर कूएँ पर स्नान करने और मुँह धोने से उस गन्दे पानी का कुछ अंश पुनः कुएँ में गिर कर उसके जल को बिगाड़ देता है। वर्षा का जो जल पृथ्वी पर गिरता है, या पेशाब इत्यादि किसी क़िस्म का जो जल गिरता है उसका कुछ अंश पृथ्वी में सूख जाता है। इस तरह कुएँ के आस पास जो जल सूखता है वह पुनः कुआँ में जा गिरता है। इससे यदि कुएँ के पास गोबर आदि रखो—मवेशी या आदमी पेशाब करे, वह सब कुएँ में जा गिरेगा—इसी से बस्ती के अन्दर के कुएँ का जल ख़राब और मैदान के कुएँ का जल अच्छा होता है। कूड़ा, कचरा, गोबर आदि मकान और कुएँ के पास न रखकर अलग किसी गढे में रखें, तो दो लाभ हैं। एक तो मकान साफ़ रहता है—दूसरें गढे में रखने से बहुत बढ़िया खाद भी बन जाती है। लछुमन भगत! तुम क्या चुपचाप बैठे हो?

लछुमन भगत—क्या कहें बाबू! आजकल हाकि़मों की बहुत बढ़ती हो गई है। एक न एक पहुँचा ही रहता है। नाक में दम है। फिर आजकल हाकिम बनना भी तो बहुत आसान हो गया है। जिसको कुर्ते के लिए पूरा तीन गज कपड़ा भी नहीं मिलता उसने दो ही गज में अधबहियाँ सिला ली, बस एक टुकड़ा कमर में

लपेट लिया और सारा पाँव नङ्गा। या किसी को कोई टुकड़ा-उकड़ा मिल गया तो घुटनों के नीचे भी लपेट लिया और झट एक टोपा सिर पर रख, सायकिल पर चढ़ दौड़े। बस हाकिम हो गए और लगे हम गरीबों पर रोब गाँठने।

सु० प्र०—क्या तुम्हारे यहाँ भी कोई हाकिम आए थे?

ल० भ०—हाँ साहब! आज खोदैया साहब पहुँच गया था।

सु० प्र०—यह खोदैया साहब कौन?

ल० भ०—बाबू, वही जो चेचक की टीका लगाता है। पहले तो खाली आता था—जिसकी इच्छा हुई सुभ साइत मिली हाथपर रुपया रहा, छपवा लिया। अब तो ये कहते हैं कि सबको छपवाना होगा और नहीं छपवाने से मोकदमा चलेगा। कहो भैया, यह जुल्म नहीं तो क्या है? जिसको लड़का है या हुआ है सबका नाम लिखते चलते हैं।

सु० प्र०—तो टीका ले क्यों नहीं लेते? इसमें हर्ज क्या है?

ल० भ०—लें कैसे लें, हर बख्त तो रुपया-पैसा हाथपर नहा रहता। यहाँ दस रुपये हाथ पर हों तब तो छपाई करावें!

सु० प्र०—इसमें रुपये की क्या जरूरत? टीका तो मुफ्त दिया जाता है नहीं तो घर बुलाने पर दो आने फ़ीस लगती है।

ल० भ०—बाबू! आप अभी स्कूल से निकले हैं—घर गृहस्ती का हाल नहीं जानते। जिसके लड़के-बाले होते हैं—

भगवान वह दिन दिखावे— उसी के यहाँ तो यह सब कुछ होता है। माली को सगुन देना ही होगा। किफायत भी करें तो कम-से-कम दो या एक रुपया से कम क्या देंगे। फिर दस दिनों तक रोज़ मैया को मिठाई और फलों की डाली लगेगी। दोनों शाम माली आराधना करेंगे। तेल छुऔवा होगा तो कम-से-कम एक कटोरा माली को तो जरूर चाहिए। फिर पुजाई होगी—रतजगा होगा—पूड़ी-पूआ बनेगा। माली को सब कपड़ा चाहिए—उसकी गोद भरनी और बिदाई देनी होगी। लड़कों को नया पीला कपड़ा चाहिए। सोने का नहीं तो चाँदी की तो शीतला जरूर बनवानी होगी। बड़े झंझट की बात है बाबू ! यह सब बिना रुपये के कैसे होगा ?

सु० प्र०—यह सब व्यर्थ की झंझट तो तुमलोगों ने खुद ही खड़ी की है, नहीं तो इनकी क्या जरूरत ? छपाई हुई और लड़के की दस रोज थोड़ी हिफ़ाजत कर दी—यही काफ़ी है। यदि पुराने रिवाजों को एकदम नहीं तोड़ सकते तो ज्यादे से ज्यादे भगवती की पूजा कर दो, मगर यह दस दिनों की आराधना गोद भराई और बिदाई की क्या जरूरत ?

ल० भ०—बाबू ! माफ करना, तुमलोग अँगरेजी पढ़कर धर्म को एकदम भूल जाते हो—हर बात में अपनी अकिल लगाते हो। अरे भैया, इस छपाई-निकसारी में किसी की कुछ नहीं चलती—यह तो भगवती महामाया की लीला है। जिसपर

प्रसन्न हो गई वह बस गया और जिसपर फिरीं लाखों यत्न करो कुछ न होगा। वह जिसको रखे वह रहे। फिर माली हो मैया के सेवकिहा ठहरे—इन्हीं के बाग में तो मैया का आसन रहता है। इनके बिना भला मैया को कौन मना सकता और प्रसन्न कर सकता है? (सिर झुका पृथ्वी पर नाक रगड़कर) हे जगतारनी मैया! छमा करना, हम तुम्हारी कुछ निन्दा नहीं करते—बाबू अभी लड़के हैं—तुम्हारी महिमा नहीं जानते। हे महामाया! हम गँवारों का अपराध छमा करना—हम कुछ नहीं जानते—त्राहि! त्राहि!!

सु० प्र०—क्यों ठाकुर साहब आप क्यों नहीं बच्चों को टीका दिलवा देते?

ठाकुर गजराज सिंह—साहब, मेरे यहाँ तो सहता नहीं।

सु० प्र०—यह क्या?

ठा० ग० सिं०—सुनते हैं खानदान में कभी किसी को टीका दिया गया था तो एक बैल मर गया—तब से हमारे यहाँ वंश में लोग टीका नहीं दिलाते।

सु० प्र०—टीका न दिलवाइए—पर चेचक तो जरूर होती होगी और उसका फल भी तो भयंकर होता ही होगा?

ठा० ग० सिं०—हाँ, निकलती तो जरूर है। जिसको अधिक दाने निकल आये उसकी बड़ी दुर्दशा भी होती है। बहुतों का चेहरा खराब हो जाता, आँखें खराब हो जाती हैं। भाई, इसमें

किसी के करने से कुछ नहीं होता। जिसपर मैया की कृपा हुई वह बचही जाता है और जिसपर उनका कोप हुआ उसे कौन बचा सकता है?

सु० प्र०—टीका लेने पर एक बैल मर गया तो वह नहीं सहा मगर बिना टीका दिलाए हर साल जो कितने बालक मर जाते हैं सो यथार्थ में तो वही नहीं सहता। इसलिए यह रिवाज छोड़ टीका लगवा लेना ही अच्छा है।

ठा० ग० सिं०—भाई जो बात वंश में कभी नहीं हुई वह कैसे करें और तुम समझते नहीं, यह सब भगवती की इच्छा से होता है। इस गाँव में मुटुर बहू के यहाँ भगवती का पुराना जखाड़ है। वही भगवती की सबसे बड़ी सेवकिया समझी जाती है। परसाल उसने साफ़ कह दिया था कि उसे भगवती का आदेश मिला है कि कोई टीका न ले, नहीं तो कुशल न होगा तो भला ऐसी हालत में किसकी हिम्मत पड़े।

सु० प्र०—(हँसकर) मुटुर बहू के कहने से कोई टीका न ले सका!

ठा० ग० सिं०—हँसो मत भैया, यह हँसने की बात नहीं—तुम उसकी शक्ति को नहीं जानते—साक्षात् देवी का रूप है। कैसी भी बिगड़ी हुई माता हो, अगर लड़के पर उसका हाथ फिर गया तो समझो कल्याण हो गया। अगर लोगों का कल्याण

न होता तो हर पूर्णिमासी को उसकी देवास पर इतनी चुनरी और बकरे क्यों चढ़ते ?

सु० प्र०—परसाल यहाँ कितने लड़के चेचक से मरे ?

ठा० ग० सिं०—यही कोई सौ के अन्दाज़। परसाल तो हर जगह इसका बहुत ज़ोर रहा, परन्तु आस-पास में केवल एक गोविन्दपुर ही बच गया।

सु० प्र०—सो कैसे ?

ठा० ग० सिं०—मैया की मर्ज़ी होगी—उनकी बात कौन जाने। लेकिन वहाँ वाले तो यह कहते थे कि उनलोगों ने पहले ही सब लड़कों को छपवा दिया था।

सु० प्र०—ठाकुर! प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलतीं, अफ़सोस है!

नेउर राउत—मुझे भी आज बैल-डाक्टर से भेंट हो गई थी।

सु० प्र०—बैल-डाक्टर!

ने० रा०—हाँ, वही जो मवेशियों की दवा करता है। गोविन्दपुर में हरयरवा बीमारी आई है। दो-तीन अच्छी अच्छी भैंसे चट चट उलट गईं। बड़ी ख़राब बीमारी है सरकार, जहाँ हुई कि पट ले बैठी। इस बीमारी से किसी जानवर को उठते नहीं देखा। तब इसी डाक्टर ने आकर सभी मवेशियों को टीका लगाया।

सु० प्र०—टीका लगाने के बाद फिर कोई जानवर मरा या नहीं ?

ने० रा०—नहीं।

सु० प्र०—फिर तुम लोग भी क्यों नहीं अपने अपने मवेशियों को टीका लगवा देते ?

ने रा०—वह भी तो यही कहता था परन्तु, क्या करें हम लोग ठहरे हिन्दू गो-पूजक। उसके चमड़े को सूई से छेदाने की हिम्मत नहीं होती।

सु० प्र०—यह बात है! तो गाय मर जाय वह अच्छा या चमड़ा छिदवा कर बच जाय यह अच्छा ?

ने० रा०—हाँ, बात तो ठीक कहते हैं पर, क्या करें—लोगों की राय हुई कि कुछ चन्दा इकट्ठा कर काशीनाथ बाबा की पूजा करके ढोल बजा—लूकाबार बीमारी को दूसरे गाँव में खदेड़ देंगे।

सु० प्र०—कहिए लाला जगजीवन लाल, आपके यहाँ जो पाठशाला है उसका क्या हाल है ?

लाला जगजीवन लाल—किसी सूरत से चली जाती है। कल स्कूल के डिपटी आए और कहते थे कि अबसे जिसके यहाँ जितनी लड़के लड़कियाँ होंगी सबको पढ़ना होगा, नहीं तो फ़ौजदारी चलेगी। देखते हैं आजकल हर बात में फ़ौजदारी ही की धमकी दी जाती है—पढ़ाने-लिखाने में भी वही होने लगा।

निठल्लू शास्त्री—फौजदारी की मत पूछो, भाई—उस रोज रुद्रपुर में सभा हुई थी। कोई आर्यसमाजी या काँग्रेसवाला

लेक्चर देने आया था। वह कहता था कि नौ-दस वर्ष की लड़कियों का विवाह मत करो नहीं तो फौजदारी चलेगी। तिलक-दहेज मत लो—विवाह में नाच-आतिशबाजी न करो—गहने न बनवाओ—ज्यादा लोग बारात न जायँ—यहाँ तक कि ब्राह्मणों को नेग भी न दो। अछूतों को मन्दिर में जाने दो—बड़े आदमियों के कूएँ से उन्हें भी पानी भरने दो—उन्हें भी बराबर का समझो—छुआछूत का भेद न रखो—विधवाओं का पुनः विवाह कर दो इत्यादि। कहो यह सब उपद्रव नहीं तो क्या है? भाई! घोर कलिकाल आ गया—अब धर्म-कर्म का किसी को ख्याल न रहा!

घूरा चौधरी—उस रोज हरपुर में एक खेती का अफसर आया था और लोगों से कहता था कि हर गाँव में थोड़ा थोड़ा खेत दो, हम उसमें अच्छे तरीके से अच्छा बीज और खाद देकर तुम लोगों को खेती करना सिखलाएँगे।

सुगन महतो—जैसे हम लोगों को खेती करनी आती ही नहीं।

घू० चौ०—और कहते थे कि पैदावार सब खेतवालों को दे देंगे।

बुधन महतो—पैदावार दे देंगे और खेत से बेदखल कर देंगे। सब हमीं लोगों को चकमा देने आते हैं!

शेख़ मन्सूर अली—रसूलपुर में एक टोली कई दिन से ठहरी

हुई है और लोगों को कपड़ा बुनना-रँगना, छाता बनाना, साबुन बनाना वग़ैरह सिखलाती है।

सु० प्र०—क्यों शेख़ जी, आपने कुछ सीखा नहीं?

शे० म० अली—तोबा कीजिए जनाब, आप भी क्या फ़रमाते हैं? क्या शेख़ से जुलाहा या रँगरेज़ बनूँ? लानत भेजूँ ऐसी कमाई पर। सच पूछिए तो अब इस ज़माने में ख़ानदानी और इज़्ज़तदारों की कुछ क़दर न रही। शरीफ़ों के दिन कटना मुश्किल है।

निठल्लू शास्त्री—इज्जत ही नहीं शेख साहब, धर्म को भी अब कोई नहीं पूछता—सब विधर्मी हो गए। सुना है जूता सीने, कपड़ा सीने और बाँस की टोकरी बनाने का भी स्कूल खुला है। बड़े आदमी कपड़ा सीना, जूता और टोकरी बनाना सीखकर दर्जी चमार और डोम का काम करते हैं, यही तो कलिकाल है। भगवान! तुम रक्षा करो—घोर कलियुग आ गया—वर्ण-व्यवस्था उठ गई—

गर्जनराय—एक और अन्धेर आपलोगों ने सुना है?

सु० प्र०—वह क्या है?

ग० रा०—रामपुर के अस्पताल में एक मेम साहबा आई हैं, जो हैं तो हिन्दुस्तानी ही मगर जरा टीम-टाम से रहती हैं—इसी से सब मेम साहब कहते हैं। वह रोज घर घर घूमती है यह जानने के लिए कि किसके घर में किस स्त्री को गर्भ है।

घू० चौ०—राम-राम अब किसी की इज्जत भी न बचने पाएगी! भला यह बात भी किसी से कहने या पूछने की है?

जगजीवनलाल—पुलिस की जासूस होगी।

घू० चौ०—एक चौकीदार भी तो साथ था—सबका घर बताता था। वह कहती थी कि जिस स्त्री को गर्भ होगा उसको मैं देखूँगी और उसकी हिफाजत करूँगी।

ज० जी०—वह अपनी हिफ़ाज़त क्यों नहीं करती?

घू० चौ०—और कहती थी कि लड़का होने पर मुझको बुलाना होगा। चमाइन सब गन्दी होती हैं, उनसे काम न लो—मैं साबुन से हाथ धो, तेज कैंची को गर्म पानी में उबाल, तागा बाँधकर नार काटूँगी और एक बुकनी लगा पट्टी बाँध दूँगी।

ठा० ग० सिं०—बाप-दादे के समय का हँसुआ जिससे सबका नार कटा, उसी से कटेगा। क़ैंची से भी कहीं नार कटता है। और पहले पहल पट्टी बाँधने की मनहूस बात क्या करती है।

घू० चौ०—अभी और सुनो भी तो—कहती थी कि हवा के लिए सौरी-घर की सभी खिड़कियों और दरवाजों को खोल दो। सौरी-घर में धुआँ न करो, उससे आँख की नुकसानी होती है और दम घुटता है।

ठा० ग० सिं०—बाप रे बाप! यह चुड़ैल तो सब सत्यानाश ही करना चाहती है! अगर खिड़की खोल दें, धुआँ न करें और आग न रखें तो उसीदम घर भूत-प्रेतों से भर जाय—बच्चा-

जच्चा का बचना मुश्किल हो जाय। जच्चा की तो देह मँहकती है। कितने पिशाच, चुड़ैल टोह में रहती हैं, कि ज़रा भी ग़ाफ़िल पावें तो धर दबावें। कितनी जगह असावधानी से ख़तरा हो जाता है। सच पूछो तो ये भूत-प्रेत आग और लोहा से डरते हैं। अगर ये बराबर न रखे जाँय तो न मालूम क्या कर दें।

सु० प्रसाद—क्यों जगजीवन लाल, तुम्हारे यहाँ कोआपरेटिव सोसाइटी भी थी ?

ज० जी० ला०—हाँ साहब, बंक भी था, मगर अब वह टूट गया। उसके अफ़सर भी तो आए थे, लेकिन अब उनकी कौन सुनता है।

नेउर राउत—बंक का नाम तो न लो सरकार, उसने तो सबको खराब कर दिया। बेईमान भी बने—घर-बार भी बिक गया।

सु० प्र०—सो कैसे ?

ज० जी० ला०—सदर बंक से कुछ ले देकर मनमाना रुपया आया। सब मेम्बर हैसियत से बेशी रुपया लेकर उड़ा गए। किसी से कोई तक़ाज़ा कैसे करे—सबों ने तो लिया था। अफ़सर आए और पूड़ी खाकर चले गए। जब सूद बहुत बढ़ गया और वसूल न हो सका, तब बंक ने डिगरी कराई। पर इनके पास जायदाद ही कहाँ थी ? आख़िर ज़लील हुए—घसीटे फिरे जेल गए और बंक का रुपया भी मारा गया।

सु० प्र०—इसमें तो बंक का दोष नहीं, इन्तज़ाम का दोष

है। पहले तो रुपया बाहर से न लाकर गाँव ही से जमा करना चाहिए। जिसके पास रुपया हो सूद पर बंक में जमा कर दे। ग़रीब आदमी भी थोड़ा थोड़ा जमा कर कुछ पूँजी इकट्ठी करें। मेम्बरों में सब क़र्ज़ा लेनेवाले ही न हों। मेम्बरों को उनकी हैसियत से कम खूब जाँचकर क़र्ज़ दिया जाय। फ़जूल खर्च के लिए मेम्बरों को उनके कहने के मुताबिक़ न दिया जाय। उनको किफ़ायत काम करने के लिए समझा कर कम रुपया दिया जाय, जो आसानी से वसूल हो जाय—वादा पर और पैदावार होने पर तक़ाज़ा का वसूल कर लिया जाय। फिर कोआपरेटिव सोसाइटी का काम केवल रुपया देना-लेना नहीं है वह तो उसका एक अङ्ग है। सोसाइटी के मेम्बरों को आपस का झगड़ा पंचायत से तय कर लेना चाहिए। शादी-श्राद्ध में फ़जूल रुपया न खर्च कर किफ़ायतशारी सीखनी चाहिए। अपनी खेती में तरक्क़ी कर उपज बढ़ानी चाहिए। अपने खेत की पैदावार को सुभीते से अच्छे दाम पर बेंचने का प्रयत्न करना चाहिए। गाँव की शिक्षा और स्वास्थ्य को सुधारना चाहिए।

आपलोगों ने अपना अपना दुखड़ा सुनाया। आपलोग दुःखी अवश्य हैं परन्तु, अपने दुःखों के कारण नहीं जानते और न उनको दूर करने का कुछ यत्न ही करते हैं—उल्टे अगर दूसरा आपको कुछ सहायता भी करना चाहता है तो उसका उल्टा अर्थ लगाते और उसका दुरुपयोग करते हैं। इसलिए आपलोग अगर

क़बूल करें तो हमारी राय यह होती है कि केवल गाँव के सब आदमियों की एक सभा की जाय जिसमें गाँव का सुधार कैसे हो—इसपर विचार किया जाय और उसका यत्न किया जाय।

सब०—बहुत ठीक बात है—कल ज़रूर सभा हो।

सु० प्र०—तो आपलोग इसका प्रबन्ध करें। कल बस्ती से पूरब घनी बाग़ में सभा हो। आपलोग सबको ख़बर दे दीजिए जिससे सबलोग आवें।

ठा० ग० सिं०—शामियाना भी तो करना होगा और बाजा भी तो चाहिए। कुछ झंडी-पताका-फाटक-मेहराब और फूल-मालाएँ भी तो चाहिएँ। लोगों के जलपान का भी कुछ बन्दोबस्त रहे। जब सभा हो रही है तो जैसे और गाँवों में हुई है, हमलोग भी वैसी ही धूम-धाम से करेंगे।

सु० प्र०—नहीं, ठाकुर साहब! इनमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मैं इन सब बातों के बहुत बरख़िलाफ़ हूँ। मैं आडम्बर नहीं चाहता, काम चाहता हूँ। जहाँ फाटक-मेहराब-झंडी और पताका होते हैं वहाँ सबका ध्यान उसी पर रहता है और काम कम होता है। मैं ग़रीब जनता का एक पैसा भी फ़जल ख़र्च करना नहीं चाहता। जैसे सबलोग खेत-खलिहान में बैठते हैं, वैसेही ज़मीन पर बैठकर सभा करेंगे।

ठा० ग० सिं०—बैठने का तो कुछ इन्तज़ाम करना ही होगा।

सु० प्र०—ख़ैर, आपलोग चाहें तो बैठने के लिए कुछ दरी टाट और चटाई मँगा भेजिएगा।

[स्थान—बस्ती के बाहर का बाग़—बहुत से लोग इकट्ठे हुए हैं।]

सुधारक प्रसाद—मैं प्रस्ताव करता हूँ कि आज की सभा के सभापति ठाकुर गजराज सिंह बनाए जाँय।

पं० बंशीधर शुक्ल—मैं इसका अनुमोदन करता हूँ ?

ठा० ग० सिं०—भाइयो ! आपलोग जानते हैं कि बाबू सुधारक प्रसाद अपना घर-द्वार छोड़ हमलोगों के बीच तपस्वी-जीवन बिता रहे हैं। इनके अमूल्य उपदेश हमलोग नित्य सुनते रहते हैं, पर सुनने ही से काम न चलेगा—इसलिए हमलोग आज इकट्ठे हुए हैं कि इनकी बातों को सुन ग्राम-सुधार की कोई ठोस योजना तैयार कर उसको कार्य रूप में लावें। अब सुधारक प्रसाद जो अपनी योजना आपलोगों को सुनावेंगे।

सु० प्र०—सज्जनो ! मैं एक बाहर का आदमी हूँ। आपलोगों की कृपा से यहाँ आप लोगों में कुछ रोज़ के लिए ठहर गया हूँ—यही तो मेरा यहाँ का सम्बन्ध है। परन्तु मेरा आप लोगों से सबसे भारी सम्बन्ध मनुष्यता का है, जो सब धर्मों के ऊपर है। यदि उस मनुष्यता के नाते आपलोगों का कुछ उपकार कर सकूँ तो अपने जीवन को धन्य समझूँगा।

सज्जनो ! यहाँ देहातों में भी कभी कभी कोई नेता या उपदेशक आ पहुँचते हैं। धूमधाम से सभाएँ होती हैं—आपकी

दुःख गाथाएँ—प्राचीन कीर्ति-कथाएँ और अन्य देशों की सुख-सम्पत्ति के हाल सुनाए जाते हैं जिसे सुनकर कुछ घंटों के लिए आप स्तम्भित और चकित हो जाते हैं। अपनी दुःख-कथा, प्राचीन या अन्य की सुख-कथा सुनने से आपको क्या लाभ होता है—मैं नहीं समझता। आपको अपनी उन्नति के लिए कुछ ठोस काम बतलाए नहीं जाते और न आप करते ही हैं। सभा के बाद भी आपकी वही हालत रह जाती है, जो पहले थी। हाँ, सभा में कुछ रुपये अवश्य खर्च हो जाते हैं। भाइयो! अपनी दुःख-कथा तो सबसे अधिक आपही को स्वयं जाननी चाहिए, उसे दूसरों को सुनाने की क्या ज़रूरत ? परन्तु अफ़सोस ! आप अपने दुःखों और बुराइयों को भी नहीं जानते यह अशिक्षा का परिणाम है। आप लोग मेरी बात मानिए और यदि अपनी भलाई चाहते हैं तो पहली बात यह है कि आप स्वयं अपने दुःखों और बुराइयों को सोचें और जानें। हर गाँव का अपना अपना अलग प्रश्न और समस्या है। फिर जब उसको जान गए तो दूसरा काम यह होना चाहिए कि उन दुःखों और बुराइयों को भी हटाने का यत्न करें। याद रखें, इसके लिए आपको अपना भरोसा करना होगा। दूसरों के भरोसे न रहिए। काँग्रेस या गवर्नमेंट आपका सुधार नहीं कर सकती। आपको अपना सुधार आप करना होगा। आप दूसरों के पैर से कदापि नहीं चल सकते—अपना भरोसा आप कीजिए। यह दूसरी बात है कि जब

आप अपने सुधार पर कमर कसें तो गवर्नमेंट आदि से आपको कुछ सहायता किसी रूप में मिल जाय। लेकिन तभी, जब आप स्वयं कमर कस कर खड़े होंगे।

मेरी समझ से हर गाँव में यदि मुख्यतः पाँच बातों का सुधार हो जाय तो उसी को हम पूर्ण स्वराज्य समझेंगे और ये आपके किए हो सकते हैं। पहला, शिक्षा का प्रचार—इसी में स्त्री-शिक्षा, अछूत शिक्षा, पुस्तकालय आदि भी जहाँ बड़ों की शिक्षा होती है, शामिल है। दूसरा स्वास्थ्य-सुधार जिसमें गाँव की सफ़ाई, पीने के साफ़ पानी का प्रबन्ध—रोग-निवारण के उपाय, रोग होने पर दवा का प्रबन्ध, उपयोगी खाद्य-पदार्थों का प्रचार और व्यायाम के प्रबन्धादि सम्मिलित हैं। तीसरा खेती और व्यवसाय की उन्नति—खेती की उन्नति में खेत, बीज, खाद, औजार, मवेशी, आबपाशी आदि की उन्नति सम्मिलित और व्यवसाय में वह घरेलू हस्त-कला जिसको गृहस्थ अपने घर पर थोड़ी पूँजी में खेती के साथ साथ कर सकें। चौथा, जिसे हम सबसे पहला और ज़रूरी धार कहेंगे—वह है आपस की एकता। जब तक आपस में एकता न होगी कोई काम नहीं हो सकता। आपस का बैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष मिटाना होगा। आपस के झगड़े आपस ही में पंचायत के द्वारा तय कर लिए जायँ, जिससे कचहरी जाने की ज़रूरत न पड़े—जिसमें आपकी कमाई की एक भारी रकम बाहर निकल जाती है। यह झगड़ा लेक्चर

देने से न मिटेगा। दोनों पक्षों से मिलकर उनकी शिकायतें सुन उन्हें दूर करने की चेष्टा करनी होगी—उनके असत्य विचारों को दूर करना होगा और उनकी अनुचित माँगों का अनौचित्य निष्पक्ष भाव से उनको समझाना होगा। ज़बर्दस्ती की सन्धि स्थायी नहीं होती। पाँचवाँ, सामाजिक-सुधार है, जिसमें तिलक-दहेज, कन्या-विक्रय, बाल-वृद्ध बेजोड़ ब्याह और अपव्यय आदि का रोकना है।

इन्हीं सुधारों को काम में लाने के लिए यदि आप लोगों की राय हो तो एक ग्राम-सुधार-समिति स्थापित की जाय।

सब०—जरूर—जरूर—हम सबों की राय है।

सु० प्र०—इसकी एक कार्य-कारिणी समिति स्थापित की जाय। जिसमें एक सभापति, एक उपसभापति, एक प्रधान मंत्री, पाँच विभागों के पाँच अलग अलग मंत्री, एक कोषाध्यक्ष, एक हिसाब करनेवाले (auditor) और तीन साधारण मेम्बर होंगे। अब आप लोग जिसको चाहें जिस पद के लिए चुनें।

घू० चौ०—यह सब बात अभी हम लोग कुछ नहीं जानते—आप जिसको जो करने को कहें हम लोग सब करने को तैयार हैं।

सु० प्र०—यह सब बात तो अब जाननी ही होगी चौधरी जी! इसके बिना तो अब गुज़ारा नहीं। यह समय चुनाव और वोट का है। हर बात में चुनाव होता और वोट लिया जाता है।

देखिए, किसी चुनाव के समय आप लोगों के यहाँ उम्मीदवारों का कैसा जमघट लग जाता है।

घू० चौ०—क्या कहें बाबू साहब ! उस वक़्त तो मोटर और बाइसकिल से गाँव खुद जाता—नाक में दम हो जाता है। किसको क्या कहें, जी करता है गाँव छोड़कर कहीं चले जायँ। लेकिन कै रोज भागें।

सु० प्र०—भागने से काम न चलेगा चौधरी जी ! अपने को मज़बूत बनाइए—किसी के कहने या बहकाने में मत आइए—किसी की सिफ़ारिश या मुरोवत में न आइए—किसी की धमकी से न डरिए—मोटर-पूड़ी या किसी प्रकार के प्रलोभन में मत पड़िए—जात-पाँत का ख़याल न कीजिए—ईमानदारी से जिसको आप निर्लोभी और त्यागी समझिए—जिसमें जनता की सेवा करने की निःस्वार्थ लगन हो—जो सच्चा देश-सेवक हो और जिसपर आपको विश्वास हो कि वह जिस जगह के लिए खड़ा हुआ है उसको योग्यता से निबाहेगा, उसी को वोट दीजिए, चाहे वह जो भी हो। ऐसा न करने से देश चौपट हो जायगा।

अस्तु, इस समय चुनाव में आप लोगों की मैं कुछ सहायता किए देता हूँ, परन्तु, भविष्य में आप दूसरों के हाथ की कठ-पुतली न बनिए। यह सब काम स्वयं अपने विचार से कीजिए। सब लोगों से पूछताछ कर मैंने कुछ नाम चुना है, जिनको आप के सामने उपस्थित करता हूँ। आप लोगों के समर्थन करने पर

वे लोग उस पद पर चुन लिये जाएँगे। ठाकुर गजराज सिंह—सभापति।

सब—मंजूर है।

सु० प्र०—बाबू धरणीधर—उप-सभापति।

सब—मंजूर है।

सु० प्र०—पं० वंशीधर शुक्ल—प्रधान मंत्री।

सब—मंजूर है।

सु० प्र०—शिक्षा मंत्री—लाला जगजीवन लाल।

स्वास्थ्य मंत्री—डाक्टर रामप्रसाद।

खेती और व्यवसाय मंत्री—बूधन महतो।

न्याय मंत्री—घूरा चौधरी।

सामाजिक सुधार मंत्री—गर्जन राय।

सब—मंजूर है।

सु० प्र०—कोषाध्यक्ष—लछुमन भगत।

हिसाब-कर्ता (auditor)—पं० धुरन्धर शर्मा।

सब—मंजूर है।

सु० प्र०—साधारण मेम्बर—शेख़ मन्सूर अली, नेउर राउत और रघुबर पाण्डेय।

सब—मंजूर है।

घू० चौ०—बाबू! आपने अपना नाम तो रखा ही नहीं, तब काम कैसे चलेगा?

सु० प्र०— मैंने तो आप लोगों से पहले ही निवेदन किया कि अपने पाँव से चलना सीखिए। आप लोगों का गाँव है और आपही इसका सुधार कर सकते हैं। मेरा कौन ठिकाना—आज यहाँ कल वहाँ। हाँ, इतना मैं आप लोगों को अवश्य वचन देता हूँ कि जब तक यह काम चल न निकले मैं यहाँ रह कर आप लोगों को पूरी सहायता दूँगा। मुझे मेम्बर बनने की जरूरत नहीं, मैं तो आप लोगों का एक तुच्छ सेवक हूँ।

ठा० ग० सिं०—सभा तो स्थापित हुई, अब किसको क्या करना होगा जरा यह भी बतला दीजिए।

सु० प्र०—नियमावली तो सभा अपनी तैयार कर लेगी। तब तक किसको क्या करना होगा मैं थोड़े में बतला देता हूँ। सभापति और प्रधान मंत्री का काम तो सबके कामों की देख भाल करना—नई योजना तैयार करनी—मंत्रियों को जो कठिनाइयाँ पड़ें उनको दूर हटाना इत्यादि है। परन्तु, इस योजना के सफल होने का कुल भार प्रधानतः हर विभाग के मंत्रियों पर है-उन्हीं के कार्य पर सब कुछ निर्भर करता है। उनमें काम करने की लगन होनी चाहिए—नम्रता और सहिष्णुता चाहिए—त्याग और निःस्वार्थता चाहिए—उन लोगों को इस काम के लिए कुछ समय अवश्य देना होगा और परिश्रम करना होगा। पहले हर मंत्री को अपने अपने विभाग के काम को जानने-समझने और करने के लिए विशेषज्ञों से शिक्षा लेनी होगी। हम लोगों को

अधिकतर ऐसा ही काम हाथ में लेना चाहिए, जिसमें रुपये की जरूरत न पड़े। योग्य आदमी होने से बिना रुपये के बहुत से सुधार के काम हो सकते हैं। शिक्षा-विभाग के मंत्री को पहले शिक्षा विभाग के अफ़सरों से मिलकर स्कूल आदि के नियम जानने चाहिएँ। फिर अगर गाँव में स्कूल न हो तो लोगों को उत्साहित कर स्कूल खुलवाना—उसे मन्जूर करवाना और डिस्ट्रिक्टबोर्ड से सहायता दिलानी होगी। अगर स्कूल है तो लोगों में उत्साह फला कर लड़कों का नम्बर बढ़ाना होगा। स्वास्थ्य-विभाग के अफ़सरों की सहायता से गाँव को साफ़ कराना—कूएँ को साफ़ कराना—हैजा-चेचक होनेपर उनको फ़ौरन ख़बर दे बुलाकर लोगों को टीका लगवा देना चाहिए। कृषि-व्यवसाय-मंत्री को गवर्नमेण्ट की व्यवहारात्मक—कृषिशाला (Government Experimental Agricultural form) में जाकर नई नई बातें सीखनी चाहिएँ और फिर कृषि-विभाग (Agricultural Department) के अफ़सरों द्वारा अच्छे अच्छे बीज, खाद और औज़ार लेकर उनका प्रचार कराना होगा। फिर शिल्प-विभाग (Department of Industries) के अधिकारियों की सहायता से गाँव में घरेलू हस्तकला का प्रचार और उनके माल का निकास कराना होगा। अच्छे उपयोगी ढंग से को-आपरेटिव सोसाइटी का संगठन कराना होगा। न्याय-मंत्री को लोगों को समझा-बुझाकर दोनों के मन का मैल निकाल कानून के अन्दर रह सुलह कराना

होगा और सामाजिक-सुधार मंत्री को शारदा ऐक्ट और जातीय संगठन के द्वारा विवाहादि की कुरीतियों को रोकना होगा।

पं० बंशीधर—सब कुछ तो हुआ लेकिन इसके लिए कुछ रुपया भी होना ज़रूरी है—उसका कुछ उपाय नहीं बतलाया गया।

सु० प्र०—ठीक है, रुपया की तो हर बात में ज़रूरत पड़ती है, लेकिन रुपया से भी ज़रूरी आदमी है। आदमी होगा तो रुपया पैदा कर लेगा। फिर बहुत से काम बिना रुपये के भी हो सकते हैं। मैंने पहले कहा है कि हमलोगों को अधिकतर वैसाही काम हाथ में लेना चाहिए जिसमें रुपये ख़र्च न हों। सभा के सभी कार्यकर्त्ता अवैतनिक होंगे और स्वयंसेवकों से भी काम लिया जायगा। पर तोभी कुछ रुपये का होना ज़रूरी है—यह ऐसा होना चाहिए कि जिसमें आसानी से मिल जाय और लोगों पर अधिक भार भी न हो। मेरी समझ से इसके तीन तरीक़े होने चाहिएँ। पहला यह कि फ़सल के समय गृहस्थों से कुछ अनाज वसूल कर लिया जाय। दूसरा यह कि लोगों के यहाँ—विवाह, पुत्र-जन्म, मुण्डन, कर्णबेध या यज्ञोपवीत आदि का उत्सव हो अथवा किसी वृद्ध का श्राद्ध हो तो ऐसे अवसरों पर लोग जहाँ बहुत ख़र्च किया करते हैं—सभा को भी कुछ दान दिया करें और तीसरा रास्ता है, मुठिया का प्रचार।

ठा० ग० सिं०—यह बहुत अच्छी राय है और सबको पसन्द है। भाइयो! सभा-विसर्जन के पहले हमलोगों को बाबू सुधारक प्रसाद का कृतज्ञ होना चाहिए। हम नहीं जानते कि उनको किन शब्दों में धन्यवाद दें—आपने तो हमलोगों को रख लिया नहीं तो बड़े लोगों को अवकाश कहाँ कि हम ग़रीबों की सुध लें। कभी आए भी तो स्वागत की धूम और चन्दों की तहसील रही। लेकचर दिया और मोटर पर चलते बने। कुछ समझा कुछ नहीं—हालत ज्यों की त्यों दैवाधीन रही। हम गँवारों को तो जबतक कोई हाथ पकड़कर न सिखावे सीखने के नहीं। पर ऐसा करे कौन? हमलोग तो दो-तीन बार याद पड़ते हैं। एक, जब चन्दा वसूल करना हुआ और दूसरा, जब वोट लेना हुआ। इसके बाद फिर किसी का पता नहीं। अब आज सभा-विसर्जित होती है। जब फिर सभा होगी तब उसमें सब मंत्री अपनी अपनी कार्रवाइयों की रिपोर्ट देंगे।

[स्थान—बाबा अदालत गिरि की मठिया]

अदालत गिरि—(स्वागत) यह सुधारक प्रसाद, बना हुआ आदमी है। नेता बनना चाहता है और रुपया कमाना। नहीं तो किसको क्या पड़ी है कि अपना काम-धन्धा छोड़ दूसरों के लिए मरता फिरे। पर मैं बच्चू को खूब पहचानता हूँ। मेरी आँखों से वह नहीं बच सकते। उस रोज स्थान में आया था तो किस नम्रता से बातें करता था! पर मैं तो सब समझता हूँ। आया

होगा कुछ भेद ही लेने। मैं तो उससे बहुत सतर्क रहता हूँ। न जाने क्यों उसे देखकर मेरी अन्तरात्मा काँप उठती है। उसके यहाँ रहने से मेरे बहुत से चक्रों में बाधा पड़ने लगी है। धीरे धीरे लोग उसके वशीभूत होते जाते हैं और अन्याय अत्याचार रोकने पर मुस्तैद होते जाते हैं। पहले इतनी हिम्मत न थी, यह सब उसकी फ़साद है। अब इसने ग्राम-सुधार-सभा खोली है। सब शरारत है—शरारत! भला इस ग्राम-पंचायत में मेरा मोक-दमा कै घंटे टिक सकेगा? इसने तो मेरा सब व्यवसाय ही चौपट कर दिया। मुझे डर होता है, यह ग्राम-सुधार करते करते कहीं मठिया-सुधार न करने लगे। वही लक्ष्य है पर पैंतरा बदल कर आता है। ये कांग्रेसी राजा-महाराजों को ले ही बैठे, अब मुफ़्तख़ोर और निरुपयोगी संस्थाओं में एक हमीलोग बचे हैं—सो ये हमलोगों को कब छोड़नेवाले हैं। अच्छा, तो गुप्त रूप से ऐसा कोई यत्न करना चाहिए, जिसमें यह सभा न चले और टूट जाय। फिर सुधारक को बदनाम करना चाहिए, नहीं अगर यह सभा चल गई तो इसे काल ही समझो। फिर आपस का संगठन होना चाहिए और होनी चाहिए मठाधीश-सभा आज-कल संगठन और आन्दोलन ही सब कुछ है। जहाँ धर्म की दुहाई दी, सम्भव है कांग्रेस से हमलोगों के साथ भी कुछ सम-झौता हो जाय।

[स्थान—सभा-गृह—ग्राम-सुधार-समिति की बैठक—सब लोग] बैठे हैं

ठा० ग० सिं०—हर विभाग के मंत्री उनके विभाग द्वारा इतने दिनों में जो काम हुए हैं उनका संक्षिप्त विवरण सबकी जानकारी के लिए कृपाकर सुनावें।

ला० जग० जी० ला०—(शिक्षा-मंत्री) यहाँ की वर्तमान प्राइमरी पाठशाला में, लोगों को समझाने-बुझाने से लड़कों की संख्या दूनी हो गई। अब बहुत लोग लड़कों को पाठशाला में पढ़ने को भेज रहे हैं। एक गुरु से अब काम न चलेगा—एक और शिक्षक रखने का प्रबन्ध हो रहा है। पाठशाला में अछूत लड़के भी भर्ती किए गए हैं। पाठशाला में लड़कों से ताड़ का पंखा, काग़ज़ की माला, गुलदस्ता, सूत, रस्सी और मिट्टी की चीजें, चटाई और टोकरी आदि बनवाई जाती है। इन्हें बेचकर कुछ पैसे भी निकालने का प्रबन्ध किया जाता है। एक कन्या पाठशाला भी खुली है, जिसमें कुछ लड़कियाँ पढ़ने लगी हैं। एक छोटा पुस्तकालय भी खुला है और आपस में दो दो चार चार आने चन्दा करके एक साप्ताहिक पत्र, एक खेती सम्बन्धी, एक स्वास्थ्य सम्बन्धी और एक साहित्यिक, ये तीन मासिक पत्रिकाएँ आती हैं। कुछ कम दामवाली उपयोगी छोटी छोटी पुस्तकें भी ख़रीदी गई हैं, जिनमें जीवन-चरित्र, इतिहास, भ्रमण, कृषि, बाग़बानी, गो-पालन, गो-चिकित्सा, स्वास्थ्य, व्यायाम, कला-कौशल, सौरी-सुधार, स्त्री-उपयोगी और कुछ धार्मिक पुस्तकें हैं। उपयोगी और सस्ती पुस्तकों का चुनाव करने में बड़ी साव-

धानी की जाती है। पुस्तकें कम परन्तु उपयोगी हैं। जो लोग पढ़े लिखे नहीं हैं, उनको दूसरा आदमी समाचार पत्र और कभी कोई पुस्तक पढ़कर सुनाता है। स्त्रियों को उनके घर पर पुस्तकें भेजने का प्रबन्ध है।

डा० रामप्रसाद—(स्वास्थ्य-मंत्री)—हमलोगों के यत्न से अब सब लोग अपना दरवाज़ा और आसपास की ज़मीन को साफ़ रखते—कूड़ा-करकट इधर-उधर और खुली जगह पर न फेंककर अब लोग गढे में रखते हैं, जो खाद के काम में आता है। अपना अपना घर-द्वार साफ़ रखने से बस्ती भी साफ़ रहती है। मोरियों का पानी रास्ते पर न बहकर गढ़े में नालियों से बहाया जाता है। हफ़्ते में एक रोज़ दो पहर तक गाँव के सब आदमी कुदाल ले गाँव के रास्ते और सड़कों को बनाते और जो जगह किसी ख़ास आदमी की नहीं, उसकी सफ़ाई करते जो ख़ुद काम नहीं कर सकते वे अपना एक मजदूर देते हैं कूएँ के आस-पास बहुत सफ़ाई रहती—जगत पक्की बना दी गई और कूएँ के चारों तरफ़ ढालुआँ पक्का फ़र्श बना दिया गया और किनारे-किनारे पानी निकलने की पक्की नली बना दी गई है। कूएँ बराबर पोटाश या सफेद पाउडर से साफ़ किए जाते हैं। पानी पीने के लिए एक पानी खींचने की कल (Tube well) भी बनवाया गया है। सभी बच्चे अब चेचक की टीका ले लेते हैं। युवकों को भी दुबारा टीका दिलवा दिया जाता है। आस-पास में

हैजे का प्रकोप सुनने पर यहाँ के लोग टीका ले लेते हैं या दवा (Cholera phage) का व्यवहार करते हैं। कूएँ बराबर शुद्ध कराए जाते, जिससे यहाँ कभी हैजा नहीं— फैली। सौरी में अब असावधानी के कारण बच्चे नहीं मरते— किसी को यम नहीं छूता और न मिर्गी ही होती है। अगर अस्पताल की दाई मिल गई तो उसको बुलाया जाता है या स्थानीय चमाइन को स्वच्छ कपड़ा पहन और साबुन से हाथ धोकर काम करने की ताकीद है। नार को पहले दो जगह अच्छे तागे से बाँध कर तब बीच में एक तेज़ कैंची से, जिसे पहले खूब गर्म पानी से निर्दोष (Sterlize) कर लेते हैं-काट दिया जाता है और ज़ख्म पर बोरिक-बुकनी (Boric Powder) देकर-फिर उस पर साफ़ रूई रख किसी साफ़ कपड़े से बाँध दिया जाता है। घर की खिड़की आदि खोलकर उसे हवादार बना दिया जाता है। सौर घर में अब धूआँ एकदम नहीं किया जाता, जिससे बहुत लाभ हुआ है। हाँ, जाड़े के दिनों में ज़रूरत होने से लकड़ी के कोयले की आग रखी जाती है। गाँव में मुहल्ले मुहल्ले अखाड़े खुले हैं, जिसमें सब लोग नित्य कुछ समय के लिए व्यायाम करते हैं। साँप काटने की दवा 'त्रेयाक' भी मँगा कर रखा गया है, जिससे बहुतों की जान बची। कुत्ता काटने पर लोगों को कुत्ता-अस्पताल-पटना भिजवाया जाता है।

बूधन महतो-(कृषि और व्यवसाय-मंत्री)-खेती के महकमें

से अच्छे बीज लेकर, जैसे, पूसा का गेहूँ, कोयम्बटूर की ईख, जौनपुर का मकया और दहिया धान आदि सब लोग बोने लगे हैं, जिससे अच्छा लाभ होता है। लोग नाना प्रकार के खाद भी जैसे एमोनियम-सलफेट, निसी फ़ाल्स, हरीखाद, गढ़े का सड़ा गोबर, गोबर-पत्ता आदि का बनाया 'कम्पोस्ट' (Compost) फ़ायदे के साथ व्यवहार करने लगे हैं। क़तार और क्यारी में ईख बोने से और आषाढ़ में जड़ पर मिट्टी चढ़ाने से पैदावार अच्छी हुई है। लोहे के सस्ते हल भी आए हैं, जिससे जोतने से उपज बढ़ती है, 'सुखदा' हल से ईख की कोड़ाई किफ़ायत में हो जाती है। कूएँ में बम्बा धसाने से सिंचाई के योग्य पानी हो गया है। रहट भी लगे हैं। जो खेत पहले वैशाख-जेठ में परती रह जाते या जिनमें साधारण फ़सल होती, उनमें अब ईख, शाक और तरकारी लहरा रही है। तरकारी और फलों की खेती होने लगी है। एक आदमी तम्बाकू का पत्ता तोड़ना और बाँधना सीखने के लिए सरकारी फ़ार्म में भेजा गया है। अच्छा बीज, खाद, औज़ार मँगाने-बनाने और नई नई रीतियाँ सिखाने में ज़िले के खेती का इन्सपेक्टर और कामदार आकर बराबर हर तरह की सहायता करते हैं। खेतों को आपस में बदल कर सब लोग अपने खेतों एकत्रित कर रहे हैं, जिससे सिंचाई और रखवाली का इन्तज़ाम आसानी से हो। ईख आदि जेठुआ फसल की खेती यथा-

सम्भव दूसरे का खेत लेकर भी एक हलक़े में करते हैं, जिससे रखवाली में बहुत सुभीता होता है। व्यवसाय में कुछ लोग रेंड़ की पत्ती खानेवाले रेशमी-कोड़े पालने लगे हैं। कुछ बेकार लोग कपड़ा, दरी क़ालीन बुनना, कपड़ा रँगना, टोकरी और छाता बनाना कपड़ा सीना आदि सीख कर स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका चलाते हैं। शिल्प-विभाग (Industry department) ज़रूरत होने से इन्हें पूँजी देकर और इनकी बनाई हुई चीज़ों को बिकवाने में सहायता करती है। को-आपरेटिव सोसाइटी फिर से चालू की गई है। सब लोग कुछ न कुछ रुपया उसमें जमा करते हैं। अच्छा बीज और खाद 'मेम्बरों को सस्ते दाम पर दी जाती है, बैल खरीदवा दिया जाता, शादी व्याह के लिए बहुत कम रुपया दिया जाता और ताकीद रहती है कि उतने ही में काम चलावें। फ़सल होने पर थोड़ा थोड़ा करके रुपया वसूल कर लिया जाता है। व्यवसाइयों को व्यवसाय चलाने के लिए क़र्ज़ा दिया जाता और क़िस्त कर लिया जाता है। मेम्बर लोग अपनी पैदावार सोसाइटी में रख, रुपया लेकर अपना ज़रूरी काम चलाते और सोसाइटी मौक़ा आने पर अच्छे भाव में उनका जिन्स बेंचकर अपना रुपया काट बाक़ी उनको दे देती है।

मवेशियों में रोग फैलने पर मवेशी अस्पताल में उनकी दवा कराई जाती या मवेशी-डाक्टर को बुला कर टीका लगवा दिया

जाता है। एक अच्छे नस्ल का साँड़ भी रखा गया है जिससे अच्छे अच्छे बछड़े और अधिक दूध देनेवाली गायें तैयार होती हैं।

घूरा चौधरी-न्यायमंत्री:—हम लोगों के प्रयत्न से आपस के मामले तय हो गए पहले तो लोग भड़कते थे, परंतु जब हम लोगों का सद्भाव जान गए तो कई बार मिलने के बाद दिल खोलकर बोले जिससे यह मालूम हुआ कि कुछ मामलों में नहीं मिलने से और बीच के आदमियों की बदनीयती से दोनों फ़रीक़ों में बहुत से भ्रम हो गए थे। लड़ना कोई नहीं चाहता। बहुतों में दोनों सुलह चाहते थे परन्तु कोई ज़रिया खोजते थे। स्वयं आगे बढ़ने में अपनी मान-हानि समझते थे। कुछ मामलों में दोनों पक्ष वाले अपने अपने पक्ष को प्रबल और सत्य समझते थे और एक दूसरे की ज़्यादती समझते थे। वाजिब की दुहाई सब देते थे और वाजिब तौर पर सुलह करने को राज़ी मालूम पड़ते थे। हमलोगों ने उनका विश्वास-पात्र बन बहुत से झूठे भ्रम को दूर किया और उनके मनमुटाव को निकाल दिया। उचित दलीलों से उनकी अनुचित माँगों को अनुचित साबित कर दिया। निष्पक्ष आदमियों के बीच में पड़ने से उनके मान की भी रक्षा हो गई। इस प्रकार बहुत से मुक़द्दमों में सुलह हो गया—कुछ अदालत जाने से रुक गया। लोगों में सद्भाव बढ़ता जाता है। हाँ, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हज़ार

कहने पर भी सुलह पर राज़ी न हुए क्योंकि उनकी नीयत ठीक न थी। वे बेईमानी और फ़रेब से लाभ उठाना चाहते थे। लेकिन ऐसे बहुत कम हैं। हमलोग पहले दोनों पक्षवालों से मिलकर, फिर दोनों को मिलाकर स्वयं उन्हीं के मुँह से मामला तय करा देते, इसका प्रभाव भी अच्छा होता। जहाँ ऐसा न हो सका, वहाँ उन्हीं के द्वारा निर्धारित पंचों से जिसपर दोनों का विश्वास हो, दोनों से पंचनामा लिखाकर पंचायत से फ़ैसला हो जाता। हम-लोगों ने स्थायी पंच नहीं रखा है क्योंकि इसमें हमलोगों को आपत्ति मालूम हुई। हर मुक़दमें का उसके फ़रीक़ों द्वारा चुने पंच ही श्रेष्ठ हैं और कोई शिकायत की जगह नहीं रह जाती। अदालती फ़सलों की अपेक्षा पंचायती फ़ैसलों में बहुत लाभ है ! पहला अदालत में खर्च बहुत लगता—इसमें कुछ भी नहीं। दूसरा अदालत में बहुत समय लगता और काम छोड़ बाहर जाना पड़ता है—इसमें घर ही पर बहुत जल्द मामला तय हो जाता है। तीसरा हाकिमों को सच्ची बात जानने के लिए दोनों दलों के गवाहों के कथन पर निर्भर रहना पड़ता है जो प्रायः एकतरफ़ा और पक्षपाती होते हैं और इसमें ग़लती होने की पूरी सम्भावना रहती है—यहाँ पंच स्थानीय होने से वे बहुत कुछ स्वयं जानते हैं। चौथा, अदालती फ़ैसलों से हारनेवाला अपनी मान-हानि समझता और फ़ैसला उलटने की चेष्टा करता है। फिर फ़ैसला हो जाने पर भी वैमनस्य दूर नहीं होता बल्कि बढ़ता ही

जाता है और पंचायती फैसले से किसी की मान-हानि नहीं होती दोनों सन्तुष्ट रहते—मामला आगे न बढ़कर समाप्त हो जाता और पारस्परिक सद्भाव की वृद्धि हो जाती है।

गर्जनराय सुधार-मंत्री-सामाजिक बुराइयाँ अधिकतर विवाह में ही हैं। हमलोग इसी के सुधारने में लगे हैं। हमलोगों को मुस्तैद जान, शारदा ऐक्ट के भय से बाल-विवाह बन्द हो गए और इसके बन्द होने से कन्या-विक्रय और वृद्ध-विवाह में भी कमी हुई है। तिलक का रिवाज भी कम होता जाता है क्योंकि इससे किसी को कुछ लाभ तो था नहीं, जितना लेते उससे कहीं अधिक खर्च करना पड़ता था। बारात में नाच और आतिशबाजी जाना रुक गया। चढ़ावे पर गहने कम जाते—बारात में भी बहुत कम आदमी जाते हैं। खर्च में कमी होने से लोग स्वयं तिलक न लेते। नाच, आतशबाज़ी, गहना और ज्यादा बारात तो लोग शौक़ से नहीं ले जाते थे बल्कि ले जाते थे समाज में अप्रतिष्ठा के भय से। जब सब लोग ऐसा करने लगे तो समाज में बेइज्ज़ती का डर न रहा। फिर किसको पड़ी है कि व्यर्थ रुपया खर्च करे। जो लोग हमलोगों की बात न मान तिलक लेते, कन्या-विक्रय या वृद्ध-विवाह करते उनके यहाँ हमलोग सत्याग्रह करते और उनका जातीय बहिष्कार करते हैं।

(धीरे धीरे परदा गिरता है)

आशा

[स्थान—ठाकुर उम्मेदसिंह की बैठक। उम्मेदसिंह और लाला मातादीन बैठे हैं।]

मातादीन—कहिए ठाकुर साहब, लड़कों की पढ़ाई का क्या हाल है?

उम्मेदसिंह—बड़ा लड़का पटना हाई स्कूल में पढ़ता है और छोटा बसन्तपुर के मिडिल स्कूल में।

माता०—क्या बात है!

उम्मे०—क्या कहूँ लाला! हम तो इस पढ़ाई में बर्बाद हो गए। बड़ी ख़र्चीली है।

माता०—ख़र्चीली न होती तो सब न पढ़ लेते। सबकी हिम्मत थोड़े ही है कि यह भार उठा सके। अच्छा, ठाकुर ख़र्च करते हो तो मौक़े का—राह पर! जिस दिन लड़का मैट्रिक होकर निकलेगा, सब सफल हो जायगा।

उम्मे०—भाई! यही सोचकर तो हिम्मत किए हुए हैं।—इन्ट्रेन्स—होने पर क़िस्मत भी जर जाय, तो हाकिम नहीं तो दारोग़ा हो ही जायगा।

माता०—इसमें क्या शक ! है कोई यहां इन्ट्रेंस—पास ?

उम्मे०—तुम लोगों का आशीर्वाद चाहिए ! सच पूछो तो लाला पढ़ाई का ख़र्च हम किसानों के बूते के बाहर की बात है। खेती गृहस्थी में अब रह ही क्या गया है ? पैदावार की कमी और भाव के गिर जाने से अब बचता ही क्या है ? मालिक की मालगुज़ारी भी नहीं निकलती। सच कहता हूँ, तुमसे पर्दा क्या—इन लड़कों की पढ़ाई में देनदार हो गया। फिर समय भी तो बहुत लगता है—अगर हर साल लड़का पास होता जाय तो वह बारह वर्षों में इन्ट्रेन्स पास करेगा।

माता०—तपस्या है ठाकुर, तपस्या। तपस्या करने और दुःख उठाने पर ही तो सुख मिलता है।

उम्मे०—भाई, हवा ही खाकर तपस्या करनी होती, तो एक बात थी, यहाँ घना टका ख़र्च करना पड़ता है। रोज़ चिट्ठी आई ही रहती है—यह चाहिए, वह चाहिए। लड़का ठहरा परदेश में, न भेजूँ तो काम कैसे चले। साहु-हाकिम को टाल—दूसरा हज़ार काम छोड़—अपने पर तकलीफ़ उठा—प्रति मास महाजन से ३०) रु० लेकर बड़े को भेजा ही करता हूँ।

माता०—तीस रुपये !

उम्मे०—और क्या ! ख़र्चे का हाल और पढ़नेवाले की बात न पूछो। पहले तो अगर किसी अच्छे हाई-स्कूल में नाम लिखवाना हो, एक महीना पहले से उम्मीदवारी और ख़ुशामद करो।

कहीं एक सप्ताह देर से गए तो सीट ही नहीं मिलेगी। इधर नाम लिखवाने में ही पन्द्रह-बीस रुपये, नाम लिखाई, पेशगी फ़ीस, होस्टल चार्ज, बिजली फ़ीस, खेलने की फ़ीस, दीन-छात्र-कोष (Poor boys fund), यह-वह न मालूम क्या-क्या! छोटे २ बच्चों के लिए बीसों पुस्तकें—उनका दाम बीस-पच्चीस रुपये अलग—बीस-तीस कापियाँ और ऐसेही वैसेही! इनके अतिरिक्त ये तीस रुपये तो हर महीने मासिक ख़र्च के लिए निश्चित है। कपड़े इत्यादि इसके अतिरिक्त! मगर इतने ही से छुटकारा—नहीं—प्रति मास कुछ नई रक़म ज़रूर लगती है—यह चन्दा, वह चन्दा, सैर-सपाटा आदि। फिर कोई नई किताब ही हुई और हम क्या क्या कहें—कपड़े में भी भारी रक़म लगती है। यदि घर पर पढ़ाने के लिए एक मास्टर (Private Tutor) रखें तो एक मोटी रक़म अलग लगे।

माता०—लगा ही चाहे! दस भले आदमियों के साथ रहना है और जिसे एक दिन हाकिम बनना है वह अच्छा कपड़ा तो पहना ही चाहे।

उम्मे०—जब बड़ा यहाँ पढ़ता था और छोटा भी जो अभी यहाँ पढ़ ही रहा है—

तब कहने को तो घर रहते थे, किन्तु तो भी खाने-पीने के अतिरिक्त इनकी फ़ीस—किताब, कापी और स्लेट आदिमें पाँच-सात रुपये ख़र्च हो ही जाता था। पाठ्य-पुस्तकें प्रति वर्ष बदलती हैं। बड़े

भाईकी पढ़ी हुई पुस्तक दूसरे वर्ष छोटे भाईके कामकी नहीं रहती।

माता०—यह तो बड़ा अन्धेर है। पहले जब मौलवी साहब के मकतब में लोग फ़ारसी पढ़ते थे तो एकही किताब को कई आदमी पढ़ते थे। बाप की पढ़ी किताब बेटा पढ़ता था। पहले पाठशालाओं में भी किताबें प्रतिवर्ष नहीं बदलती थीं। छोटे-छोटे बच्चे चार पैसे की पहली पोथी पढ़ते थे—अब तो पाँच आने की चाहिए। बड़े लड़के ने तीन आने की पोथी से काम चलाया तो छोटे की बेर वह नौ आने की हो गई। भाई! किताबों का दाम तो बढ़ता ही जाता है लेकिन योग्यता घटती जाती है। पहले गुरुजी के यहाँ लड़के ज़मीन पर खल्लो से लिखते थे या काठ की पट्टी पर जो कई पुश्त चलती थी। उस समय रोज़ फूटने वाले स्लेट और कापियों की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

उम्मे०—इसके अलावे स्कूल की हवा ही दूसरी होती है। शहर की बात ही क्या, यहाँ भी स्कूल जाने पर लड़के बदल जाते हैं। उन्हें अच्छा कपड़ा और अच्छा खाना चाहिए। हम लोग तो एक कुर्त्ता और गमछा पर काट लेते हैं, पर उन्हें गंजी चहिए, कमीज़ चाहिए, कोट, हाफ़ पैन्ट, मोज़ा और बूट चाहिए-मफ़लर, नेकटाई, नेकर चाहिए।

माता०—मगर भाई, टोपी का रिवाज तो उठता जाता है। लड़के टोपी नहीं पहनते, इसकी कमी है।

उम्मे०—कमी क्या ख़ाक है! चार आने की टोपी न सही जूता तो सात रुपये का चाहिए। फिर स्कूल में भले ही टोपी न पहनें, परन्तु घर पर तो लंगूरी टोपी (Monkey Cap) जरूरी है या मौज में आया तो दो रुपये की हैट ही ख़रीद ली। खाने में हम लोग तो रोटी और नमक से काम चला लेते हैं पर उन्हें तो दाल, घी, तरकारी, दही और दूध चाहिए।

माता—भाई, कोई एक दिन में बड़ा आदमी थोड़े होता है। उन्हें बड़ा आदमी होना है, एक रोज हाकिम बनना है—अभी से खाना-पहनना ठीक न करेंगे तो काम कैसे चलेगा—यही तो बड़ा आदमी बनना है।

उम्मे०—लाला! यह तो है ही, पर बात अब बूते के बाहर हुई जाती है।

माता०—लेकिन ठाकुर साहब! काम भी तो एक ही कर रहे हो! घबराने की बात नहीं—थोड़ी और हिम्मत कर दो, बस बेड़ा पार है। कहीं लड़का निकल गया तो सारा दुःख और तरद्दुद गया ही समझो।

[स्थान—ठाकुर उम्मेदसिंह की बैठक। उनका बड़ा पुत्र कोट-पैण्टधारी श्री बेकारचन्द का प्रवेश।]

बेकारचन्द—बाबू जी! मुझे कल पटना जाना है। इस महीने में सौ रुपये चाहिए। अभी तक आपने रुपये का बन्दोबस्त नहीं किया?

उम्मे०—(घबड़ाहट का नाट्य करके) एं-ऐं-क्या कहा, सौ रुपये?

बेकार०—जी हाँ, सौ रुपये। आप इतना घबराते क्यों हैं?

उम्मे०—एकदम सौ रुपये! यह तो बहुत बड़ी रक़म है। और घबराते हैं इसलिए कि तुमने तो केवल कह दिया—यहाँ मुझे सौ जगह घूम कर और हज़ारों तरद्दुद से बन्दोबस्त करना होगा, क्योंकि हाथ में एक टका भी नहीं।

बेकार०—Matriculation (इन्ट्रेंस) की परीक्षा है या ठट्ठा। मैं जितनी ही किफ़ायत करता हूँ आपको उतना ही अधिक मालूम पड़ता है—और लड़कों के घर से डेढ़ दो सौ रुपये आते हैं।

उम्मे०—आया होगा, वे बड़े आदमी होंगे—किन्तु मेरे पास तो इतने रुपये नहीं।

बेकार०—फिर Matriculation (इन्ट्रेंस) में पढ़ाते क्यों हैं? आख़िर मैं भी तो उसी स्कूल और क्लास में पढ़ता हूँ, जिसमें वे पढ़ते हैं। मैं भी वही परीक्षा दूँगा जो वे देंगे और मुझे भी उन लोगों के समान ही Certificate (प्रमाण-पत्र) मिलेगा।

उम्मे०—आख़िर ये सौ रुपये कहाँ ख़र्च होंगे?

बेकार०—कहाँ ख़र्च होंगे आप जानते नहीं, इन्ट्रेन्स (Matriculation) में सम्मिलित हुए हैं—University fee (विश्वविद्यालय की फ़ीस) देनी होगी और दो महीने की स्कूल-फ़ीस पेशगी। कुछ किताबें भी लेनी हैं—नया सूट भी बनवाना

है। लार्ड साहब का आगमन है इसलिए स्काउट-ड्रेस बनवानी ही होगी। दुर्गापूजा में राजगृह गया था, उसका खर्च अभी तक नहीं दिया गया। खेल के और और सामान तो स्कूल से मिलते हैं, लेकिन हाकी की स्टिक (Hocky Stick) और टेनिस का राकेट (Tenis Racket) तो अपने ही लेने पड़ते हैं। ये सभी चीज़ें लेनी हैं—आपको कितना गिनाऊँ। यही तो आखिरी खर्च है—मुझे तो सौ रुपये में भी सन्देह है।

उम्मे०—अच्छा भाई, जैसे सब किया, यह भी करेंगे। शाम तक कोई बन्दोबस्त करेंगे—अगर दस-बीस कम होगा तो पीछे से भेज देंगे।

[स्थान ठाकुर उम्मेदसिंह की चौपाल। ठाकुर उम्मेदसिंह, लाला मातादीन और गाँव के कुछ आदमी बैठे हैं।]

माता०—ठाकुर साहब, मुबारक, मुबारक! आज कैसा शुभ दिन है कि लड़का इन्ट्रेन्स पास हो गया। निस्सन्देह आप बड़े भाग्यवान हैं!

सब लोग—इसमें क्या शक—इसमें क्या शक!

उम्मे०—सब आप लोगों का आशीर्वाद है।

माता०—इस गाँव में यह पहला लड़का है जिसने इन्ट्रेन्स पास किया।

सब लोग—बेशक—बेशक!

उम्मे०—सब आप लोगों का आशीर्वाद है।

माता—मैं तो भाई लड़कपन ही से इसकी रहन-सहन और पहनाव-ओढ़ाव देखकर कहता था कि यह भविष्य में अवश्य ही कोई भारी आदमी होगा।

सब—इसमें क्या शक—इसमें क्या शक।

उम्मे—आप पंचों का आशीर्वाद।

माता०—कोई भारी ओहदा मिल जायगा तो गाँव भर का दुःख मिट जायगा।

सब०—इसमें क्या शक—इसमें क्या शक।

उम्मे०—आप भाइयों का आशीर्वाद चाहिए।

माता०—आशीर्वाद ही आशीर्वाद लोगे या दावत-जलसा वग़ैरह भी करोगे।

सब—इसमें क्या शक—इसमें क्या शक।

उम्मे०—इसमें भी कुछ कहना है—बड़े भाग्य से भगवान ने यह दिन दिखाया है। सत्यदेव जी की कथा होगी। ब्राह्मण-भोजन, दावत, जलसा सब कुछ होगा और तुमसे क्या कहूँ देव-ताओं की मन्नतें तो इतनी हैं कि सब पूरी करते वर्षों लगेंगे।

माता०—इसी पुण्य के प्रताप से तो यह सब कुछ हुआ है। सबको तो लड़का है, किया है पास किसी ने इन्ट्रेन्स?

सब—इसमें क्या शक—इसमें क्या शक।

[कोट-पैण्ट पहने बेकारचन्द का प्रवेश]

बेकार०—(स्वगत) Matriculation पास कर गए Matriculation जी हाँ, इन्ट्रेन्स। है कोई इस बस्ती में दूसरा जिसने इन्ट्रेन्स पास किया है ! वही इन्ट्रेन्स जिसके लिए हज़ारों तरसते हैं—हज़ारों पाँच-पाँच सात-सात वर्ष से इन्ट्रेन्स (X class) में धुई रमाये बैठे हैं, वही इन्ट्रेन्स पहली ही बार (Matriculation 1st chance) में पास कर गए। तीसरी श्रेणी (3rd Division) ही में सही, इससे क्या ? इन्ट्रेन्स पास तो कहलायेंगे। विश्व-विद्यालय का प्रमाण-पत्र (University Certificate) तो मिलेगा ! फिर सच पूछो तो प्रथम श्रेणी और द्वितीय श्रेणी (1st. & 2nd. Divisions) में तो ये ही दो-चार किताब के कीड़े निकम्मे लड़के पास करते हैं, लेकिन सबके लिए तो यही बपौती है—जनता के लिए तो यही श्रेणी (Division) है और आजकल जनता का ही ज़माना है, प्रथम श्रेणी और द्वितीय श्रेणी से भी तृतीय श्रेणी की प्रतिष्ठा अधिक है। इसी से तो महात्मा गाँधी गाड़ी पर तीसरे दर्जे में सफ़र करते हैं !

पास तो किया, परन्तु अब करना क्या होगा ? सोचा था, डिपटी होंगे, लेकिन अब सुनते हैं डिप्टीगिरी में डिग्रीधारी (Graduate) लिए*जाते हैं। भला इस अन्धेर का कुछ ठिकाना है ! हममें और डिग्रीधारी (Graduate) में क्या फ़र्क़ है ? यही न कि उसने दो चार वर्ष अधिक पढ़ा है। तो

इससे क्या ? हम लोगों में से कितनों ने तो उससे भी अधिक समय इन्ट्रेन्स (Matriculation) में ही लगा दिया है। योग्यता भी तो देखनी चाहिए। क्या हम डिप्टीगिरी नहीं कर सकते—उनके जैसा रोब नहीं गाँठ सकते ? लेकिन यह देखता है कौन ? खैर, रजिस्ट्रारी के लिए ही कोशिश करेंगे। यद्यपि उतना रोब-दाब नहीं, परन्तु है तो हाकिमी ! फिर रजिस्ट्रार से डिप्टी भो हो सकते हैं। पुलिस की सब-इन्सपेक्टरी के लिए आखिर में कोशिश करेंगे।

सब लोग—(बेकारचन्द को देखकर) भैया आ गए—भैया आ गए !

उम्मे०—क्यों जी, आखिर तो हाकिम होकर न मालूम कहाँ जाना पड़ेगा और अभी से तुमने यहाँ आना छोड़ दिया। दो-चार रोज भी तो यहाँ हम लोगों के साथ रहो।

बेकार०—मैं यहाँ बैठकर व्यर्थ में गप लड़ाऊँ या अपनी जीविका के लिए बड़े अफ़सरों के यहाँ दौड़ लगाऊँ। सुनिए, मुझसे अब यह दौड़-धूप ऐसे न हो सकेगी, एक साइकिल ख़रीद दीजिए।

सब०—भैया हाकिम हो गए—भैया हाकिम हो गए।

उम्मे०—ख़र्चा देते देते तो भाई हम चकनाचूर हो गए। कहाँ और कबतक काम मिलने क्या ठिकाना है।

बेकार०—डिप्टीगिरी तो नहीं मिल सकती—रजिस्ट्रारी के लिए कोशिश करता हूँ।

उम्मे०—रजिस्ट्रारी भी अच्छी है—वह भी हाकिमी है और अपनी कचहरी में एकच्छत्र राज्य तथा एकाधिपत्य है। फिर कमाई भी.........अच्छी है।

बेकार०—सब इन्स्पेक्टरी के लिए पीछे कोशिश करूँगा।

उम्मे०—हमारी राय में तो दारोग़ा होना सबसे अच्छा है। भाई दारोग़ा तो सब हाकिमों का हाकिम है। हाकिम तो एक दिन जिसका मुक़द्दमा जाय उसका हाकिम है और दारोग़ा तीसों दिन अपने इलाक़े भर का हाकिम है, चाहे जिसको बिगाड़े-बनावे। राजा-ज़मीदार-सेठ-साहूकार सभी डरते और ख़ुशामद करते हैं। भला उसके रोब-दाब-शान-शौक़त के आगे हाकिम क्या चीज़ है। और कमाई का क्या पूछना—एक ख़ून या बलवे का मुक़द्दमा आ जाय तो इन्ट्रेंस पास करने का सब ख़र्च एकही दिन में...वसूल।

बेकार—अच्छा, देखा जायगा।

एक—भैया गाँजा के डिप्टी होंगे तो खूब गाँजा मिलेगा।

दूसरा—अगर नहर के डिप्टी हुए तो खूब खेत सीचेंगे।

तीसरा—अगर स्कूल के डिप्टी हुए तो हम मास्टर होंगे।

चौथा—अगर बँधुआ डिप्टी हुए तो सब चोरों को बँधवा देंगे।

पाँचवाँ—यदि रजिस्ट्रार हुए तो हमलोगों से रजिस्ट्री आफ़िस में कोई न बोलेगा।

छठाँ—अगर दारोग़ा हुए तो क्या कहना—पौबारह हैं—इलाके भरपर रोब गाँठेंगे।

[स्थान—ठाकुर उम्मेदसिंह की बैठक। ठाकुर उम्मेदसिंह बैठे हैं। उनके छोटे पुत्र रोज़गारचन्द का प्रवेश।]

उम्मे०—तुमने तो मिडिल पास कर लिया अब तो हाई-स्कूल में नाम लिखाना होगा।

रोजगार०—जी नहीं, मैं हाई-स्कूल में नाम न लिखवाऊँगा।

उम्मे०—क्यों ?

रोज०—क्योंकि देश के अगणित बेकार इन्ट्रेंस-पास (Matriculated) और ग़ुलामी के इच्छुकों का नम्बर मैं अधिक बढ़ाना नहीं चाहता।

उम्मे०—तो क्या करोगे ?

रोज०—मैं खेती करूँगा।

उम्मे०—खेती तो मैं करता ही हूँ।

रोज०—आप नहीं करते—आपका नौकर बुद्धू करता है। सो उसके भरोसे नहीं, मैं स्वयं अपने देखभाल करूँगा।

उम्मे०—तो क्या खेत खेत ख़ुद दौड़े फिरोगे ?

रोज०—ऐसे दूसरों के द्वार द्वार नौकरी के लिए दौड़ते-फिरने से अपने खेत खेत काम के लिए दौड़ना कहीं अच्छा है। केवल दौड़ना फिरना ही नहीं, जरूरत होने पर ख़ुद हल और कुदाल चलाकर आदमियों को जोतना कोड़ना बताऊँगा।

उम्मे०—तो क्या बाप-दादे की इज्ज़त मिट्टी में मिलाओगे?

रोज०—यह आपका ग़लत ख़याल है। बाप-दादे की इज्ज़त तो चोरी-बदमाशी-धोखेबाज़ी करने और झूठ बोलने से जाती है। ईमानदारी से कोई रोज़गार करने या अपना काम अपने हाथ करने से इज्ज़त नहीं जाती। क्या आपने नहीं सुना है—'उत्तम, खेती मध्यम, बान। निकृष्ट सेवा, भीख निदान।'

उम्मे०—क्या खेती करने के लिए ही तुमने मिडिल तक पढ़ा है?

रोज०—मिडिल तक कौन पढ़ना है, लोग तो बी. ए. एम. ए. पासकर खेती करते और अमरिका-जापान जाकर कृषि-शास्त्र पढ़ते और कृषि-कर्म सीखते हैं।

उम्मे०—तो आख़िर तुम्हारा क्या विचार है?

रोज०—मेरे स्कूल में जो किताब पढ़ाई जाती थी, उसमें उद्भिज-विज्ञान और खेती-बारी के विषय में भी कुछ लिखा है। मास्टर साहब भी हमलोगों से कुछ-न-कुछ स्कूल के बाग़ीचे (Garden) में बोआते थे। इसीसे जब मेरी अभिरुचि इस ओर हुई तो स्कूल की लाइब्रेरी से कृषि-विषयक कुछ पुस्तकें और

स्कूल में आनेवाला 'किसान-पत्र' पढ़कर खेती के विषय में कुछ जानकारी प्राप्तकर मैंने खेती करने का निश्चय किया है। परन्तु यह है करतूती विद्या—केवल किताब पढ़ने से काम नहीं चलता, इसलिए कुछ दिन गवर्नमेण्ट कृषि-विभाग (Government Agriculture farm) पटना में जाकर मैं खेती और बाग़वानी सीखूँगा। फिर दो-चार अन्यान्य आदर्श खेतों (farms) को देखकर तब खेती का काम आरम्भ करूँगा।

उम्मे०—तो मुझसे क्या चाहते हो?

रोज०—इस समय आप मुझको अलग एक जगह बीस बीघा खेत दे दीजिए जहाँ एक कुआँ भी हो। उस कुँएँ पर आपको रहट भी लगवा देना होगा। पहले साल मैं वहीं खेती करूँगा। आपके ही बैल और मज़दूर मेरे खेत पर भी काम करेंगे। मैं गेहूँ और धान कम बोऊँगा। आपके बैल और मज़दूरों की अधिक आवश्यकता मुझे तब पड़ेगी जब आप की अगहनी और चती की बुआई हो गई रहेगी और जब आपके बैल और आदमी बेकार बैठे रहेंगे। कारण यह कि मुझे ईख और तरकारी आदि की खेती अधिक करनी है। इसके बदले मैं आपके बैलों की देख-रेख कर दूँगा। आपके बैलों के खाने-पीने का प्रबन्ध ठीक नहीं—बहुत दुबले रहा करते हैं। आप भैया के पढ़ाने में तीस रुपये महीना देते थे, अब मुझको केवल दस रुपये महीना दिया कीजिए इसी से मैं नया बीज, उपयोगी खाद

और लोहे का हल इत्यादि मँगाऊँगा। आवश्यकता होनेपर मज़दूरों को अधिक मज़दूरी भी दूँगा। यह केवल एक वर्ष तक फिर इसके बाद ये कुल रुपये भी मैं सूद समेत आपको वापस दे दूँगा। मेरा खाना-पहनना भी बहुत साधारण होगा।

उम्मे०—किन-किन चीज़ों की खेती करोगे ?

रोज०—चार बीघा कोयम्बूटूर की ईख, एक बीघा लाल गेंड़ा और चूसने वाली ईख बोऊँगा। दो बीघा पूसा का गेहूँ, दो बीघा स्थानीय रब्बी एक बीघा दहिया धान, दो बीघा देशी धान, एक बिगहा बैलों की चरी, एक बीघा मूँगफली, दो बीघा तरकारी और चार बीघा में फलों की खेती करूँगा।

उम्मे०—तरकारी भी बोओगे ?

रोज०—अगर आस-पास बाज़ार हो तो आजकल गल्ला से भी अधिक तरकारी की खेती में लाभ है। तरकारी हो नहीं, मैं तम्बाकू भी बोऊँगा। यदि उसके पत्ते तोड़ने और बाँधने का ढंग सीख लिया जाय तो तम्बाकू की खेती में सबसे कम ख़र्च और अधिक लाभ है।

उम्मे०—और फलों की कैसी खेती ?

रोज०—यह भी बड़े लाभ की चीज़ है। शुरू में दो-चार साल की मिहनत है, फिर न बीज, न जोताई न बोआई। फलों की खेती में इलाहाबादी अमरूद, बनारसी क़लमी बेर, नीबू, पपीता और केला लगाऊँगा।

उम्मेद—(स्वगत) ख़ैर, इस समय इन्ट्रेन्स के ख़र्चे से तो जान बची।

(मार्ग में बेकारचन्द का देख पड़ना)

बेकार—(स्वगत) धत् तेरी Matriculation (इन्ट्रेन्स) की ऐसी तैसी। जब तक पढ़ते रहते हैं, लोग समझते हैं कि ज्योंही (Matriculation) पास किया कि अष्टसिद्धि और नव निधियाँ हाथ जोड़ सामने खड़ी हो जाएँगी और सीधे स्वर्ग की सीढ़ी पर पहुँच जाएँगे। किन्तु, पास करने पर धीरे-धीरे मालूम होता है कि यह बेकार बेशुमार इन्ट्रेन्स पासूदों की फ़ौज किसी मर्ज़ की दवा नहीं—इनका कहीं गुज़ारा नहीं—इनके लिए सब दरवाज़ा बन्द है। ये घर के रहे न घाट के। पहले पास करने पर तो बड़े-बड़े हौसले थे—डिप्टीगिरी, रजिस्ट्रारी और दारोग़ाई का स्वप्न देखते थे, पर जैसे-जैसे स्थिति का ज्ञान होता गया हौसले पस्त होते गए और अन्त में कोई भी दस-बीस रुपये माहवारी की नौकरी पाने का सब यत्न और परिश्रम किया—कोई चेष्टा बाक़ी न रखी। कहीं किसी के यहाँ जाने को भी न छोड़ा, पर न मिली कोई नौकरी, न मिली। सरकारी, अर्द्ध सरकारी, ग़ैर सरकारी, जमींदारी, महाजनी, साहूकारी, मिल, दूकानदारी आदि सभी के दफ़्तरों को छान डाला—सभी अफ़सरों की कोठी छान डाली—किसका किसका दरवाजा न खटखटाया—कहाँ कहाँ की खाक़ न छानी, परन्तु सब जगह एकही उत्तर

No Vacancy (स्थान खाली नहीं) Advertisement (विज्ञापन) देखने के लिए अखबार खरीदने, दरख़ास्त भेजने के डाक महसूल में न मालूम कितने पैसे खर्च किये। बहुतों का तो जवाब ही न आया—न कुछ मालूम ही हुआ। जहाँ से जवाब भी आया तो वही उत्तर No Vacancy। अब क्या करूँ—(बैठ कर सोचने लगता है और सामने कुछ घास काटने वाले नज़र आते हैं।)

घास काटने वाले—(बेकारचन्द को देखकर) वह देखो डिप्टी साहब आ गए—हम लोग भी अपना नाटक खेलें।

(सब एक एक कर गाते और उछलते हैं)

एक—किया मैट्रिक को पास।
बाँध बड़ी बड़ी आस॥

दूसरा—हाय! कैसा यह पास,
मिले दाना न घास।

एक—मैं डिप्टी बनूँगा—मैं डिप्टी बनूँगा।
खूब अकड़ चलूँगा।
सब पर रोब गाँठूँगा।
सबको जेल भेजूँगा।
मैं तो डिप्टी बनूँगा।
जीते सरग को दखल करूँगा—

दूसरा—मैं तो हूँगा रजिस्ट्रार मैं तो हूँगा रजिस्ट्रार।

सब करेंगे इकरार।
बेंचा खेत घर-द्वार।
रख के रुपये दो-चार,
सारी दुनिया से मेरी अलग सरकार। मैं तो०
एक—मैं दरोगा बनूँगा—मैं दरोगा बनूँगा।
सबसे डपट बोलूँगा।
रुपया झपट मारूँगा।
तब रपट लिखूगा।
हँस मानुस जनम को सफल करूँगा—मैं दरोगा०
मैं सबके ऊपर।
नहीं काहू का डर॥
मरे या फूटे सर।
लगे रुपयों की झर॥ मैं दरोगा०

एक—(बेकारचन्द के निकट जाकर) डिप्टी साहब! आदाब अर्ज, मुझको अर्दली में रखिएगा?

दूसरा—रजिस्ट्रार साहब! बन्दगी। मेरा दस्तावेज रजिस्ट्री कर दीजिएगा।

तीसरा—दरोगा साहब! सलाम। भोंदुआ के सिर ने मेरी लाठी को फोड़ दिया—इत्तिला लिख लीजिए।

बेकारचन्द—चुप रहो, घसकट्टे! तुमलोग मुझसे क्या बात-चीत करोगे।

एक—हजूर ! हमलोग हँसते-खेलते, मौज करते हुए दो पहर तक घास काटते हैं। फिर घर जा भोजन करके चैन करते और शाम को आठ आने में घास बेंच, अपना पेट भरते और घरवालों को भी देते हैं। हमलोग अपने बाहु-बल की कमाई खाते हैं, आपके ऐसे घरवालों के सिर के बोझा नहीं हैं। हमारी राय है कि अब हजूर भी इस इन्ट्रन्स और नौकरी की मोह-माया छोड़—हमलोगों के साथ घास काटिए। किसी की गुलामी नहीं, दो पहर की मेहनत में अपना पेट भी भरिएगा और घरवालों को भी कुछ दीजिएगा—उनका बोझ भी न बने रहिएगा।

"अब आश नौकरी औ मैट्रिक की छोड़िए।
खुरपा को लेकर आप घासको छोलिए॥"

मैं अपना खुरपा भी देने को तैयार हूँ—खुदा कसम बड़े मजे में रहिएगा।

दूसरा—सलाह तो ठीक है। मैं भी अपनी टोकरी दे दूँगा। मूनिस्पैल्टी में नालियों के जमादार हो जाइएगा तो दस रुपये भी न मिलेंगे। और इसमें तो पन्द्रह रुपये मासिक मिलेगा।

तीसरा—नाली साफ करावेंगे तो क्या, जमादार तो कहे जाएँगे।

बेकार०—लुच्चे-बदमाश-घसकटे ! मुझसे दिल्लगी करते हो—भागो यहाँ से ! (प्रस्थान)

[ठाकुर उम्मेदसिंह अपनी दालान में बैठे हैं—बेकारचन्द का प्रवेश ।]

उम्मे०—यह तुम्हारी क्या हालत है ?

बेकार०—कहीं कोई नौकरी का ठिकाना नहीं ।

उम्मे०—क्या दारोग़ागिरी न मिली ?

बेकार०—आप भी क्या पूछते हैं - चार जगहें ख़ाली थीं, और सात सौ दरख़ास्तें आई थीं । उनमें भी बी० ए०, एम० ए० बी० एल० की भरमार । इनमें से चार जगह के लिए पहले साहब ने सोलह को छाँटा—अब उन्हीं में से चार चुनेंगे और मेरी ओर तो साहब ने देखा भी नहीं ।

उम्मे०—तब कोई दूसरी नौकरी—

बेकार—क्लर्की, जमादारी आदि किसी भी नौकरी के लिए बहुत जगह कोशिशें कीं, लेकिन कहीं कोई न मिली । पढ़नेवाले इतने हो गए हैं और होते जाते हैं सबको कहाँ से नौकरी मिले ! असम्भव है, कहीं एक आध जगह ख़ाली भी हुई तो एम० ए० बी० एल० के मारे नाक में दम । दस-पन्द्रह पर तो ये ही लोग काम करने को तैयार हैं तो मुझको कौन पूछे । यहाँ तक कि कान्स्टेबली के लिए भी दरख़ास्त दी थी ।

उम्मे०—कान्स्टेबुल भी कौन बुरा है । दिहातों में सबलोग

उससे डरते और उसको झुककर सलाम करते हैं। नज़रसलामी भी मिल ही जाती है।

बेकार०—मगर साहब ने उसमें भी इनकार (unfit) कर दिया।

उम्मे०—तो अब क्या विचार है?

बेकार०—आपने जितना रुपया मेरी पढ़ाई में खर्च किया अगर वह आज रहता तो उससे कोई रोजगार करते या उसके सूद से भर पेट खाते। अब इस बेकार ज़िन्दगी से तो यही भला मालूम पड़ता है कि रेलवे लाइन पर सोकर कट जाऊँ या ज़हर खाकर मर जाऊँ—आपके सिर का बोझ तो न रहूँगा।

उम्मे०—नहीं बेटा, ऐसा न कहो। ईश्वर से कभी नाउम्मीद न होना चाहिए। कल तुमको रोज़गारचन्द के खेतपर ले चलूँगा तुभ भी जरा चलकर देखो तो।

[स्थान—रोज़गारचन्द की खेती का फ़ार्म। ठाकुर उम्मेद सिंह और बेकारचन्द का प्रवेश।]

उम्मे०—बेटा रोज़गारचन्द! तुमने तो मुझको रख लिया। तुम यदि ईखवाला रुपया मुझे न देते तो तुम्हारे बड़े भाई की पढ़ाई में जो रुपया महाजन से लिया था, उसके लिए वे मेरी फ़जीहत कर देते। हाकिम की मालगुज़ारी भी तुमने दे दी। घर में तुमने तो गेहूँ-चावल-दाल-तेल-तरकारी-मसाला-दही-दूध घी-शक्कर सबकी ढेरी लगा दी। अब कोई चीज़ बाज़ार से खरीदनी नहीं पड़ती।

रोज०—गृहस्थ वही जिसको बाजार से कुछ खरीदना न न पड़े। पहले अपनी जरूरत की सभी चीजें पैदा करनी चाहिएँ फिर जिस चीज की बाजार में माँग हो और मँहगी बिके वही चीज पैदा करनी चाहिए।

उम्मे०—भाई, तुम्हारा खेत तो हर समय फुलवारी के ऐसा हरा-भरा रहता है। बताओ कौन कौन से उपाय किए हैं और क्या क्या बोये हो?

रोज०—सुनिए, खेत से आप मनों जिन्स पैदा करते हैं परन्तु उसको जो क्षति होती है उसकी पूर्ति का कोई यत्न नहीं करते। इसीसे उसकी पैदावार की शक्ति घटती जाती है और पैदावार भी कम होती जाती है।

उम्मे०—तो इसके लिए हम क्या करें?

रोज०—आप खेतों की क्षति को खाद डालकर पूरी कर सकते हैं और पैदावार बढ़ा सकते हैं। जैसे काम करने से जब मनुष्य की शक्ति कम हो जाती है तब वह भोजन कर अपनी खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त कर काम करने के योग्य हो जाता है, वैसे ही आप कमज़ोर खेतों में खाद डाल उसकी उर्वरा-शक्ति को बढ़ा सकते हैं।

उम्मे०—यह खाद लावें कहाँ से?

रोज०—आजकल रासायनिक खाद भी बिकने लगी है। यद्यपि यह कुछ मँहगी होती है परन्तु, इसके खरीदने में जो

रोज०—गोशाला ढालुआँ बनवा कर नीचे नाली बनवा दीजिए। हो सके तो नाली का सम्बन्ध खाद के गढे के साथ जोड़ दीजिए। सारा मूत्र उसी नाली के द्वारा बहकर इकट्ठा हो जायगा। कभी कभी पानी से धुलवा दीजिए—वह पानी भी खाद का काम देगा। मूत्र जमा करने का एक तरीक़ा और है। राख या मिट्टी की धूल इकट्ठी कर रखिए और रात को थोड़ी-सी गोशाला में छींट दीजिए—मूत्र उसमें सूख जायगा। सबेरे उसको बहार कर खाद के गढ़े में डाल दीजिए। यह बरसात में ख़ासकर करना चाहिए। इससे खाद तो मिलती ही है और गोशाला भी स्वच्छ सूखी रहती है। मवेशी भी आराम से रहते हैं। गढे में खाद रखने से खाद भी अच्छी बनती है—घर-द्वार आस-पास में सफ़ाई रहती है और गन्दगी नहीं फैलती। नीम, रेंडी आदि तेलहन की खल्ली भी खाद के काम में आती है। हरी खाद बहुत सस्ती और उपयोगी होती है।

उम्मे०—हरी खाद क्या?

रोज०—जिस खेत में धान-गेहूँ ईख और आलू आदि बोना हो तो आषाढ़ में पहले उस खेत में सनई-धनिया आदि बो दिया जाय और पौदा के कुछ बड़े होनेपर छ सप्ताह पहले फसल बोने के हल से उसको खेत ही में जोत दिया जाय, जिससे वह सड़ गलकर खेत में मिल जाय। फिर उस खेत में जो फ़सल बोया जायगा अच्छी उपज होगी। इसी को हरी खाद कहते हैं।

हड्डी की भी अच्छी खाद होती है।

उम्मे०—हड्डी की ?

जी हाँ, जिस हड्डी को आपलोग फेंक देते हैं या कुछ लोग बाहर चालान करते हैं, उसी की चूर का बढ़िया खाद होती है और यह खाद कई वर्ष तक लाभ पहुँचाती है। फलवाले वृक्षों के लिए तो यह अत्युत्तम खाद है। इससे वृक्ष अधिक फलते और फल भी बड़े बड़े और मीठे होते हैं। अच्छा इन खादों का प्रत्यक्ष लाभ मेरे खेतों में देखिए। हमारी धान की फ़सल जो दूसरों से अधिक उपजी थी और पैदावार भी अधिक हुई, इसका कारण यह है कि मैंने खेत में गोबर-राख किसी में नीसी-फ़ास और किसी में जिपसम दिया था। जिपसम सस्ता भी मिलता है और इससे धान के बाद पैरा खेसारी में अच्छा दाना बैठता है। जिपसम मकई, अरहर, मटर-चना, जहाँ फल कम लगते हों उस खेत में देने से बहुत लाभ होता है—ईख में हमने एमोनिया सलफेट दिया है। गेहूँ में हरी खाद और गोबर, आलू में नीम की खल्ली प्याज में एमोनिया सलफेट देने से खूब बैठता है।

उम्मे०—इसीसे तुम्हारी हर फसल बहुत अच्छी हुई।

रोज०—फसल अच्छी होने के और भी कारण हैं। खेत और बीज दोनों अच्छे होने चाहिएँ। रोग रहित और पुष्ट सबसे अच्छा बीज रखना चाहिए। बीज-परिवर्तन से भी लाभ होता

है। उसी जगह का बीज बोने के बदले यदि दूसरी जगह से बीज मँगाकर बोइए तो अधिक उपजेगा। सरकारी फार्म में तरह तरह के धान, चना, गेहूँ-जौ आदि बोकर परीक्षा की जाती है कि किस क़िस्म की कौन जिन्स बोने से अधिक पैदावार होता है। जिस प्रकार के बीज से अधिक पैदावार हो वही बीज मँगाकर बोना चाहिए। गेहूँ मेरा पूसा का है। देशी गेहूँ हरदा और गेरुई रोग से बराबर हो जाता है। पूसा के गेहूँ में ये रोग नहीं लगते फिर फागुन में पछुआ हवा बहने से देशी गेहूँ के दाने सूख जाते हैं—और पूसा का गेहूँ नहीं सूखता। दाने भी पुष्ट होते और उपज भी अधिक होती है। फिर बिकता भी है मँहगा। ईख हमारा कोयम्बटूर का है। देशी ईख से दूना उपज है। आलू दार्जिलिङ्ग का, जौनपुर का मकई का बीज था। हमारा दहिया धान बहुत पहले आधा कार्तिक तक हो गया और धान भी मोटा नहीं। जहाँ ज़मीन ऊँची हो—पानी की कमी हो, वहाँ इसी को बोना चाहिए। बलुही, ऊँची और ऊसर ज़मीन में हमने मूँगफली का बीज मँगाकर बोया है। यह बहुत मँहगा बिकता है और खेत को भी बनाता है। मेरा पपीता बम्बई—सिलोन का कैसा मीठा बड़ा और स्वादिष्ट है।

उम्मे०—तुमने तो एक नई सृष्टि कर दी।

रोज०—खेत और बीज के अतिरिक्त खेतों के औज़ारों में भी सुधार की आवश्यकता है। देशी हलों से मिट्टी पूरी नहीं

खुदती। लोहे के हलों से मिट्टी अधिक खुदती है। देशी हलों से तीन बार जोतने पर भी उतना नहीं जुता सकता। इससे फ़सल खूब उपजती है—जैसा कि मेरा गेहूँ है। कुएँ पर रहट लगा देने से तीन मोट का काम देता है—आदमी भी कम लगते और ख़तरा भी नहीं। आदमी से खेत कोड़वाने की अपेक्षा ईख की 'सुखदा' हल से कोड़वाने में कम खर्च पड़ता है।

उम्मे०—यह सब न तो कोई यहाँ मानता है और न करता है।

रोज०—इसी से तो यहाँ खेती की यह दुर्दशा है। हर साल नुमाइश में आप लोगों को ये चीज़ें दिखलाई जाती हैं, परन्तु लोग इससे लाभ नहीं उठाते—उसको तमाशा समझते हैं। फिर जोतने और बोने की प्रणाली में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। जैसे ईख को आप लोग समतल खेत में हल से बोकर और हेंगा देकर बराबर कर देते हैं—वैसा न करना चाहिए। हमारी ईख को देखिए—हमने नाली बनाकर उसमें ईख क़तार की क़तार बोई है—इससे पटाने में सुभीता—क़िफ़ायत, निराने और गोड़ने में किफ़ायत। फिर क़तार में होने से ही आप उसको 'सुखदा' हल से गोड़ सकते हैं। इससे खाद देने में भी सुभीता है। बरसात के आरम्भ में ईख की जड़ में खाद दे अगल-बगल की मिट्टी ले ईख की जड़ को भर देते हैं—बस ईख वाली क्यारी ऊँची हो जाती है। इससे खाद बहती नहीं और जड़ मज़बूत

होने से ईख बढ़ने पर गिरती नहीं और माल भी भरपूर पड़ता है।

उम्मे०—तुम तो बहुत कुछ कह गए और करके दिखला भी दिया। यहाँ के किसानों और खेतों की उन्नति और किस तरह से हो सकती है, इस विषय की कुछ और मोटी मोटी बातें हों तो बताओ, जिससे इसका प्रचार किया जाय।

रोज०—यह आपने ठीक पूछा। मैं कुछ जरूरी मोटी मोटी बातें बताए देता हूँ जिसे किसानों को करना चाहिए। पहला यह कि ५ बीघा या पचास बीघा खेत एक जगह होना चाहिए—छोटे छोटे टुकड़ों से और अलग अलग रहने से यहाँ की काश्तकारों में बड़ी दिक्कत और नुकसानी है। दूसरा यह कि खेत के चारों तरफ़ पगार या तार होना चाहिए जिससे कुछ नुकसान न हो। तीसरा यह कि सींचने के लिए पानी का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। यदि दूसरा कुछ न करे केवल पटाने का प्रबन्ध हो जाय तो पैदावार सवाई या ड्योढ़ी बढ़ जाय। खेत एक जगह होने से सींचने या पगार बनाने में बड़ा सुभीता होता है। चौथा यह कि बैल अच्छे अच्छे हों—उनके खाने का अच्छा प्रबन्ध हो क्योंकि यहाँ उनके खाने का अच्छा इन्तजाम नहीं। प्रत्येक किसान को अपने मवेशी के मुताबिक़ कुछ चरी भी बोनी चाहिए। ज्वार-बाजरा-मूँग के अलावे कुछ नई चरी हाथी घास, वट सेम, गीनी हरी चरी मिला करे। बरसात में जुआर आदि

अधिक होने से उनको काटकर किसी बन्द जगह में रखने से Selege तैयार होता है जिसको मवेशी जाड़े के दिनों में बड़े चाव से खाते हैं। बैलों को खल्ली और नमक भी देना ज़रूरी है। मेरी तो अब यह इच्छा है कि खेती के साथ साथ कुछ अच्छे नस्ल की गाय, भैंस और अच्छा साँड़ रखकर दूध-दही और मक्खन का भी रोज़गार करूँ और एक अच्छी दूकान खोलूँ।

उम्मे०—खेती के साथ साथ और रोज़गार भी हो सकते हैं?

रोज०—हाँ, दूकान के अलावे तालाब में मछलियाँ पाली जा सकती हैं। इस तरह रेशम का कीड़ा पालना, बकरी-भेंड़-मुर्ग़ी आदि पालना और फलों को संरक्षित रखना—यह सब व्यवसाय भी नफ़े के साथ चलाये जा सकते हैं।

उम्मे०—अच्छा भाई, हम तुम्हारे श्रम से बहुत सन्तुष्ट हुए। यह काम तुम्हारे ही नफ़ा का नहीं, बल्कि देश का महान कल्याणकारी मार्ग है। तुमने भटके हुए किसानों को सच्ची राह दिखाकर संसार का भारी मंगल किया। अब तुम हमारी कुल खेती का भार अपने ऊपर ले अपने प्रबन्ध से करो। ज़रूरत होने से मैं भी तुमको कुछ मदद दे दूँगा।

रोज०—यह ठीक ही है, मैंने भी पहले परीक्षा के लिए थोड़ा ही खेत लेकर काम शुरू किया था—क्योंकि नया काम एक ब एक भारी रूप में करना मुनासिब नहीं—धीरे धीरे

का काम अच्छा होता—ज्यादे पूँजी भी नहीं लगती, उसी के नफ़े से बढ़ाते जाइए। आपको कुछ तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं—आप अब बैठकर आराम कीजिए राम नाम का स्मरण किया कीजिए और बच्चों की देख भाल। परन्तु बड़े भाई साहब क्या करेंगे ?

उम्मे०—इनका हाल न पूछो, पढ़ लिखकर बेचारे बड़ी परेशानी में हैं। इतनी दौड़-धूप की, कहीं दस रुपये की भी नौकरी न मिली।

रोज०—यदि आप और वे बुरा न मानें तो मैं एक प्रस्ताव करूँ।

उम्मे०—कहो-कहो।

रोज०—भाई साहब को अगर दस-पन्द्रह रुपये की नौकरी ही करनी है तो ये इधर-उधर क्यों दौड़ते हैं, हमारे यहाँ फ़ार्म में हमारे साथ काम करें। कान्सटेबुल, क्लर्क न बनकर फ़ार्म सुपरिन्टेन्डेन्ट बनें—फ़ार्म-मैनेजर या मालिक जो चाहें बनें। खेत के परिश्रम का काम मैं ही करूँगा। ये स्टोर (Store) के कार्य (Charge) में रहेंगे। जो चीज़ बिक्री होगी उसका प्रबन्ध और हिसाब-किताब रखेंगे। मेरा काम बढ़ता जाता है, अब मुझसे अकेले न हो सकेगा दूसरे नौकर पर विश्वास नहीं।

बेकार—क्या करूँगा, मजबूरी है, यही करूँगा, परन्तु मेरा मैट्रिक (Matriculation) पास करना निष्फल हुआ।

रोज०—भाई साहब! आप भूलते हैं। आपका पढ़ना निष्फल नहीं, आज सफल हुआ। विद्या पढ़ने का यह अर्थ नहीं कि दूसरे की गुलामी करें। ऐसा समझना विद्या का अपमान करना है। आदमी पढ़ता है इसलिए कि योग्यता बढ़े—प्रत्येक काम करने की योग्यता हो। फिर किसान के लड़के को पढ़कर योग्य किसान होना चाहिए—जैसा अमेरिका और जापान आदि देशों के किसान हैं। लोहार का लड़का पढ़कर योग्य लोहार हो—खुरपा न बनाकर मोटर-इञ्जिन बनावे, ऐसे ही और सबलोग भी अपने कामों में उन्नति करें। परन्तु दुर्भाग्यवश हमारे देश के लोग पढ़ते हैं इसलिए कि नौकरी मिले। सभी पेशे के लोग अपना अपना पेशा-रोजगार छोड़ कुछ पढ़कर नौकरी के उम्मेद-वार हो गए, जिससे नौकरी महँगी हो गई। सबको नौकरी मिलनी असम्भव है। इसीसे बेकारी बहुत बढ़ गई और देश का सारा व्यवसाय चौपट होकर विदेशियों के हाथ चला गया। इसलिए सबको नौकरी का भरोसा छोड़ भिन्न भिन्न व्यवसाय की ओर झुकना चाहिए, जिससे उनका और देश दोनों का कल्याण हो।

बेकार—(सोचकर) एवमस्तु, मेरी आँखें अब खुलीं। तुम मेरे छोटे भाई हो, परन्तु मैं तुम्हारा सत्परामर्श सहर्ष ग्रहण करूँगा। और जीवन-क्षेत्र की ओर अग्रसर होऊँगा। इसमें मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है, कि ईश्वर अवश्य सफल बनाएगा।

(प्रस्थान)—(धीरे धीरे परदा गिरता है।)

अशरण-शरण

१

* [स्थान—मंदिर का कुआँ। एक ओर से पानी भरने के लिये डोलची लिये हुए, मेघा भगत आता है और दूसरी ओर से धर्मचंद्र।]

धर्मचन्द्र—कौन है रे, कुँआ पर!

मेघा—महाराज। मैं मेघा चमार—एक डोलची पानी की बड़ी जरूरत है, इसी से चला आया।

धर्म०—क्या तेरी आँखें फूट गई हैं? देखता नहीं, यह मन्दिर का कुँआ है!

मेघा—इसी से तो साहस करके यहाँ आया कि परमेश्वर के दरबार में भेद भाव न होगा।

धर्म०—देखता हूँ बिना मारे तू न टलेगा। बड़ी शेखी हो गई है, चला है मुझी को ज्ञान सिखाने!

मेघा—महाराज! मैं तो आपका दास हूँ। लड़का बहुत बीमार है—पानी की बड़ी जरूरत है, जल्दी के लिए यहाँ चला आया— (गाता है)

दीजै पानी का दान—दीजै पानी का दान!

मेरी जाती है जान!!

दीजै पानी का दान!

तुम हो पंडित महान। है मुझे कुछ भी न ज्ञान ॥
दीजै पानी का दान!

धर्म०—हटो नीच वो चमार—हटो नीच वो चमार।
न तो खायेगा मार!
नहीं कुछ भी विचार—तू है कैसा गँवार।
हटो नीच वो चमार!

मेघा—दुखिया दुख से अति आया है।
इस द्वारे टेर लगाया है॥
तुम समदर्सी औ हो ज्ञानी।
कर कृपा मुझे दे दो पानी॥

धर्म०—रे नीच! न तुझको भय आया।
लेने पानी मुझ तक आया॥
मैं क्या? तू कौन? न यह सोचा।
मैं उच्च, और तू है पोचा।

मेघा—सुना धर्म का धाम यहाँ है।
दुखियों को आराम यहाँ है॥
सम ईश्वर-सन्तान यहाँ हैं।
होता जग-कल्यान यहाँ है॥

धर्म—देवों का शुभ-स्थान यहाँ है।
रहते नित भगवान यहाँ हैं॥

पण्डित विद्यावान् यहाँ हैं।
नहीं नीच-सम्मान यहाँ है॥

मेघा—मैंने तो दाता समझा था।
प्रभु को दुख-त्राता समझा था॥
कुछ भेद नहीं मैंने जाना।
सब जीवों को है सम माना॥
अब ऊँच-नीच का भाव सुना।
यह दुनियाँ का दिखलाव सुना॥
हैं जीव सभी प्रभु के प्यारे।
समझें न आप मुझको न्यारे॥

धर्म०—है यह पवित्र देवों का स्थल।
रे नीच! न छू सकता है जल॥
करना है भ्रष्टाचार यहाँ,
वर्णाश्रम में व्यभिचार यहाँ?

मेघा—जो प्रभु का दिया हुआ पानी।
उसके अधिकारी सब प्रानी॥
इस पर भी रोक लगाते हो।
दुखियों को अधिक सताते हो॥
प्यासा हूँ, बस अधिकार यही।
क्या ज्ञानी का व्यवहार यही?

यह नहीं धर्म, आचार नहीं,
दुखियों पर अत्याचार यही ॥

धर्म०—मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ।
हरि-पद-कमल ध्यान धरता हूँ ॥
मन्दिर पर मेरा अधिकार,
चलो हटो तुम शूद्र, गँवार।

मेघा—ज्ञानी ने ज्ञान बखाना है।
बसुधा कुटुम्ब-सम माना है ॥
प्रानी को क्या सुख तुम दोगे।
जगती में कौन सुजस लोगे?

धर्म०—मुझको तू धर्म सिखाता है।
रे नीच! न तनिक लजाता है ॥
है तुला पाप करने पर तू।
करता गुरुजन से सरबर तू?

मेघा—मैं घोर परिस्रम करता हूँ,
मैं परिजन का दुख हरता हूँ।
उपकार बने सो करता हूँ।
पर-पीड़न से अति डरता हूँ ॥
निन्दा न किसी की करता हूँ।
ले रामनाम सो रहता हूँ ॥

धर्म०—देखता हूँ, तू बड़ा ढीठ हो गया है। बढ़कर बातें

करता और अपने को लगाता है। तू बिना पिटे यहाँ से न हटेगा ?

मेघा—भला, आप यह क्या कहते हैं ! मैं तो आपके चरणों का दास हूँ। बड़ी देर हो रही है, लड़का तड़फड़ाता होगा। मुझको भरने न दीजिएगा तो कृपा कर थोड़ा जल दूसरे से ही दिलवा दीजिए।

धर्म०—यह अच्छी कही ! यहाँ क्या कोई तेरे बाप का नौकर बैठा है ! अब हम साधु-ब्राह्मणों का यही न काम रह गया कि चमारों को पानी भर-भर कर दिया करें !

मेघा—महाराज ! बड़ा धर्म होगा।

धर्म०—यह क्यों नहीं कहता कि सब धर्म सत्यानाश करने को आया है।

[कर्मचन्द का प्रवेश]

कर्म०-क्यों धर्मचन्द्र, यह किससे और क्यों झगड़ रहे हो ?

धर्म०—कुछ नहीं, यह मेघा चमार मन्दिर वाले कूएँ से पानी भरकर उसे अपवित्र करना चाहता है और मना करने पर बहस करता है।

मेघा—महाराज ! मेरा बीमार लड़का पानी के लिए छटपटा रहा है। मैं जल्दी के लिए यहाँ चला आया और थोड़ा पानी के प्रार्थना कर रहा हूँ।

"तड़पता है मेरा लड़का, बृथा यह कष्ट देते हैं।

न भरने मुझको देते हैं, न पानी भर के देते हैं ॥"

कर्म०—क्यों भाई धर्मचन्द्र! एक ईश्वर प्रदत्त वस्तु से, जिसपर छोटे बड़े सब का समान अधिकार है—इस ग़रीब को वञ्चित रखने में तुमने कौनसा धर्म समझ रखा है? सोना-चाँदी, जगह-ज़मीन को तो बड़े लोगों ने अपना ही रखा है, केवल हवा-पानी तथा सूर्य-चन्द्रमा की प्रकाश ही ऐसी वस्तुएँ रह गई हैं जो बिना दाम के ग़रीब और अमीर सबको बराबर मिलती हैं। तो क्या तुम इन पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहते हो?

धर्म०—यह आप क्या कह रहे हैं! क्या मैं इस शूद्र से मन्दिर का कुआँ छुआ कर इसे अपवित्र होने दूँ और सबका धर्म-भ्रष्ट कराऊँ!

कर्म०—नहीं भाई धर्मचन्द्र, यह धर्म नहीं। यह धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार है और पवित्रता के नाम पर दुखियों पर अत्याचार है। धर्म तो ईश्वर-कृत सभी जीवों पर दया करना सिखाता है। ईश्वर की सब सन्तानें उसके निकट बराबर हैं। यह छोटे-बड़े का भेद-भाव तो तुम्हारा किया हुआ है। त्रिकाल स्नान कर सबसे अलग रहने में सच्ची पवित्रता नहीं—हृदय की यथार्थ पवित्रता तो किसी दीन-दुखिया की सेवा करने से प्राप्त होती है। दुखियों का दुःख मिटाना ही परम धर्म है। क्या तुमने नहीं सुना है:—

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई॥"

मनुष्यता सब धर्मों के ऊपर है। पहले मनुष्यता सीखो और मनुष्य बनो। थोड़े से तुच्छ पानी के लिए ग़रीब को घंटों अँटका कर उसे कष्ट दे रहे हो, यह कहाँ का धर्म है? "आत्मवत् सर्व भूतेषु"—यह ब्रह्मज्ञान क्या केवल पोथी से रटने या कोरा बक-वाद के लिए सीखा है? धर्म किसी दुखिया को दुःख देने में नहीं, बल्कि उसके दुःख मिटाने में है। दान और दया करने के लिए छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच और जाति-पाँति नहीं देखी जाती। दान और दया के पात्र की उपयुक्तता एवं उसकी आवश्यकता देखी जाती है। यदि ईश्वर ने तुमको धन-दौलत, विद्या, ज्ञान अथवा शारीरिक शक्ति दी है तो इसका सदुपयोग यह होगा कि इनके द्वारा ग़रीब और दुखिया का दुःख दूर कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रगट करो और यदि इनके द्वारा ग़रीबों पर अत्याचार करते हो तो यह ईश्वर प्रदत्त विभूतियों का सरासर दुरुपयोग है और है ईश्वर के प्रति कृतघ्नता, जिसको वह कदापि क्षमा नहीं कर सकता, भाई:— (नीति कहती है)

द्वेष धर्म का सार नहीं है,
मानव का शृंगार नहीं है।
भीषण अत्याचार यही है,
सज्जन का व्यवहार नहीं है।

अच्छा, यदि तुम्हें ऐसी आशङ्का और दुराग्रह है तो

झगड़ा मिटाने को मैं ही पानी भर कर इस ग़रीब को दे देता हूँ।

(पानी भरकर मेवा को देते हैं)

धर्म०—भाई कर्मचन्द्र ! तुमने मेरी आँखें खोलकर मेरा बड़ा उपकार किया। मुझसे भारी भूल हुई। व्यर्थ ही उच्चता और पवित्रता के घमंड में पड़कर एक ग़रीब का मैंने दिल दुखाया और धर्म के यथार्थ तत्व को न समझा। भाई ! इसके लिए मैं कौनसा प्रायश्चित्त करूँ ?

कर्म०—तुम्हारा पश्चात्ताप करना ही इसका यथेष्ट प्रायश्चित्त है और भविष्य में इसी मनुष्यता को सर्वोपरि धर्म समझ तदनुसार चलना। (दोनों का प्रस्थान)

२

[स्थान—मन्दिर। मन्दिर के सामने पुजारी जी बैठे हैं। सामने से जुम्मन मियाँ का प्रवेश]

जुम्मन मियाँ—पालागो, पुजारीजी !

पु०—जै सीतारामजी की।

जु०—क्या हुक्म हुआ है ?

पु०—भाई ! हुक्म वुक्म कुछ नहीं। ठाकुरजी की समैया नजदीक है। तुम्हें याद दिलाने को बुला भेजा था। बीबी मुश्तरी जान अच्छी हैं न ?

जु०—याद तो है ही, किन्तु देखता हूँ इस साल शहर में समैया की बड़ी धूम है। सेठजी के मन्दिर से भी आदमी आये

थे। रायसाहब के यहाँ से भी बहुत ज़ोर है। बड़े स्थान से अलग ज़ोर हो रहा है। बड़े असमंजस में हमलोग पड़े हैं।

पु०—देखो, ऐसी बातें न करो। इसीसे तो पहले बुलाया है। यह पुराना स्थान है, यहाँ तुम हर उत्सव में बराबर आते हो। इस साल भी वही होगा। जानते हो, हमारे यहाँ हाकिम हुक्काम, सेठ-साहूकार सभी आते हैं। ऐसा न हो कि सारा मज़ा किरकिरा कर दो! बड़े लोग ठाकुरजी के दर्शन करने थोड़े आते हैं। सभी उत्सव की नाक तो बीबी जान ही हैं।

जु०—साधु का मन्दिर ठहरा, ज़रा पान वान की पिक...

प्र०—तो इसके लिए तुम्हें मना कौन करता है!

जु०—खुद लिहाज़ होता है।

पु०—नहीं-नहीं लिहाज़ की बिल्कुल ज़रूरत नहीं। तुम लोगों के लिए सब माफ़ है। तुम लोग तो सबके ऊपर हो। जो जी में आवे करना। तुम लोगों के आराम के लिए सभी चीज़ों का पूरा बन्दोबस्त रहेगा।

जुम्म०—लेकिन इस साल इनाम की रक़म कुछ बढ़ानी होगी—क्योंकि सबको टालकर आपकी बात रखते हैं।

प्रजा—उसके लिए कुछ चिन्ता न करो।

(प्रस्थान)

३

[स्थान—मेघा चमार का घर। सब चमार मिलकर हरिकीर्तन करते हैं।]

मेघा—(गाता है) दिन दस लेहु गोबिंद गाय ।
छिन न चेतत चरन अम्बुज बादि, जीवन जाय ॥

भाइयो ! न मालूम उस जन्म में कौन सा पाप किया कि चमार के घर जन्म हुआ । परन्तु आगे का जीवन सुधार लो, यह तुम्हारे हाथ है । हम गरीबों से जप, तप, जग्य, दान नहीं हो सकता । बस हम लोगों के उद्धार का सबसे सहज उपाय है हरिकीर्तन । दिन भर मेहनत मजदूरी कर, साम को घड़ी दो घड़ी भगवान का नाम ले लेना, इससे बढ़कर सहज और कल्यानकारी दूसरा कोई उपाय हम लोगों के लिए नहीं है । भाइयो ! मेहनत कर ईमानदारी से अपनी रोटी पैदा करना—किसी की बुराई न करना—जान रहते झूठ न बोलना—भूखों रहना मगर दूसरे की चीज बिना माँगे न लेना—मौका आने पर अपनी सक्ति के अनुसार दुखियों की मदद करना और साम को घड़ी आध घड़ी भगवान का नाम लेकर सो जाना, इससे बढ़कर दूसरा धर्म नहीं । बोलो—(गाता है)

हरि तजि और भजिए काहि ।
कोउ नहिं जग राम सो ममता प्रणत परजाहि ॥
को न सेवत देत सम्पति ? लोकहू यह रीति ।
'दास तुलसी' दीन पै इक राम ही की प्रीति ॥

मुटुरू—मेघा काका ! और बात तो सब ठीक कहते हो, लेकिन हम गरीब भला दूसरे दुखियों की क्या मदद करेंगे, अपना तो ठिकाना ही नहीं ।

मेघा—मुटुरू ! हमारे पास धन दौलत नहीं। गरीब हैं सही परन्तु क्या हमारा यह हट्टा कट्टा शरीर किसी काम का नहीं ? क्या इससे हम दूसरे की मदद नहीं कर सकते ? राह पर पड़े किसी कमजोर रोगी या बूढ़े की सहायता नहीं कर सकते ? किसी घायल को उसके घर या दवाखाने में नहीं पहुँचा सकते ? क्या फुदुर-बहू काकी की टूटी झोपड़ी को हम लोग नहीं छा सकते ? क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं ? धर्म नहीं ? बड़े भाग्य से मनुष्य का जन्म मिला है, इसे सफल कर लो, व्यर्थ न खोओ।

(कविता पढ़ता है)

चार पहर घर धन्धा कर ले, तीन पहर ले सोय।
एक पहर हरिनाम सुमिर ले, जन्म सुआरथ होय ॥
यह तन हरियर खेत, तरुनी हरिनी चर गई।
अजहूँ चेत अचेत, अब अधचरा बचाय ले ॥

रामनाम की वर्षा हो रही है—छक कर पिओ।

लूट लो भाइयो ! मनमाना लूट लो—रामनाम अमूल्य रत्न मुफ्त लुट रहा है:—

(कविता पढ़ता है)

रामनाम की लूट है, लूट सकै तो लूट।
अन्त काल पछिताहुगे, जब तन जैहैं छूट ॥
तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत सकल बिकार।
पुनि भीतर आवे नहीं, देत 'मकार' किवार ॥

भाइयो ! स्वर्ग की सीढ़ी लगी है। बैकुण्ठ की गाड़ी खुल

रही है—बिना पैसे के रामनाम का टिकट लेकर जल्द सवार हो जाओ—चूको मत। गाओ सब ! (गाता है)

रघुबर ! रावरी इहै बड़ाई।
निदरि गनी, आदर गरीब पर करत कृपा अधिकाई ॥
मिलि मुनि-वृन्द फिरत दण्डकबन सो चरचो न चलाई।
बारहिं बार गीध सबरी की बरनत प्रीति सुहाई ॥
यहि दरबार दीन को आदर, रीति सदा चलि आई।
केवट मीत कहत सुख मानत, बानर बन्धु बड़ाई ॥

मुटुरू—मेघा काका ! बात तो तुम साढ़े सोलह आने ठीक कहते हो, परन्तु तुम्हारे इस हरिकीर्तन का समय जरा बे मौका पड़ता है। दिन भर की मेहनत के बाद यही समय जरा थकावट मिटाने और दिल बहलाने का था।

मेघा—सुनो मुटुरू, वह समय दिलबहलाव का नहीं तुम्हारे सत्यानास का था—दिन भर हड्डी खटा कर मेहनत करने पर यदि दो चार आने मिल गये तो बाल बच्चों को भूखे रख—अपने भूखे रह उनको ताड़ीखाने या भट्ठी में बर्बाद कर देना सत्यानाश नहीं तो और क्या है ? नसे की झोंक में अगर किसी से झगड़ पड़े तो अपना सिर फोड़वाया या दूसरे का सिर तोड़ पुलिस के पंजे में पड़े, दस पाँच रोज बीमार रहे, तो क्या इसको दिल बहलाव कहोगे ? भला मनाओ इस हरिकीर्तन का जो

तुमको बुरी जगह जाने से बचाता और तुम्हारी बुरी आदतें छुड़ाता है।

मुटरू—काका! ठीक तो है, लेकिन जरा उन्माद हो जाता था।

मेघा—वही उन्माद तो तुमको चकनाचूर कर देता था। जिस प्रेम और चाव से मदिरा के प्याले को मुँह से लगाते थे उसी लगन से हरिनाम का अमृत के प्याले को मुँह से लगाओ—उससे कहीं अधिक मिठास और नसा इसमें पाओगे। वह नसा प्रान-घातक जहर था जो तुमको मटियामेट करता था और यह हरि-प्रेम के अमृत की नसा आनन्ददायक है जो तुम्हारे लोक-परलोक दोनों को बनावेगी।

[महंथ का चेला हरदास का प्रवेश।]

हरदास-अरे मेघवा! तुमने यह क्या बखेड़ा लगा रखा है?

मेघा—कुछ नहीं, महाराजजी। दिन भर आप लोगों की मजदूरी की और साम को सब लोग इकट्ठे होकर घड़ी आधघड़ी भगवान का नाम लेते हैं।

हरदास—बड़ा भगत बन गया है!

मेघा—महाराज! भगत बनना आप ऐसे महात्माओं का का काम है। भला हम क्या भगत बनेंगे। जिस मालिक ने जन्म दिया है अगर काम धन्धे के बाद एक घड़ी उसका नाम याद किया तो कौन सी बड़ी बात की।

हर०—देखता हूँ, तू अब हम लोगों का काम-काज न होने देगा।

मेघा—काम-काज न करेंगे महाराज जी, तो खाएंगे कहाँ से? यह तो बैठारू समय का काम है।

हर०—हाँ-हाँ, तुम सब भंगी-चमार हरि-कीर्तन करोगे—ठाकुर की पूजा करोगे—तो हम साधु ब्राह्मण क्या करेंगे? क्या जूती सीयेंगे?

मेघा—महाराज जी! वह जगतपिता तो किसी जाति या किसी एक आदमी नहीं—उसके स्मरण और पूजन का तो सबको समान अधिकार है।

हर०—मैं तुम्हारी शरारतों को खूब समझता हूँ। अच्छा, कल महंथ जी का खेत सींचना है। दो आदमी ठीक किए हैं। एक तुम भी अपनी घरवाली को भेज देना।

मेघा—पानी चलाने के लिए तो दो जोड़ा के लिए चार आदमी चाहिए।

हर०—एक मैं हूँ।

मेघा—क्या एक चमाइन के साथ आप पानी चलाइगा? छू न जाइएगा? क्या हम लोगों के छुए पानी से पटा धान अपवित्र न हो जायगा?

हर०—ज़्यादा शेखी न बघारो। खेत में छुआछूत नहीं लगती। क्या वह मन्दिर है? फिर स्त्री तो किसी जाति की हो—गंगा है।

मेघा—कल जन्माष्टमी है। ठाकुर जी का जन्मोत्सव है। क्या कल भी खेती का काम होगा ?

हर०—अभी नया भगत हुआ है न ! धान सूख रहा है, वह देखें या जन्माष्टमी मनावें। धान सूख जाने पर तू देगा या तेरे ठाकुर जी ? फिर इसमें दिन को करना ही क्या है, नाच तमाशे तो रात को ही होते हैं !

मेघा—नाच-तमाशा जब हो, परन्तु भगवान का जन्म-दिन तो है। कम से कम दिनभर तो व्रत रखना चाहिए। खाने की भी कोई झंझट नहीं। हम तो कल किसी का काम न करेंगे। रही घरवाली, सो उसके लिए दूसरा आदमी पैसा दे गया है।

हर०—अरे, क्या तू महंथजी से पैसा लेना चाहता है ?

मेघा—पैसा क्या लूँगा और लेना भी चाहूँ तो देगा कौन ? फिर दिनभर मजदूरी करके भोजन माँगना कोई अपराध भी नहीं, क्योंकि यह पेट तो न मानेगा। कल तो जन्माष्टमी है फाँके रह जाएँगे, परन्तु चिन्ता है उस पैसेवाले की।

हर०—देखना, कल सबेरे उसे जरूर भेज देना नहीं तो सारी भगतई भुला देंगे। [प्रस्थान।]

[ज़ालिमसिंह ज़मींदार के सिपाही हरबोंगराय का प्रवेश।]

हरबोंगराय—मुटरुआ है रे !

मुटरू—क्या हुक्म है बाबू जी !

हरबोंग०—कल बाबू साहब के खेत में कुदारी चलानी होगी।

मुटरू—सरकार ! हम तो सदा हाजिर रहते हैं, लेकिन आज घर में कुछ खाने को नहीं है और न बिना कुछ खाए कुदारी चलेगी। दो एक रोज छोड़ दीजिए—कहीं दूसरे के यहाँ मजूरी करके एक रोज का भोजन इकट्ठा कर लूँ तो आपके यहाँ चलकर काम कर लूँगा।

हरबोंग०—क्या वहाँ खाने को न मिलेगा ?

मुट०—बाबूजी ! एक छटाँक चना से गरीब का पेट नहीं भरता और न एक छटाँक चना खाने से कुदारी चलती है। भर पेट सत्तू भी मिल जाता तो खुसी से काम करते।

हरबोंग०—ज़्यादा क़ानून न बक। जो सदा से मिलता आया है वही मिलेगा। तेरे लिए नया रिवाज न बँधेगा।

मुटरू—बाबूजी ! नया रिवाज बँधे या न बँधे, पर पेट तो नहीं मानता। इसका तो कुछ बन्दोबस्त करना ही होगा। बिना पेट भरे खेत पर काम हो नहीं सकता।

हरबोंग०—सीधे तौर से कल काम पर चले आना, नहीं तो एक भी हड्डी दुरुस्त नहीं रहने दूँगा। (प्रस्थान)।

[रुपयामल साह के नौकर जकड़न का प्रवेश]

जकड़न—अरे, यहाँ रकटुआ है रे !

रकटू—(एक कोने में कपड़ा ओढ़े ज़मीन पर पड़ा है, क्षीण स्वर में)—क्या है भैया !

जक०—मैं खोजता फिरता हूँ और तुम यहाँ आराम करते हो ?

रकटू—भाई आराम क्या, ज्वर से तो मर रहा हूँ।

जक०—यह सब बहाना रहने दे। बोल साहुजी का रुपया देता है या नहीं?

रकटू—भाई, इस भादों में एक तो खाने बिना मर रहा हूँ, दूसरे बीमार पड़ गया—अब इस घड़ी रुपया कहाँ से दूँ।

जक०—सदा तो यही कहता है, तो देगा कब? जब लाकर खाया था तब नहीं सोचा था कि कहाँ से देंगे?

रकटू—भाई, बेटी के ब्याह में दो रुपये का चावल तो लाया था। क्या जानते थे कि वह गले की फाँसी हो जायगा। तब से जो बनता है, साल में दो चार रुपये दे ही देता हूँ और दो चार रोज उनका काम भी मुफ्त में कर देता हूँ, फिर भी साहु जी का रुपया चुकता ही नहीं।

जक०—तुमको साहु जी बुलाने गये थे? अपनी गरज से तो गया होगा और अब बढ़ बढ़ के बातें करता है।

रकटू—गरज और गरीबी यही तो सब कुछ कराती है। मैं बढ़ बढ़ के बातें क्या करूँगा, अपना दुखड़ा रोता हूँ।

जक०—अच्छा कल साहु जी के बागीचे में काम करने चलना होगा।

रकटू—भाई, हमारा हाल नहीं देखते—दो रोज से मुँह में जल तक न गया। जर से व्याकुल हूँ नहीं तो चलते क्यों नहीं।

जक०—यह सब हम नहीं जानते, कल काम पर चलना

होगा। नहीं तो आज सब रुपया साफ कर दे, हमको बहुत आदमी मिलेंगे।

रकटू—चलने को तो कहता हूँ, लेकिन पहले जरा जर तो छोड़ ले और रुपया इस समय कहाँ से लाऊँ।

जक०—यह सब नकल रहने दो।

रकटू—भाई, क्या मैं नकल करता हूँ। क्या मुझको साध है कि बीमार होकर पड़ा रहूँ। विस्वास न हो तो जरा देह छूकर देख लो।

जक०—ठीक कहा—अब चमार ही की देह छूऊँ न! बोल कल चलता है या नहीं?

रकटू—भाई दो रोज माफ करो—जर छूटने पर चलकर काम कर दूँगा।

जक०—देखता हूँ, तू सीधे न समझेगा। अच्छा, इस समय तो मैं चलता हूँ, अगर कल काम पर न गया तो तू ही जानेगा।

(प्रस्थान)

(मन्दिर के साधु फक्कड़ दास का प्रवेश)

फक्कड़—घुटुरुआ है रे!

घु०—क्या है बाबा!

फक्कड़—कल मन्दिर पर कुछ काम है। भंडारी बाबा कामिनीदास ने परमजोता को बुलाया है और यह एक चवन्नी पेसगी दी है (चवन्नी देता है)

घु०—बाबा ! वह तो बीमार है ।

फक्कड़—कुछ भारी काम नहीं—भण्डार का गल्ला वगैरह और सहन साफ करनी है । बीमार है तो बाबा से वहीं भभूत ले लेगी, भली चंगी हो जायगी । (प्रस्थान)

घुटरू—(चवन्नी हाथ में लेकर मन में) चवन्नी, चवन्नी चौथाई रुपया ही है—एकदम चार आने—सोलह पैसे—इसे फेर दूँ, यह कैसे हो सकता है । सोलह पैसे में मुट्ठी भर जायगी । चार पैसे ताड़ी के लिए बचा लूँ तो भी भर पेट खाऊँगा । जहाँ दिन भर कुदारी चलाने पर भी दो आने मिलना मुश्किल हो जाता है, वहाँ घड़ी दो घड़ी के काम के लिये चार आने पेसगी ! क्या यह उदारता, दया या उपकार है ? नहीं । यह तो खाने के लिए पले हुए तीतर-बटेर आदि चिड़िये को अच्छा दाना खिलाने जैसी उदारता है, बलिदान के बकरे को हरी घास खिलाने जैसी दया है और है फाँसी के कैदी को मिठाई खिलाने जैसा उपकार । यह तो उदारता के पर्दे में सर्वनास, दया की ओट में सत्यानास और उपकार की आड़ में अत्याचार है ! जिस मन्दिर के कुएँ से मेघा चमार के बीमार लड़के के लिए लोटा भर जल नहीं मिलता, देने से पाप होता, धर्म जाने की आसङ्का होती, उसी मन्दिर के आँगन में काम करने के लिए एक चमार की लड़की बुलाई जाती है ! वाह रे धर्म का ढकोसला ! और चार आने पैसे पेसगी !!

तो क्या इसे वापस करूँ ? नहीं, खाऊँगा क्या ? तो क्या ......नहीं, यह भी नहीं हो सकता—ग़रीब हूँ तो क्या ? क्या मेरी इज्जत नहीं ? उसे भेज दूँ ?

अच्छा कोई चिन्ता नहीं, उस पर मुझे विश्वास है। उसी के अत्याचार के भय से तो उसने बीमारी का बहाना किया है। वह अपनी रच्छा आप कर सकती है। समय कुसमय के लिए छुरा भी तो दे दिया है। कोई हर्ज नहीं, बच्चू को अभी खूब फाँसा जाय और मूड़ा जाय, जब पूरे रँग में आवें तो एक दिन किसी सूनसान विकट स्थान में ले जाकर......उनकी बुरी नियत और पाप-वासनाओं का प्रायश्चित्त...... (पर्दा गिरता है)

४

[स्थान—राजसभा। राजमंत्री आदि बैठे हैं। द्वारपाल खड़ा है। धर्मदास का प्रवेश।]

धर्म०—महाराज ! धर्म की रक्षा कीजिए। पाखण्डी उपहास, और ढोंगी उसका सत्यानाश करने पर तुले हैं।

राजा—क्या बात है धर्मदास जी ! साफ़ साफ़ कहिए।

धर्म०—क्या कहूँ, महाराज !

नहीं श्रद्धा किसी की धर्म के अनुपम विचारों में।
लगी होने प्रभू की पूत पूजा आज भङ्गी औ चमारों में ॥

राजा—क्या चमार ठाकुर जी की पूजा करते हैं ?

धर्म०—हाँ महाराज ! चमार मन्दिर के कूएँ से पानी भरना चाहते—गोल बाँधकर हरि-कीर्तन करते—जन्माष्टमी मनाते और खुले आम रामनाम कहते फिरते हैं। हम ब्राह्मण-साधु अब क्या करें ? और इनका अगुआ है मेघा चमार।

राजा—हूँ, ऐसी बात है ? द्वारपाल !

द्वार०—महाराज !

राजा—जाकर कोतवाल से कहो कि मेघा चमार को उसकी मंडली के साथ हाज़िर करें।

द्वार०—जो आज्ञा। (जाता है)

(मेघा चमार की मंडली के साथ कोतवाल का प्रवेश)

मेघा—(गाता हुआ)—

"हमारे प्रभु अवगुन चित न धरो !
समदरसी है नाम तुम्हारो सोई पार करो ॥ १ ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिलिगे तब एक बरन भे सुरसरि नाम परो ॥ २ ॥
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
सो दुविधा पारस नहिं राखत कंचन करत खरो ॥ ३ ॥
भूखे प्रेम के स्याम सलोने, वृथा जाति झगरो।
की वाको निरवाह करो प्रभु, नहिं पन जात टरो ॥ ४ ॥"

राजा—(कुञ्चित भौहें करके) मेघा ! तुमने यह क्या प्रपंच खड़ा कर रखा है ?

मेघा—कुछ नहीं, अन्नदाता जी ! यही कि आप लोगों की टहल से जब छुट्टी मिली एक घड़ी भगवान का नाम ले लिया।

राजा—यह सब ढोंग छोड़।

मेघा—महाराज ! जगह-जमीन, सोना-चाँदी, महल-अटारी, हाथी-घोड़ा, साल-दुसाला, लड्डू-हलवा इन सबों की आशा तो हम लोगों ने छोड़ ही दी है; रह गई केवल आपकी सेवा और भगवान की याद। अगर भगवान को भी छोड़ दूँ तो रहूँ किस आसरे !

राजा—बहुत पण्डिताई न कर।

मेघा—महाराज ! मैं तो पण्डितों की चरन-धूल की भी नहीं, पण्डिताई क्या करूँगा।

राजा—तू चमार होकर हरि-कीर्तन और ठाकुर की पूजा क्यों करता है ?

मेघा—क्योंकि वह जगत-पिता किसी खास जाति और व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं। जिसने ऊँची जाति को बनाया, उसी ने नीची जातियों को भी बनाया है। हम ऊँची जातियों की बराबरी भी करना नहीं चाहते, लेकिन क्या अपनी टूटी कुटिया में बैठ कर हम अपने मालिक जन्मदाता के नाम का सुमिरन भी न करें ?

राजा—यह सब साधु-ब्राह्मणादि उच्च वर्णों का काम है, तुम्हारा नहीं।

मेघा—महाराज ! मैंने तो उनका नाम दीनबन्धु, दीनानाथ, पतित-पावन और अधम-उधारन सुना है । किन्तु धनीबन्धु, ब्राह्मणनाथ, महात्मा-पावन तथा साधु-उधारन ऐसा नहीं सुना ।

(गाता है)

"मैं हरि पतित-पावन सुने ।

मैं पतित, तुम पतित-पावन, दोउ बानक बने ॥

व्याध, गनिका, गज अजामिल साखि निगमनि भने ।

और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥"

राजा—तुम्हारी पूजा से भगवान् कभी प्रसन्न नहीं हो सकते ।

मेघा—उनकी रीति तो ऐसी ही है । (गाता है)

"ऐसी हरि करत दास पर प्रीति ।

निज प्रभुता बिसारि जन के बस, होत सदा यह रीति ॥"

"ऐसी कौन हरि की रीति !

बिरद-हेतु पुनीत परिहरि पामरन पर प्रीति ॥'

"ऐसो को उदार जग माहीं ।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ॥"

राजा—यह दुष्कर्म तुम्हें छोड़ना होगा और इस अधर्म से मुख मोड़ना होगा ।

मेघा—महाराज ! मैं आपके चरणों का दास हूँ ।जो आज्ञा हो सब करने को तैयार हूँ । मगर यह राम नाम का रटना न छुड़ाइए ।

कहें जो भी, करूँगा प्रेम से, कुछ भी न छोड़ूँगा।
मगर हरिनाम रटने से कभी मुँह को न मोड़ूँगा॥

(कर्मचन्द जी का प्रवेश)

कर्मचन्द—राजन् ! यह सब क्या हो रहा है ?

राजा—क्या कहें, इन सभी चमारों ने अन्धेर मचा रखा है। ये लोग कभी मन्दिर के कुएँ पर पानी भर कर सब भ्रष्ट करना चाहते हैं, तो कभी हरि-कीर्तन कर हरिनाम को अपवित्र करते हैं।

कर्म०—राजन् ! राजसत्ता के ज़ोर पर दुखियों को न सताइए। राज-सत्ता ग़रीबों को सहारा देकर ऊपर उठाने के लिए और दुखियों के दुःख मिटाने के लिए है, न कि उनको दुखाने के लिए। भला, सोचिए तो जिन अछूतों का सारा जीवन ही आपके लिए है, जो आपके लिए जीते और आपही के लिये मरते हैं, जो आपके लिए ज़रूरी से ज़रूरी और गन्दा से गन्दा काम करते हैं—क्या उसका यही बदला है ? आपको तो उनका आदर करना चाहिए था, और नहीं तो अपने फ़ायदे के लिए उन्हें सुखी रखना था—उनके सुभीतों के लिए उपयुक्त प्रबन्ध कर देना था, सो आप लोग ईश्वर-प्रदत्त पीने के पानी पर भी उनके लिए प्रतिबन्ध लगा रहे हैं, यह कैसा न्याय है ! धर्म के नाम पर अधर्म न कीजिए। जो मन्दिर वेश्याओं के आने से अपवित्र नहीं होता, उसी मन्दिर का कूआँ एक ग़रीब, जो आप ही का एक अंग है, उसके बीमार लड़के के पीने

के लिए एक डोलची पानी लेने से अपवित्र हो जाता है, यह ढकोसला नहीं तो और क्या है? जिस ईश्वर के मन्दिर में सबको पूजन करने का समान अधिकार है—

"जाति पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि कै होई॥"

—सो वहाँ पूजा करना दूर—वह ग़रीब अपने घर में भी राम नाम लेने नहीं पाता! प्राचीनकाल में हिरण्यकशिपु ने राम नाम के प्रचार को मिटाना चाहा था—मगर ख़ुद मिट गया।

राजा—इससे मेरा कुछ नहीं, इन साधु-ब्राह्मणों का अपमान होता है।

कर्म०—यह उनकी मूर्खता और अदूरदर्शिता है। उनको तो प्रसन्न होना चाहिए कि भगवद् भजन का प्रचार छोटे लोगों में भी होने लगा। बड़े लोग तो अपने बड़प्पन और उच्चता के अभिमान में चूर रहते हैं। भगवान् के सच्चे उपासक तो ये ही ग़रीब हैं और इन्हीं पर उनकी विशेष कृपा भी रहती है:—

न मसजिद में ख़ुदा रहते न ठाकुर रहते मन्दिर में।
अगर ख़ोजो तो पाओगे उन्हें दुखियों के बस दिल में॥
अहिल्या को जिन्होंने चरण-रज देकर उधारा है।
अजामिल, गीध, गनिका, गज, कसाई को भी तारा है॥
निषाद वो भीलनी रैदास को जिसने उबारा है।
वो दीनों का सहारा है, अनाथों का भी प्यारा है॥

इन क्षुद्र विचारवालों ने हिन्दू-धर्म की महानता को नष्ट करके

उसे बदनाम कर रखा है। इनसे और कुछ नहीं तो मनुष्यता का सम्बन्ध तो बनाए रखो। माननीय प्रेम से उन्हें वंचित न करो। जिस धर्म में दया नहीं उसको धर्म कहना ही पाप है। धार्मिक होने के पहले मनुष्य तो बनो। महाराज! जग में कर्म ही प्रधान है। ब्राह्मण-वंश में जन्म लेने पर भी अपने कर्मों से रावण राक्षस हो गया—विश्वामित्र क्षत्री से ब्राह्मण हो गए। जाति नहीं सबका कर्म देखिए—नीच अच्छा कर्म करे तो क्या वह नीच ही रहा?

राजा—तो क्या इनकी भक्ति सच्ची है?

कर्म०—आप स्वयं इसकी परीक्षा कर लीजिए।

(कर्मचन्द कुछ कान में कहकर चले जाते हैं।)

राजा—धर्मदास जी! इस समय आप जाइए। मेघा तू भी जा। पीछे मैं इसका फ़ैसला करूँगा।

(धर्मदास और मेघा चले जाते हैं)

(मंत्री से) मंत्री जी! आप नगर में यह ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि आज से जो ठाकुर जी की पूजा करेगा उसे फाँसी की सज़ा दी जायगी।

मंत्री—जो आज्ञा। (सब जाते हैं)

(५)

[दूसरे दिन प्रातःकाल—स्थान-राजमहल। राजा बैठे हैं। कर्मचन्द का प्रवेश]

कर्मचन्द—महाराज! अब ज़रा वेष बदलकर मेरे साथ चलिए और ठाकुर जी में किसकी कितनी श्रद्धा है यह भी देखिए।

(राजा का वेश बदलकर कर्मचन्द के साथ प्रस्थान। आगे चलने पर मन्दिर मिलता है। धर्मचन्द मन्दिर के बाहर बैठे हैं।)

कर्म०—क्यों भाई धर्मचन्द ! यहाँ चुपचाप क्या बैठे हो—क्या ठाकुर जी की पूजा नहीं करते ?

धर्म०—(ईषत् क्रोध के साथ) तुम्हीं ने तो यह आग लगाई है और तिसपर पूजा की पूछते हो ! किसको जान भारी हुई है कि ठाकुर जी की पूजा करे।

कर्म०—तो क्या ठाकुर जी की पूजा छोड़ ही दोगे ?

धर्म०—और नहीं तो क्या ! ठाकुर के पीछे अपनी जान देंगे ? पूजा हो या न हो इसमें मेरा कुछ हर्ज नहीं, हाँ यह बात अवश्य थी कि मन्दिर खुला रहने से रोज़ हलवा-मलाई उड़ाते थे–डट कर माल चाभते थे और रुपया-पैसा कपड़े आदि भी ख़ूब चढ़ते थे; ये सब बन्द हो गये। अब यहाँ रह कर क्या करूँगा—कहीं दूसरी जगह जाकर अड्डा जमाऊँगा।

कर्म०—ठाकुर जी को भी साथ ले जाओगे ?

धर्म०—यह बला काहे को ढोऊँगा।

(आगे चलकर मठिया मिलती है—महंथ जी बैठे हैं।)

कर्म०—कहिए महंथ जी, ठाकुर पूजा को क्या होती है ?

महंथ—भाई, अच्छा ही हुआ, यह व्यर्थ की झंझट छूटी। सच पूछो तो मुझे ज़मींदारी और खेती-गृहस्थी के कामों से फ़ुरसत ही कहाँ थी जो ठाकुर जी की पूजा करता। यह तो लोगों

की शिकायत के डर से करता था। अब मज़े में अपना काम-धन्धा सम्हालेंगे।

(आगे श्री पं० कंचन शास्त्री अपने द्वार पर बैठे मिलते हैं।)

कर्म०—क्यों शास्त्री जी, ठाकुर जी की पूजा हुई ?

शास्त्री—भाई, उसका नाम न लो, कोई सुन लेगा तो ग्राहक जान जायगी। राजा ने अच्छा ही किया। दो घंटे सुबह-शाम व्यर्थ स्नान-पूजा में लगते थे, उतने समय में यजमानों के यहाँ से कुछ द्रव्य ही कमा लेंगे।

(आगे बढ़ने पर)

कर्म०—(राजा से) महाराज ! साधु-ब्राह्मणों की भगवत्-भक्ति और श्रद्धा तो आपने देख ली, अब ज़रा मेघा चमार के घर भी चल कर देखा जाय।

राजा—अवश्य।

(स्थान—मेघा चमार का घर। मेघा चमार अपनी मंडली के साथ गाता है।)

"ऐसो राम दीन-हितकारी।
अति कोमल करुनानिधान बिनु कारन पर-उपकारी॥
साधन-हीन दीन निज अघ बस सिला भई मुनिनारी।
गृह ते गवनि परसि पद पावन घोर पाप तें तारी॥
हिंसा-रत निषाद तामस बपु पसु समान बनचारी।
भेंट्यो हृदय लगाय प्रेम बस नहिं कुल-जाति बिचारी॥

बिहँग जोनि आमिष अहार-पर, गीध कौन व्रतधारी ?
जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब भाँति सँवारी ॥
अधम जाति सवरी जोषित जड़ लोक वेद तें न्यारी ।
जानि प्रीति दे दरस दयानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥
रिपु के अनुज विभीषन निसिचर कौन भजन अधिकारी ?
सरन गये आगे ह्वै लीन्हों भेंट्यो भुजा पसारी ॥
असुभ होत जिनके सुमिरन तें बानर रीछ बिकारी ।
वेद विदित पावन किये ते सब महिमा नाथ ! तुम्हारी ॥
कहँ लगि कहौं दीन अगनित जिन्हकी तुम विपति निवारी ।
कलिमल-ग्रसित दास 'तुलसी' पर काहे कृपा बिसारी ॥

कर्म०—क्यों मेघा, यह क्या करता है—राजा का हुक्म नहीं जानता ?

मेघा—जानता हूँ महाराज, इसी से तो यह आखिरी समय जी भर कर भगवान का गुन गा लेता हूँ ।

कर्म०—क्या तुझे अपने प्राणों का भय नहीं ?

मेघा—महाराज जी ! धर्म क्या प्राण से भी बढ़कर है ? गाओ रे !

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज हारी ॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो सो ।
मो समान आरत नहिं आरतिहर तोसों ॥

कर्म०—मेघा ! यह बेवक़ूफ़ी छोड़ । देखता नहीं बड़े बड़े

सारी सुविधाओं का प्रबन्ध किया जायगा। अब कोई इन पर अत्याचार न करने पावेगा। इन लोगों के पीने के लिए पानी, रहने का घर, इनकी चिकित्सा और शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जायगा। सभी सार्वजनिक स्थान इनके लिए खोल दिए जायँगे। भगवान की पूजा के लिए इनको पूरी स्वतंत्रता रहेगी।

इन मठधारियों और मन्दिरों पर मेरी पूरी नज़र रहेगी। जो ढोंगी और दुराचारी होंगे वे चुन चुन कर निकाल दिए जायँगे और जो सच्चे साधु और धर्मनिष्ठ होंगे, वे ही रखे जायँगे। स्थानों के आय-व्यय का प्रबन्ध राज कर्मचारियों की देख-रेख में होगा।

कर्म०—भगवान आपका मंगल करें। (दोनों का प्रस्थान)

६

(राज-परिषद्, राजा और जन-समूह)

राजा—(सबकी ओर देखकर) आज अधर्म के कृत्यों की बलि करके जो प्रसन्नता मुझे हो रही है, जिस अपूर्व शान्ति का अनुभव मैं कर रहा हूँ, वर्णनातीत है। इन दोनों की कुटिया में मुझे जो शिक्षा मिली, राज-प्रासाद में वह कहाँ? मैं मेघा के अनन्त उपकारों का आजन्म आभारी रहूँगा।

परिषद् का जन-समूह—बोलिए 'अशरण-शरण' भगवान की जय!

(अन्तरिक्ष में आलोक। सब आँख उठाकर देखते हैं—पटाक्षेप)

आर्य्य-भूमि

[स्थान—गुरु-आश्रम । भारत का मानचित्र टँगा है ।
आचार्य अपने शिष्यों को भारत का भूगोल पढ़ा रहे हैं ।]

आचार्य—

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा ।
पर्बत जो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का ।
वह सन्तरी हमारा, वह पासबाँ हमारा ॥
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ ।
गुलशन है जिसके दम से, रश्के जिनाँ हमारा ॥
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना ।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ॥
यूनान मिस्र रोमाँ, सब मिट गये जहाँ से ।
अब तक मगर है बाक़ी, नामो निशाँ हमारा ॥

(भारत का मानचित्र दिखाकर)

पुत्रो ! यह मानचित्र हमारी जननी जन्मभूमि भारत-माता का है । कैसी अपूर्व शोभा है इसकी ! सर पर हिमालय का शुभ्र हीर-जटित मुकुट विराज रहा है । चरणों को सिन्धु पखार रहा

है ! वन-उपवन की अनुपम शोभा तथा पक्षियों का मधुर कलरव नित्य नूतन उत्साह का संचार कर रहा है । अहा !

अपवर्ग से अनोखी मन मोहिनी छटायें ।
सुख-साज स्वर्ग को भी पाकर न भूल जायें ॥
है वज्र का हृदय जो इसके लिए न तरसे ।
वह नैन ही नहीं जो इसके लिए न बरसे ॥

बंगाली शिष्य—तो गुरु जी ! क्या हम बंग-भूमि को भुला दें ! उसकी याद चित्त से हटा दें ! जिसकी मिट्टी से यह शरीर बना है, उसकी सेवा करना क्या हमारा धर्म नहीं है ?

"जहाँ भये गौराङ्ग प्रभु, रामकृष्ण से सिद्ध ।
जहाँ विवेकानन्द भे, मधुसूदन परसिद्ध ॥
केशव मोहन रामजहँ, आशुतोष गुरुदास ।
विद्यासागर जहँ भये, जहँ चितरंजन दास ॥
वक्ता जहाँ सुरेन्द्र सम, जहँ भे सिनहा लाट ।
जहाँ कवीन्द्र रवीन्द्र हैं, कवियों में सम्राट ॥
सजला सफला जासु महि, शालि बालि लहरात ।
शस्य, श्यामला धन्य तू, बंग - भूमि विख्यात ॥"

भारत की बाबा, आमि बांगाली ! बंग आमार जननी, आमार बंग, आमार देश !!

पंजाबी— भाई ! तुमने ठीक कहा । हम भी अपने पंचनद-

प्रदेश को कदापि नहीं भूल सकते। हम पंजाबी से भारतवासी नहीं बन सकते। क्योंकि:—

जहाँ गुरू गोविन्द सिंह, जहँ रणजीत नरेश।
भारत के जहँ लाजपत, धन्य पंचनद देश॥
भारत में जो है प्रथम, आर्यजाति का ठाउँ।
वीर-भूमि पंजाब सो, स्वास्थ्य-प्रदा उपजाउँ॥

बंगाली—आमि बांगाली!

गुजराती—भला, हमारे गुजरात के ऐसा उपजाऊ और व्यवसायी कौन प्रान्त है!

रजधानी श्रीकृष्ण की, जो जग में विख्यात।
पूजनीय गांधी जहाँ, धन्य प्रान्त गुजरात॥

महाराष्ट्री—ऐसा न कहो भ्राता, हमारा महाराष्ट्र भी किसी से कम नहीं है। क्योंकिः—

रामदास से गुरु हुए, जहँ शिवराज नरेश।
जहाँ तिलक औ गोखले, धनि महराष्ट्र सुदेश॥
रानाडे, भण्डारकर, जहँ भे विद्यावान।
गुदावरी, पर्वत शिखर, को करि सके बखान॥

बंगाली—आमि बंगाली।

संयुक्त प्रान्तबासी—नहीं भाई, तुम भूलते हो। युक्तप्रान्त के सामने सब राई के बराबर हैं। क्या कोई हमारे प्रान्त के से

सुन्दर प्राकृतिक दृश्य और नदियाँ अपने प्रान्त में दिखा सकता है ?

जहाँ जवाहर जगमगा, जहँ मोती से लाल।
धर्मशील जहँ मालवी, युक्तप्रान्त खुशहाल ॥ १ ॥
अवधपुरी मथुरा जहाँ, राम कृष्ण अवतार।
तीरथराज प्रयाग जहँ, गंग-यमुन शुभधार ॥ २ ॥
जहाँ भास्करानन्द भे, भारतेन्दु हरिचन्द।
विद्याधर काशी जहाँ, भये विशुद्धानन्द ॥ ३ ॥
हिन्दू - विद्यालय जहाँ, विश्व बीच विख्यात।
जगत ताज जहँ 'ताज' है, अवध-आगरा प्रान्त ॥ ४ ॥

बंगाली—आमि बांगाली।

मद्रासी—वाह, वाह ! क्या हमारा मद्रास प्रान्त कुछ है ही नहीं ?

—"रत्नों की जो खान है, पुण्य प्रान्त मद्रास।
रंगनाथ रामेश्वरम्, जग में अहै प्रकाश ॥

बिहारी—बंगाली भाई, धान के खेत और पच्छाही गंगा-यमुना पर ही फूले नहीं समाते। पंजाबी भाई साहब जिन गुरु गोबिन्द सिंह पर घमण्ड करते हैं, शायद उनके जन्म-स्थान बिहार प्रान्त को वे भूल गए। जिस विद्या की खान और वीर-प्रसविनी बिहार-भूमि के वक्ष-स्थल पर गंगा सरयू ही नहीं, वरन् पुण्य-सलिला नारायणी और स्वास्थ्य-प्रदा सोनभद्र की धारायें भी लहराती हैं :—

"चन्द्रगुप्त जहवाँ भये, जहँ भे बुद्ध महान।
विद्यापति, मंडन मिसिर, चाणक, गौतम जान ॥ १ ॥
नालन्दा विद्या-भवन, जहाँ अशोक नरेश।
याज्ञवल्क्य औ जनक से, भे ज्ञानी जेहि देश ॥ २ ॥
अजौं जहाँ राजेन्द्र हैं, साधू विद्यावान।
सो बिहार जहँ राजगृह, तीरथ गया समान ॥ ३ ॥

उड़िया—बिहारी भाई साहब! अब हमारा उड़ीसा भी एक अलग प्रान्त बन गया। और अब मैं भी गर्व से कहता हूँ कि:—

फल केला औ नारियल, धान-पान अति होय।
जगन्नाथ भुवनेश्वरम्, कटक शिल्पधर जोय ॥

बंगाली—आमि बांगाली।

सीमा प्रान्तवासी—क्यों जनाब, क्या हमारे सरहदी सूबा के ऐसा पहाड़, घाटी और जङ्गलों का कुदरती नज़्ज़ारा आप लोग किसी और जगह दिखला सकते हैं? या हमारे सूबे के ऐसा जवाँमर्द वो जफ़ाकश आदमी किसी और जगह पाए जाते हैं?

"जंगल वो घाटियों की कैसी बहार है।
रहते हैं औलिया ख़ाँ अबदुल ग़फ़्फ़ार हैं ॥

आचार्य—(हँसकर) पुत्रो! व्यर्थ घमण्ड न करो। विचार से काम लो। बंग, पंजाब, महाराष्ट्र, युक्तप्रान्त और बिहारादि ये सब किसके अंग हैं? क्या भारत इनसे पृथक् है? ज़रा सोचो तो वास्तव में ये सब इसी महा विख्यात भारत के प्रान्त हैं।

सीमा प्रान्तवासी—लेकिन मुझसे तो अरब के खजूर और काबुल के अंगूर नहीं भूलते।

आचार्य—परन्तु, ये कै दिन मिलते? नित्य तो यहीं के गेहूँ और चावलों पर गुज़र होते हैं। मुस्लिम युवक! अब तो तुम्हारे घर में आग लगने पर अरबवाले बुताने न आवेंगे और तुम्हारे जलसों में शरीक न होंगे। अब तो तुम्हें यहीं रहना है। इसी की गोद में जन्म लिए, इसी की धूल में खेले और अन्त में इसी की मिट्टी में मिलोगे। इसी जन्म-भूमि के फल-फूलों से, जिनसे हम पेट भरते हैं, तुम भी भरते हो।

सीमा प्रान्तवासी—परन्तु हमारा धर्म तो दूसरा है।

आचार्य—होने दो, इससे क्या? धर्म प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तिगत है, परन्तु देश सबका है।

पंजाबी—परन्तु हम तो सिक्ख हैं।

संयुक्त प्रान्तवासी—और मैं राजपूत।

महाराष्ट्री—और मैं ब्राह्मण।

मद्रासी—और मैं Non-Brahman. (अब्राह्मण)

आचार्य—बस, बस, अपने अपने घर में अपने विश्वासानुसार पूजा करने का सबको अधिकार है परन्तु, देश के लिए सब एक हैं। याद रखो, वृक्ष की शोभा हरी भरी बलिष्ठ डालों से है। यदि उसकी डालों को काट कर अलग अलग कर दो तो न वृक्ष ही रहेगा न डालियाँ ही, सब सूख जाएँगे और टहनियाँ

को जुदा जुदा गाड़ने से माना कि घंटा आध घंटा हरी भी रहें तौ भी टहनियाँ ही कहलायेंगी न कि वृहद् वृक्ष। सभी उसे उपेक्षादृष्टि से देखेंगे। किसी बड़े महल के सब हिस्सों को जुदा जुदा कर दो तो वह खंडहर हो जायगा। जैसे मनुष्य के शरीर में आँखें-नाक-कान इत्यादि यथास्थान शोभा पा रहे हैं और सभी अपने अपने काम संयुक्त शरीर के लाभ के लिए करते हैं। किसी भी अंग में कष्ट होने से सबको कष्ट पहुँचता है। यदि एक एक अंग को काट कर जुदा जुदा रख दो तो वे अंग निर्जीव, शोभाहीन और निकम्मा हो जायँगे और शरीर भी नष्ट हो जायगा। यही बात राष्ट्र और देश के लिए समझो। इसी प्रकार हर एक प्रान्त और जाति-धर्म विशाल भारत के अंग हैं और सभी संयुक्त रह कर शोभावान् तथा लाभदायक हो सकते हैं; यदि जुदा जुदा हो जायँ तो, शोभाहीन हो कर शीघ्र ही नष्ट हो जायँगे। तुम सबसे पहले भारतवासी हो पीछे और कुछ। पुत्रो! अब तुम इन छोटी छोटी बातों को छोड़ कर एकता के सूत्र में बँध जाओ। ध्यान रहे—भारतवर्ष हमारा है और हम भारत के हैं।

महाराष्ट्र पंजाबी हो, या बंग देश का वासी हो।
युक्तप्रान्त बीहार निवासी, पर सब भारतवासी हो॥
मुसलमान हो या हो हिन्दू, चाहे सिक्ख उदासी हो।
ईसाई हो ख़ाह पारसी, पर सब भारतवासी हो॥

सब—ठीक है, ठीक है।

आर्य्य-भूमि

बंगाली—आमि भारतवासी, आमि भारतवासी।

सब—

भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है।
दुनिया भर में प्रकृति देवि की आँखों का यह तारा है॥
जिसका मुकुट-किरीट हिमांचल, है यज्ञोपवीत गंगाजल।
फल कर जिसमें विविध फूल फल, सुरभि सुयश विस्तारा है॥
होने को बलिदान इसी पर, तीस कोटि सिर रहते तत्पर।
कहते हैं सब गरज गरज कर, भारतवर्ष हमारा है॥

(व्योम में दिव्यालोक, पटाक्षेप)

विवाह

१

[स्थान—मिस्टर विलायती लाल बैरिस्टर की कोठी । मि० ला० अपने कमरे में बैठे हैं । बदक़िस्मत लाल का प्रवेश ।]

बद० कि०—आदाबअर्ज़ है ।

मि० ला०—Good morning (गुड मार्निङ्ग) क्या कोई केस है ?

बद०—जी नहीं ।

मि० ला०—क्या मेरी opinion (राय) लेनी है ?

बद०—जी नहीं, आपके लड़के से लड़की की शादी की निस्बत बातचीत करनी है ।

मि० ला०—लड़की पढ़ी लिखी है ?

बद०—जी हाँ ।

मि० ला०—Graduate ? (उपाधिधारी)

बद०—जी नहीं ।

मि० ला०—तो क्या मैट्रिक ही तक पढ़ कर छोड़ दिया ?

बद०—जी नहीं, घर पर ही हिन्दी, हिसाब वग़ैरह पढ़ाया है । कुछ अंग्रेज़ी भी जानती है ।

मि० ला०—तो साफ़ क्यों नहीं कहते कि जाहिल है। और गाना बजाना ?

बद०—हारमोनियम कुछ बजा लेती है।

मि० ला०—Dancing ? (नाचना ?)

बद०—जी नहीं, यह तो हम लोगों के यहाँ नहीं सिखलाया जाता।

मि० ला०—जब लड़की ऐसी जाहिल और देहाती है, तो आपने किस बूते पर एक बैरिस्टर के England return (इङ्गलैण्ड से लौटे हुए) लड़के के साथ शादी करने की हिम्मत की है ? देहात में जा किसी वैसे ही देहाती के पल्ले क्यों नहीं मढ़ देते ? और उमर ?

बद०—यही चौदह-पंद्रह वर्ष।

मि० ला०—तो यहाँ क्या गुड़िया खेलने आवेगी ? बीस भी नहीं हुआ, आपको शादी की धूम पड़ गई ! Damn Indian custom. I hate Indian customs, (भारतीय-प्रथा गन्दी है, मैं उससे घृणा करता हूँ) वह है कहाँ ?

बद०—घर पर।

मि० ला०—यह खूब कही, जिसकी शादी उसी का पता नहीं ! आप कौन होते हैं ? It is not our concern (यह तो हम-लोगों के सम्बन्ध की बात नहीं) जब लड़का-लड़की engaged (विवाह के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध) हो, शादी कर लें—तब न हम

लोगों के formal permission (लौकिक-आज्ञा) की ज़रूरत होगी। ख़ैर, आप जो कहें, लेकिन मैं लड़के के private & personal (गुप्त और व्यक्तिगत) कामों में नाजायज दख़ल देना नहीं चाहता। आप चाहें तो ख़ुद उससे बातें कर सकते हैं। उसको बुलाए देता हूँ। Ramsay ! Ramsay !! (रैम्ज़े, रैम्ज़े)

[मि० रमेश का प्रवेश]

मि० रमेश—Hallo Papa, Do you want me ? (क्या है पिताजी ! आप मुझे चाहते हैं ?)

मि० लाल—Not I, but this Gentleman, who wants to talk with you about your marriage. (मैं नहीं किन्तु यह महाशय, जो तुम्हारे विवाह के विषय में तुमसे बातें करना चाहते हैं।)

मि० रमेश—But marriage with whom ? (परन्तु विवाह किससे ?)

मि० लाल—With his daughter. (इन्हीं की लड़की के साथ।)

मि० र०—But where is she ? (परन्तु वह है कहाँ ?)

मि० ला०—Sleeping in her cradle at her home. (अपने घर पर पलने में सो रही है।)

मि० र०—Strange things in India. I hate

Indian custom. I hate Indian girls. Who is he ? It is purely her concern.

(भारत में विचित्र बात है । मैं तो भारतीय प्रथा से घृणा करता हूँ । मैं भारत की लड़कियों से नफ़रत करता हूँ । यह कौन है ? यह तो विशुद्ध लड़की का ही सम्बन्ध है ।)

(चला जाता है ।)

बद०—(उठकर चलते समय) मुझे क्या मालूम था कि ये लोग अब एकदम साहब हो गए हैं, किस आफ़त में आ फँसा !

(जाते हैं ।)

२

[डाक्टर खरे, अपने बँगला के बरामदे में बैठे हैं मि० बदकिस्मत लाल का प्रवेश ।]

बद्—बन्दगी जनाब ।

डा० ख०—आदाब अर्ज़ । आइए, क्या कोई call (बुलाहट) है ? case serious (हालत ख़राब है) ?

मि० बद०—जी नहीं ।

डा० ख०—तो क्या यहीं Examine (जाँच) कराना चाहते हैं ?

बद०—जी नहीं, आपके बड़े लड़के जिन्होंने इस साल बी. ए. पास किया है, उनकी शादी के लिये बातचीत करने आया हूँ ।

डा० ख०—लड़के की शादी! हूँ। (गम्भीर भाव धारण कर)।

वद०—आवश्यकता हो तो लड़की की कुण्डली भी ले आया हूँ।

डा० ख०—जी, मैं उन बेवकूफों में नहीं हूँ, जो कुण्डली-फुण्डली देखता चलूँ। हाँ, अगर University (विश्वविद्यालय) का (उपाधि) या सर्टीफ़िकेट हो तो दिखा सकते हैं।

वद०—सो तो नहीं है।

डा० ख०—लड़की तो बालिग़ और तन्दुरुस्त होगी?

वद०—जी हाँ।

डा० ख०—Age (अवस्था) और Health (स्वास्थ्य) की निस्बत Civil Surgeon का Certificate ले आये हैं?

वद०—जी नहीं।

डा० ख०—फ़ोटो कितने posture (ढङ्ग) के लाए हैं।

वद०—जी फ़ोटो तो नहीं है।

डा० ख०—तो ले क्या आये हैं? क्या लेकर शादी की बात-चीत करने चले हैं? क्या कोई आपकी सूरत देखकर शादी करेगा? ख़ैर, यह तो जानते हैं कि लड़का Graduate (बी.ए.) है?

वद०—जी हाँ।

डा० ख०—ग्रेजुएट है ग्रेजुएट हिन्दू-यूनिवर्सिटी का।

वद०—जी हाँ, सो तो जानता हूँ।

डा० ख०—तो उसी लड़के को आप लेना चाहते ?

बद०—जी हाँ, उन्हीं से शादी करना चाहता हूँ ।

डा० ख०—ठीक है, अब तो लड़का आपका होगा—उसकी भलाई आपकी भलाई है और उसकी तरक्क़ी से आपकी लड़की को फ़ायदा है ।

बद०—जी हाँ सो तो हुई है ।

डा० ख०—तो अब जब लड़का आपका है तो अब से उसका कुल भार आपको उठाना होगा मैंने ग्रेजुएट बना दिया यही बहुत है । आपको इसके लिए मेरा एहसान मानना चाहिए, समझे !

बद०—जी नहीं, मैं यह नहीं समझ सका, ज़रा साफ़ तौर से फ़रमाएँ ।

डा० खा०—मैं बिल्कुल साफ़ तौर से कहे देता हूँ—आप जानते हैं कि मैं बिल्कुल एकदम खरा आदमी हूँ । सुनिए, मैंने कुल अपने ख़र्च से ग्रेजुएट बना दिया । अब वह इङ्गलैंड जाना चाहता है सो इङ्गलैंड जाने आने, वहाँ रहने और पढ़ने का कुल खर्च अब आपको देना होगा । और उसके नाम से Thomas cook (टामस कुक) के बैङ्क में कम से कम पन्द्रह हज़ार रुपये जमा कर देने होंगे । अपने लिए मैं कुछ नहीं चाहता, कहिए यह तो मंज़ूर है—

बद०—बहुत भारी रक़म होती है, समझ बूझकर जवाब दूँगा।

डा० ख०—जनाब, लड़का भी तो ग्रैजुएट है और इङ्गलैंड से आई. सी. एस. होकर लौटेगा। एक आई. सी. एस. दामाद के लिए पन्द्रह हज़ार आप भारी रक़म समझते हैं ?

बद०—जी नहीं, मैं अपनी हैसियत देखता हूँ, मेरी जैसी हैसियत वाले के लिए ज़रूर भारी रक़म है।

डा० ख०—जब आप की हैसियत नहीं, तो ऐसी शादी के लिएआपको हौसला भी नहीं करना चाहिए। एक ग्रैजुएट और आई. सी. एस. दामाद मुफ़्त में न मिलेगा। ख़ैर, आपने मेरा बहुत वक़्त ख़राब किया। मैं खरा आदमी हूँ सब बातें साफ़ साफ़ पहले ही कह देता हूँ, जिससे पीछे कुछ बखेड़ा न हो। अगर ये बातें आप को मंज़ूर हों तो एक Letter of consent (स्वीकृति-पत्र); लड़की के Educational qualification का certificate (शिक्षा का प्रमाणपत्र); Civil Surgeon का Age & health certificate (डाक्टर का उम्र और स्वास्थ्य का प्रमाण-पत्र) और लड़की की फ़ोटो पन्द्रह हज़ार के चेक के साथ भेजना होगा। फिर शायद ख़र्चा इसमें बेशी पड़े इसके लिए एक Agreement (स्वीकृति) लिखकर रजिस्ट्री करा देनी होगी। इसके बाद तिलक वग़ैरह का दिन मोक़र्रर होगा।

बद०—(गमनोद्यत) लड़की क्या हुई जान की आफ़त। देखते हैं इसके लिए इज्ज़त-आबरू, धन-दौलत सब गँवाना होगा। (जाते हैं।)

३

[स्थान—बा० रोज़गारी मल, ज़मींदार और मैनेज़र बैंक का मकान। बा० रोज़गारी मल्ल बैठे हैं।]

रोज़गारी मल—(स्वगत) मेरे दूसरे लड़के लदकू ने जब से बी. ए. पास किया तब से उसकी शादी के लिए लोगों ने नाक में दम कर दिया—नाक में दम। जब देखिए कोई न कोई पहुँचा ही रहता है। बड़े लड़के की शादी तो एक धनाढ्य विधवा की एकलौती पुत्री के साथ बड़े सुभीते से हो गया। यहाँ वहाँ दोनों जगह प्रबन्ध करके और अब उनकी कुल ज़मींदारी का प्रबन्ध अपने हाथ में ले, दुनियाँ की झंझटों से उन्हें निश्चिंत कर दिया है। ऐसे कौन किसकी मदद करता है। इस विवाह के ज़रिए से भी यदि मुझसे किसी विधवा की कुछ भलाई हो जाय तो अच्छा ही है। चाहता हूँ लदकू की शादी भी किसी ऐसी ही जगह हो, याने किसी धनी विधवा की एकमात्र कन्या से—तब अलबत्ते कुछ काम बने। पर ज्यादातर ऐसी ही लड़की की शादी का कलाम लेकर आते हैं जिसको बाप है, चचा है और भाई भतीजों से जिसका घर भरा है। भला वहाँ शादी करने में क्या

मिलेगा ? फिर वह शादी भी कैसी जिसके करने से कुछ ज़मींदारी न बढ़ी ! बंक के रोकड़ का टोटल न बढ़ा। मैं उन बेवक़ूफ़ों में नहीं कि शादी की उमंग में आकर घर का रुपया ख़र्च करूँ— यह तो शादी नहीं बरबादी हुई। पर मैं तो रोज़गारी आदमी ठहरा। हमेशा अपने रोकड़ का टोटल देखता हूँ। अभी लड़कू के बी० ए० तक पढ़ाने में जो ख़र्च हुआ है पहले तो वही वसूल करना है पर ऐसा कोई मोटा असामी आता नहीं। कोई उत्तम राशि वर्ग होने की दुहाई देता है, सो अब कौन ऐसा बेवक़ूफ़ है जो पण्डितों के बताए राशि वर्ग पर ख़याल करे। किसी को भारी ख़ानदानी होने का गुमान है। पर अब जब कि हरिजनों के यहाँ शादी करने में फ़ख़्त समझा जाता है तो ख़ानदान बे ख़ानदान कौन देखता है ?

"किसी को लड़की के सुन्दरी होने का दावा है, पर इससे मुझको क्या ? लड़के का आगे की पढ़ाई बन्द हो जाने का अलबत्ता डर है। कोई कहता कि लड़की पढ़ी लिखी है, पर मुझे क्या उससे नौकरी करानी है। जब यह नहीं तो इससे फ़ायदा ? यही न कि घर का काम छोड़ मेम बन कुर्सी पर बैठ कर हुकूमत किया करेगी और उपन्यास पढ़ा करेगी या रोज़ चिट्ठियाँ लिखा करेगी।

कोई कहता बड़ी गुणवती है, तो क्या मुझको रोज़गार कराना है ? उलटे रोज़ की हुकूमत रहेगी। ऊन चाहिए, कार्पेट

चाहिए। मख़मल, रेशम, सलमा सितारा चाहिए। नफ़ा कुछ नहीं, रोज दो-चार रुपये ख़र्च हों। भाई हम तो रोज़गारी आदमी ठहरे। हमें तो रुपया चाहिए रुपया। कहा भी है:—

"सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रियन्ति"

फिर सचमुच यह कौन देखता है, किसका राशि वर्ग उत्तम है, कौन ख़ानदानी है, लड़की सुन्दरी है या बन्दरी, लँगड़ी है या लूली, पढ़ी लिखी है या जाहिल! अरे, ये सब तो रुपये ऐंठने के ढकोसले हैं। सिर्फ़ रुपये की तादाद बढ़ाने के लिए ये सब नुक़्स निकाले जाते हैं। पूरा रुपया गिन दीजिए, फिर कोई उज़्र नहीं सब बात ठीक ही है। सच तो यह है कि जो पूरा रुपया दे, उसी का राशि-वर्ग ठीक—वही ख़ानदानी—उसी की लड़की पढ़ी लिखी, रूपवती और गुणवती है।

[बाबू बदक़िस्मतलाल का प्रवेश।]

बद०—आदाब मैनेजर साहब।

रोज०—आदाब, कहिए, क्या बैंक में कुछ काम है?

बद०—जी नहीं।

रोज०—तो क्या मेरी जमींदारी में कुछ काम है?

बद०—जी नहीं, लदकू बाबू की शादी की निस्बत बातचीत करनी है।

रोज०—लड़की के बाप-भाई वग़ैरह हैं या नहीं?

बदू०—यह मेरी ही लड़की है और आपकी दुआ से तीन लड़के भी हैं।

रोज०—ऐसे बड़े खानदान में तो शादी करना हम पसन्द नहीं करते। आप तो मर्दाना ठहरे जहीं जाइएगा शादी ठीक कर लीजिएगा। मैं तो उन बेचारी मुसम्मातों की हालत पर जिनके यहाँ ब्याहने को लड़की है—अधिक तरस खाता हूँ। खैर, आपको तो ज़मींदारी भी है?

बदू०—जी हाँ, है कुछ।

मि० रो०—उसमें लड़की को हिस्सा देने की राय है या नहीं?

बद०—जायदाद में लड़कियों को हिस्सा देना, इसका तो हम लोगों के यहाँ रिवाज नहीं है।

मि० रो०—ऐसे बुरे और अन्यायी रिवाज को गोली मारिए रिवाज या क़ानून हो या नहीं, पर इन्साफ़ क्या कहता है? आप अपनी छाती पर हाथ रखकर कहिए मुनासिब क्या है? लड़के और लड़की दोनों आपकी सन्तान हैं। फिर क्यों एक को हिस्सा मिलेगा, दूसरे को नहीं?

बद०—चाहे जो हो, मैं आपसे इस पर बसह् करने को तैयार नहीं हूँ। जो बात थी, कह दी। अभी तक यह रिवाज हम लोगों में क़ायम नहीं हुआ है।

मि० रो०—इसी से तो लड़कियों की शादी में दिक्क़त होती है। आज इसको जारी कीजिए और सब झँझट दूर। ऐसे ही

Reform (सुधार) की ज़रूरत है। फिर रिवाज जारी कौन करेगा ? आप ही ऐसे आदमी तो इसको जारी कर सकते हैं।

बद्०—माफ़ कीजिए, आपने भी तो यह रिवाज जारी नहीं कियां है ।

• मि० रो०—इससे क्या ? मैंने क्या किया है, यह सवाल नहीं है। मैं करूँ या न करूँ, पर मुनासिब क्या है—इन्साफ़ क्या है ? यह आप खुद सोच सकते हैं।

बद्०—ख़ैर, जब वह जमाना आवेगा देखा जायेगा। इस वक्त मुझको क्या हुक्म होता है।

रो०—लड़के अभी जीवन में प्रवेश नहीं किया है। अभी तक उसके पढ़ने का भारी खर्च उठा रहा हूँ; अब उसके बाल-बच्चों का भी मैं ही भार उठाऊँ—यह नहीं हो सकता।

बद्०—आप अपने लड़के और उसके बाल-बच्चों का भार न उठाइएगा तो कौन उठावेगा—यह हमारी समझ में नहीं आता।

रो०—जनाब ! मैं रोज़गारी आदमी हूँ; लड़के को पढ़ा दिया, यही बहुत है। अभी वही खर्चा वसूल करना है। अब मैं व्यर्थ की झंझट उठाना नहीं चाहता। इस लड़के की और मेरी दोनों की यही राय है कि जब तक वह जीवन में प्रविष्ट न हो जाय और खुद अपने बाल-बच्चों कार भार उठाने के क़ाबिल न हो जाय, उसकी शादी न की जाय। और अगर आपको जल्दी

है और उसका विवाह करना चाहते हैं तो जब तक लड़का Life (जीवन) में entered (प्रविष्ट) न हो जाता तब तक उसका भार आप उठाइए।

बद्०—अर्थात्—

रो०—अर्थात् जब लड़की को जायदाद में हिस्सा नहीं देते तो अपनी लड़की के नाम से कुछ नक़द रुपया ही किसी बैंक में उसके गुज़ारा के लिए जमा कर दीजिए।

बद्०—तो विवाह के बारे में क्या यही एक शर्त है ?

रो०—लड़की की शादी करने आये हैं तो इतना घबराइएगा? साहब, हमारे यहाँ शर्त-वर्त कुछ नहीं, खरा सौदा है। शादी-विवाह में किन २ बातों की शर्त तय होगी, आप सब कुछ जानते हैं। जो सब करते हैं, आप भी कीजिएगा। अब, कहिए तिलक न दीजिएगा, दहेज न दीजिएगा?

खाना न देंगे? यह सब तो करना ही होगा। हाँ, मैं और लोगों के ऐसा तिलक-दहेज की मोलाई करना नहीं चाहता—आप ही पर छोड़े देता हूँ। आप अपनी और मेरी हैसियत और लड़के की तालीम का ख़याल कर जो मुनासिब समझिए, दीजिए लेकिन ऐसा नहीं कि दस आदमियों के सामने मेरी बेइज्ज़ती हो। हाँ, सिर्फ़ दो बातें पहले हो जानी चाहिएँ, क्योंकि साहब, मैं रोज़गारी आदमी हूँ, खरी २ बातें जानता हूँ। एक यह कि लड़की के नाम से बैंक में रुपया पहले जमा हो जाय—दूसरा

यह कि लड़के को आप लेना चाहते हैं। जानते हैं न कि वह बी० ए० पास है। अंत में उसने बी० ए० पास नहीं किया है। इसमें मैंने मिहनत और ताकीद की है। जो कुछ तरद्दुद मैंने उठाई है जाने दीजिए उसका बदला नहीं चाहता। सूद भी जाने दीजिए, परन्तु हम रोज़गारी आदमी मूल नहीं छोड़ सकते। सो लड़के के बी० ए० पास होने तक की पढ़ाई में मेरा जो ख़र्च हुआ है, वेही देखकर आप मेरा रुपया वापस कर दीजिए। मैं बेशी और मुनाफ़ा नहीं चाहता कहिए मंज़ूर है न ?

बद०—लड़के की शादी क्या कोई रोज़गार है ?

रो०—और नहीं तो क्या ? शादी-ब्याह, पढ़ाना-लिखाना, खाना-पीना और सोना सब तो रोज़गार है। कुछ फ़ायदे ही के लिए तो किया जाता है। और यही तो हिन्दुस्तानियों की ग़लती है। जब तक यह व्यवसाय के रूप में न किये जायँगे, देश की भलाई नहीं।

बद०—(गमनोद्यत) हम नहीं जानते थे कि लड़की इतने बखेड़े की चीज़ है और उसकी शादी में ऐसी तरद्दुद है। इसी से तो लड़की पैदा होते ही घर में इतनी उदासी छा जाती है। इन्हीं ज़िल्लतों से बचने के लिए तो लड़कियों को सौरी में मार डालने की प्रथा थी।

(जाते हैं)

४

[स्थान—सर्बसोख लाल वकील का मकान । तिनकौड़ी मल का प्रवेश ।]

तिन०—प्रणाम वकील साहब !

सर्ब०—प्रणाम—आइए—क्या कोई अपील है ? आज तो मैं बहुत busy (व्यस्त) हूँ ।

तिनकौ०—जी नहीं, आपके लड़के की शादी के बारे में कुछ बातचीत करने आया हूँ ।

सर्ब०—शादी के बारे में बात-चीत । सुनिए जनाब, मैं frank (खरा) आदमी हूँ । मैं एक busy practitioner (पूर्ण अभ्यस्त) और professional (काम काजू) आदमी ठहरा । मेरा वक्त बहुत क़ीमती है और लोग यों ही रोज़ शादी के बारे में मेरा वक्त नुक़सान करते हैं । इसलिये मजबूर होकर अब मैंने यह नियम बना लिया है कि जिसको शादी के बारे में बातें करनी हों, पहले मेरी एक घंटे की फ़ीस जमा कर दे । आखिर मैं कहाँ तक नुक़सान उठाऊँ । माफ़ कीजिए, नियम नियम है और सब पर बराबर लागू होता है ।

तिन०—ख़ैर, कोई हर्ज नहीं । जब आपने ऐसा ही नियम, बना रक्खा है और मुझे ग़रज़ हुई है—अब आपके यहाँ आए हैं तो आपका नजराना वाजिब ही है, इसलिए मैं आपकी फ़ीस दाखिल कर देता हूँ । (रुपये देते हैं ।)

सर्ब०—(रुपये लेते हुए) माफ़ कीजिएगा, नियम नियम है।

तिन०—कोई हर्ज नहीं, अब शादी की बात तय होनी चाहिए।

सर्ब०—हाँ, तो तय क्या करना है। आप तो जानते ही हैं कि मैं कायस्थ महासभा का सभापति बन चुका हूँ, इसलिये तिलक लेने-देने का तो मेरे यहाँ कुछ सवाल ही नहीं, मेरे यहाँ शादी एकदम महासभा के नियम के मुताबिक़ बिल्कुल Reformed (सुधरे) तरीक़े से होगी ! कहिए, मंजूर है।

तिन०—भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ! भगवान आप का भला करे, अगर आप ऐसे दस-पाँच आदमी भी बिरादरी में हो जायँ तो इसको सुधरते देर न लगे और न मालूम कितनों का कल्याण हो।

सर्ब०—मैं किस लायक़ हूँ, यह सब आप लोगों की मेहरबानी है, हाँ, भरसक नियम पालने की कोशिश मैं करता हूँ। अच्छा, भला यह तो कहिए यह शादी होगी कहाँ से ?

तिन०—मेरे घर गंगापुर से—भगवानपुर स्टेशन से तीन मील पर—सड़क अच्छी है।

सर्ब०—यही तो आफ़त है। गर्मी के दिन, रेल का सफ़र, स्टेशन से दूर ऐसे देहात में भला कौन भला आदमी जाना पसन्द करेगा ? क्या आप लड़की को इसी शहर में ले आकर शादी नहीं कर सकते ?

तिन०—भला यह कैसे हो सकता है ! बाप-दादे का मौरूसी मकान, कुल-देवता का स्थान और अपनी बिरादरी छोड़ शहर में लड़की लाकर किराए के मकान में शादी करना कोई पसन्द न करेगा ।

सर्व०—यही तो हमारी बिरादरी की बेवकूफ़ी है । पुराने लकीर का फ़कीर बनी रहती है । देहात में जाना तो आफ़त है । हमारे बहुत से बड़े आदमी मित्र वहाँ न जा सकेंगे । ख़ैर, अगर हम वहाँ जाने की हिम्मत भी करें—तो तिलक तो हमको लेना ही नहीं, मगर बारात के जाने-आने का कुल ख़र्च याने travelling expenses (सफ़रख़र्च) आपको देना होगा । हमारे सभी मित्र first and second class (पहले और दूसरे दर्जे) के जानेवाले हैं ड्योढ़ा में कोई बाराती न जायगा । मुझको तो कुछ लेना नहीं है, मगर इसके लिए आपको २०००) रु० पहले ही जमा कर देने होंगे । फिर स्टेशन से अपने मकान तक मोटर का इन्तज़ाम रखना होगा और नौकरों और असबाब के लिए लारी । एक्का-बग्गी का चढ़ने वाला हमारे यहाँ कोई नहीं है ।

तिन०—यह तो बहुत होता है । ख़ैर, मैं पहले कुल बातें तो जान लूँ कि मुझको क्या क्या करना होगा ।

सर्व—बहुत होता है ! शादी है या खिलवाड़ ? आप चाहते हैं कि हम लोग बैलगाड़ियों पर चढ़कर जायँ ? और दूसरी

बात क्या, आप तो सब जानते ही हैं। मुझे तिलक लेना नहीं, बारात हम लोग तनहा आवेंगे। वहाँ का सब इन्तज़ाम आपको करना होगा।

तिन०—अर्थात् ?

सर्व०—अर्थात्, बाजा, आतिशबाज़ी रोशनी, तस्वीर के तख्ते, जलूस की और सभी चीज़ें डेरा, शामियाना, फ़र्श, नाच इत्यादि। हाँ ज़रा सलीक़े से काम कीजिएगा, जिसमें हमारी बदनामी न हो। हमको तो कुछ लेना नहीं, बारातियों की मुनासिब ख़ातिरदारी और आराम चाहते हैं।

"रहने का मकान ज़रा सजा हुआ, पंखा लगा रहे, स्नान-घर वगैरह ठीक रहें। मालपूआ-पूड़ी बरी-फुलौड़ी खाने वाले इस बारात में कम होंगे। हमारे बहुत से मित्र English dinner (अंग्रेज़ी खाना) खाने वाले हैं, उनके वास्ते अगर कलकत्ते से न हो सके तो पटना से पिन्टू होटल (Pintu hotel) को ही बुला लीजिएगा।

मुसलमानों में बहुत से हमलोगों के Dinner में शरीक होंगे और कुछ के वास्ते एक अच्छा Mohammedan Cook (बावर्ची) रख उनका एक अलग Mess (भोजनालय) खोल दीजिएगा। देहात है। Lemonade-Soda (लमोनेड सोडा) का पहले ही से काफ़ी स्टाक रखिएगा। सुबह-शाम अगर दस-दस ही मन बर्फ़ का इन्तज़ाम रखिएगा तो किसी

तरह से काम चल जायगा। पान और ज़र्दा बनारस से मँगाना होगा। नाच ऐसा कीजिएगा कि दस शरीफ़ आदमी महफ़िल में बैठ सकें। ऐसा न हो कि छपरे का कर दीजिए—कलकत्ते-लखनऊ से न हो सके तो कम से कम बनारस का तो कीजिएगा। भाँड़ रहे तो दो तवायफ़ों से भी काम चल जायगा। हम तो महासभा के सभापति ठहरे, कुछ कर नहीं सकते। हम नियम का उल्लंघन करेंगे नहीं, इसलिए यह सब आप ही को करना होगा।

तन०—नाच भी?

सर्व०—आप भी अजीब आदमी हैं—अक़्ल से कुछ सरोकार नहीं रखते। अजी जनाब, सभापति मैं हूँ या आप? आप को करने में क्या हर्ज है? आख़िर शादी है, कुछ हौसला भी कीजिएगा या नहीं। हाँ, तो कुल बातें सुन लीजिए। तिलक तो हम लेंगे नहीं, लेकिन साथही डाल-ज़ेवर में भी हम कुछ ख़र्च नहीं करेंगे क्योंकि; महासभा का नियम नहीं। इसलिए यह सब भी आपही को करना होगा। हम तो कुछ लेते नहीं, दीजिएगा अपनी लड़की को, हाँ, गहना सब सोने का up to date (नवीन रुचिके) कलकत्ते के किसी अच्छी फ़र्म का बना हो, जिससे मँड़वे में हमारी और आप की हँसी न हो।

तिन०—आख़िर तिलक का रस्म भी तो होगा?

सर्व०—हाँ-हाँ, तिलक का रस्म तो होगाही। आप से तो

पहले ही कह दिया है कि तिलक तो मैं ले नहीं सकता, मगर हाँ, इसमें आप जो चाहें भेज दीजिएगा। ५१ मोहरें भी भेज दीजिएगा तो मुझे कुछ उज्र नहीं। सोने-चाँदी फूल वग़ैरह के बर्तन और कपड़े वग़ैरह तो आप भेजही देंगे, क्योंकि ये सब तो सबकी जानी हुई रस्मी चीजें हैं। हाँ, जरा चीजें काम की और आजकल के मशरफ़ में आने लायक़ होनी चाहिएँ। कपड़े भेजने का वसूल यही है कि घर के सभी लोगों के लायक़ जरूरी कपड़े आवें।

तिन०—और दहेज?

सर्व०—जनाब, ये सब तो रस्म की बातें हैं। आप खुद जानते हैं। हमको तो कुछ लेना नहीं, उसमें आप खुद करेंगे। द्वारपूजा, निमंत्रण आदि सबकी जानी हुई बातें हैं। लड़के को कपड़ा, सोने की घड़ी, अगूँठी, बटन, आदि, हारमोनियम, फ़ोनोग्राफ़, साइकिल और मोटर आदि तो देंगेही—इसमें कहने की कौन बात है। हाँ, मोटर अच्छी और नई दीजिएगा। ऐसा न हो कि कोई पुरानी फ़ोर्ड मोटर दे दें देखिए, ऐसा न हो कि मँड़वा में सिर्फ़ दो-चार आदमियों को थाली वग़ैरह देकर रह जाइए—हमारे यहाँ दस्तूर है कि जितने आदमी खाने बैठेंगे सबको पूरा सेट थाली-लोटा, ग्लास, कटोरा और तश्तरी चाहिए। मिलनी सबसे करनी होगी। रहे हम, सो आपको घोड़ा-गाड़ी है न?

तिन०—जी हाँ।

सर्ब—ख़ैर, मेरे वास्ते तरद्दुत करने की जरूरत नहीं, अपनी फिटन और घोड़ा ही दे दीजियेगा तो हम कुछ न कहेंगे। हाँ, लड़के को अच्छी मोटर जरूर चाहिए।

तिन०—मैं कुछ अर्ज कर सकता हूँ ?

सर्ब०—जरूर मगर देखिए, मेरा वक्त हो गया। ऐसा बिना तिलक-दहेज के शादी करनेवाला शायद ही कोई आप को मिले।

तिन०—इसमें क्या शक! यह हम अपनी खुश-किस्मती समझते हैं, लेकिन हमारी अर्जी है कि यह सब झंझट हमारे सर पर न डालकर आप हमसे]५०००) नकद तिलक ही ले लेते तो हमारा निर्वाह हो जाता।

सर्ब०—वाह साहब! खूब कहा। जिसको हराम कर दिया उसको हलाल करें! जो थूक दिया उसको चाटें! अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दें! चाहें जितना घाटा उठाना पड़े पर मैं तिलक-दहेज हरगिज नहीं ले सकता।

[तिनकौड़ी मलका प्रस्थान]

५

(स्थान—रायबहादुर नगद नारायण डिप्टी-कलेक्टर की कोठी। तिनकौड़ी मल का आगमन और अभिवादन पूर्वक बैठना।)

रा० बहा०—कहिए बाबू तिनकौड़ी मलजी, किधर चले हैं ?

तिन०—हजूर ही के यहाँ हाजिर हुआ हूँ, लल्ला बाबू की शादी के वास्ते। सुना है, दुवाह हुए हैं।

रा० बहा०—लड़की कैसी है ?

तिन०—इस साल मैट्रिक पास किया है । needle work, embroidery (कालीन, ऊन, इत्यादि का) सब काम जानती है । हारमोनियम बजाती और गाती भी है ।

रा० बहा०—बाबू साहब; मैं ऐसी बहू नहीं चाहता जो कुर्सी पर बैठी नावेल पढ़ा करे, टेबुल पर हारमोनियम बजा घर के सब लोगों को बैठाये रहे और रोज़ ऊन, मख़मल, रेशम और सलमा सितारा के वास्ते तक़ाज़ा आया करे । मुझे तो घर का काम करने वाली बहू चाहिए, जो सलीक़े से दो रोटियाँ बनाकर खिला दे और घर का छोटा मोटा काम भी ख़ुद कर ले । मेरे यहाँ रसोइया (Cook) नहीं है और नौकर महरी भी मोख़्तसर है । बस घर में हमारी स्त्री अकेली हैं, सब काम ख़ुद उन्हीं को करना पड़ता है ।

तिन०—अपने घर का काम करने में हर्ज ही क्या है ? वह cooking (भोजन बनाना) भी जानती है ।

रा० बहा०—आप आज ऐसा करते हैं, कल शिकायत कीजियेगा । मैं सच्ची बात साफ़ साफ़ कहे देता हूँ । घर में भी सलाह कीजिए, ऐसा न हो कि पीछे शिकायत कीजिए और दोष दीजिए । घर के काम-काज करने के वास्ते मैं बहू चाहता हूँ, सभा में लेक्चर देने के वास्ते नहीं ।

तिन०—हमें मंजूर है। लल्ला ने तो इस साल भी मैट्रिक पास नहीं किया ?

रा० बहा०—नहीं साहब, गोली मारिए पटना यूनिवर्सिटी को। यहाँ Examination (इम्तहान) होता है या लड़कों का General mass acre (एक मात्र हलाली) दूसरे पूरी तैयारी भी नहीं कर सका था। परसाल उसकी पहली शादी हुई, इससे पढ़ने में बाधा पहुँची और इस साल बहू को बीमारी और मृत्यु से। बेचारा पास करे तो कैसे। चाहे पटना यूनिवर्सिटी से वह पास हो या न हो परन्तु उसकी योग्यता किसी मैट्रिक क्या किसी एफ़० ए० से कम नहीं। दो वर्ष Detain (रोक) हो जाने से सब Subject (विषय) मज गए हैं। राय है कि इस साल कलकत्ता यूनिवर्सिटी से इम्तहान दिलवावें।

तिन०—हाँ, उस यूनीवर्सिटी से पास होने में ज्यादे सुभीता है। इनकी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं मालूम पड़ती। कुछ खाँसी की भी शिकायत जान पड़ती है।

रा० बहा०—न पूछिए साहब, डाक्टरों ने हैरान कर दिया ! जाड़े के दिनों में इनकी खाँसी बढ़ जाती है। अब तो बहुत अच्छे हैं। सिविलसर्जन का इलाज हो रहा है।

तिन०—दमा की शिकायत मालूम पड़ता है।

रा० बहा०—नहीं, डाक्टरों ने तो अभी तक तो Asthma (दमा) नहीं बताया है,

तिन०—तो हमको क्या हुक्म होता है ?

रा० बहा०—लड़की तो मुझको कुछ अधिक पसन्द नहीं है लेकिन जब आप ज़िद करते हैं तो पहले आपको लड़की यहाँ लाना होगा। मैं बिना लड़की देखे शादी पक्की नहीं कर सकता।

तिन०—ख़ैर लड़की के बारे में आप जैसे चाहें इतमिनान कर सकते हैं, परन्तु लड़की देखने-दिखाने के क़बल और सब बातें तो तय हो जानी चाहिएँ—जिससे लड़की पसन्द होने पर कोई दूसरा झगड़ा पेश न हो।

रा० बहा०—हाँ, यह कहना आपका बहुत ठीक है। मेरी पहली शर्त यह है कि आप को लड़की यहीं इसी शहर में लाकर शादी करनी होगी। मैं बाहर नहीं जा सकता। यह मैं पक्के तौर से कहता हूँ, इसमें उज़ुर-उज़रात की गुञ्जायश नहीं। अगर यह मंज़ूर नहीं तो आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं।

तिन०—और तिलक ?

रा० बहा०—साहब, मैं मोल-मोलाई करना नहीं जानता। एक बात कह देता हूँ, आप से हो सके क़बूल कीजिए नहीं तो हमारे यहाँ फ़िर से ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। तिलक मैं पहले ही एक मुश्त ४०००) रु० लूँगा—Hard Cash (नक़द) एकदम नक़द—समझे !

तिन०—जिन्स वग़ैरह नहीं ?

रा० बहा०—जी, उन सबों की मुझे ज़रूरत नहीं, जो दीजिए

मैं कुल Hard Cash (नक़द) चाहता हूँ।

तिन०—और दहेज ?

रा० बहा०—२०००) रु० और-वह भी Hard Cash नक़द और यह बारात दरवाजे लगने के पहले एक मुश्त गिन देना होगा।

तिन०—रस्म कैसे होगा—दुलहे को कपड़ा, अंगूठी, घड़ी वग़ैरह कुछ देना ही होगा और मँड़वा में भोजन के समय थाली देनी ही होगी।

रा० बहा०—बिल्कुल ज़रूरत नहीं। रस्म आप चाहे जैसे करें, मुझे उसकी जरूरत नहीं। चाहे जो रस्म हो मुझे तो नक़द रुपये चाहिए। और रस्म है क्या ? मेरी रस्म रुपया लेना और आपकी रस्म लड़की देना, अब तीसरी और कौन रस्म है ? सुनिए जो कुछ लड़के को या मुझको देना हो, वह सब मैं नक़द चाहता हूँ—नक़द, एकदम नक़द अँगूठी और लोटा-थाली मुझे नहीं चाहिए। इतने फ़जूल लोटा-थाली बटोरे लेकर क्या ठठेरे की दूकान करनी है ? मैं ऐसा जंगली नहीं जो भात पर रुपये रखवाऊँ और पत्तल में खा सामने थाली-लोटे की दूकान लगवाऊँ या जूठी थाली बाँधता फिरूँ। आप भी दूकान दूकान दौड़ते और बनारस के दलालों से बचिएगा—जो देना हो मुझे नक़द दे दीजिए।

तिन०—जब यह बात है तो भोजन का क्या होगा ? वह तो जिन्स देनी होगी।

रा० बहा०—सच पूछिए मैं तो चाहता हूँ कि भोजन का भी दाम जोड़कर आप नक़द ही दे दें तो सबसे अच्छा था। आप भी तरद्दुत से बचते और मेरा भी सुभीता था। खैर, इसपर मैं बहुत जोर नहीं देता, मगर फिर भी आप को राय देता हूँ कि चाहे किसी एक वक्त आप भले ही हमलोगों को अपने घर खाना खिला दें मगर और वक्तों के वास्ते सबसे बेहतर यही होगा और आप भी बे तरद्दुत होंगे, अगर भोजन-नाश्ता पान-सिगरेट सोडा-लेमोनेड और बर्फ आदि के दाम ही जोड़कर हमको नक़द दे दें।

तिन०—यह सब तो होगा मगर शादी के बाद चौधरी आदि में शिरनी वग़ैरह भेजना ही होगा।

रा० बहा०—ज़रूरत नहीं, एकदम बेवकूफी रिवाज! भला कहिए पचास टोकरी मिठाई भेजनी कहाँ कि अक्लमन्दी है? आखिर होगा क्या? यही न कि सब दूसरों को बाँट दी जाय या सड़ जाय। मैं यह सब नहीं चाहता। मेरे यहाँ शिरनी-कपड़ा या जो कुछ भेजना हो सबकी क़ीमत ही जोड़कर नक़द ही भेज दीजिए और वह भी मनीआर्डर से—आदमी भेजने की ज़रूरत नहीं।

तिन०—साहब! चाहे सब कोई आप के इस इस्कीम को पसन्द करे या न करे मगर आप के इसकीम में दो बड़ी अच्छी खूबियाँ हैं जिनके लिये मैं आप की दाद देता हूँ। वह यह कि

जो लेना है आप सीधे तौर से साफ़ साफ़ कहे देते हैं। दूसरी यह कि जो कुछ देना है उसको दुःख से या सुख से देकर लड़की वाला बे तरद्दुत का हो जाता है। दूसरी जगह तो रुपया देकर तरद्दुत खरीं जाता है। लेकिन अगर माफ़ कीजिए तो मैं उसमें एक संशोधन पेश करूँ कि जिसके मंजूर होने से लड़की वालों की झंझट एकदम मिट जायगी।

रा० बहा०—वह क्या ?

तिन०—वह यह है कि तिलक-दहेज की जो रक़म आप फ़र्माते हैं वह कुल रुपया लेकर तिलक चढ़ाने के साथ-ही-साथ लड़की को भी डोली पर लाकर चढ़ा दें, तो फिर लड़की वाला घर जाकर निश्चिंत सोवें और आप भी बारात की झंझटों से छुट्टी पा जायँ। भगवान आप का भला करे।

रा० बहा०—आप शादी करने आए हैं या मज़ाक़ उड़ाने ?

तिन०—हरगिज़ नहीं—मैं मुसीबत का मारा लड़की वाला हूँ। दुर्भाग्य से हिन्दुस्तान में मेरा जन्म हुआ, वह भी हिन्दू के घर! बहुत घरों की फेरी लगा चुका हूँ—बहुतों की फ़टकार-दुतकार सुन चुका हूँ—बहुत ठोकरें खा चुका हूँ। बहुतेरे लड़के वालों की मनोवृत्ति भी देख चुका हूँ। मेरी स्थिति इस समय मज़ाक़ करने की नहीं मैंने जो कुछ कहा है वह एक सन्तप्त हृदय का सच्चा उद्गार है। यदि मेरा प्रस्ताव मंजूर हो जायं तो हजारों लड़की वालों का तरद्दुत दूर हो जाय और भविष्य में वे सभी झंझट-बखेड़े से बचे रहें। अच्छा फिर हाज़िर होऊँगा।

[प्रस्थान]

(आकाश तिमिराच्छन्न हो जाता है, धीरे धीरे पटाक्षेप।)